आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

वन्दे मातरम्

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

25 वाँ अंक

अर्धवार्षिक पत्रिका

2022-23

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

हमारे कार्यालय में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चन्द्र मुर्मु के आगमन पर आयोजित बैठकों की एक झलक।

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिन्दी पत्रिका

वन्दे मातरम्

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अर्धवार्षिक पत्रिका

पच्चीसवाँ अंक

2022-23

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

पत्रिका परिवार

संरक्षक	:	श्रीमती यशोधरा रॉय चौधुरी प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
परामर्शदातृ समिति	:	श्री तन्मय जाना, वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)
प्रधान संपादक	:	श्री रेबती रंजन पोद्दार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
संपादक	:	श्री चन्दन कुमार बढ़ई, हिन्दी अधिकारी
उपसंपादक	:	श्री सन्नी कुमार, कनिष्ठ अनुवादक
सहायक	:	श्री जितेंद्र शर्मा, सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ) श्री कुन्दन कुमार रविदास, कनिष्ठ अनुवादक श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह, कनिष्ठ अनुवादक
टंकण कार्य	:	श्री अतुल कुमार, लेखाकार

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है क्योंकि वे उनके निजी विचार होते हैं।

यशोधरा रॉय चौधुरी
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक)

संदेश

'वंदे मातरम्' के 25वें अंक के सफल प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है एक तरफ इस वर्ष 'आजादी का अमृत महोत्सव' मनाया जा रहा है तो दूसरी तरफ हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम्' ने कुल 25 पड़ाव पार कर लिया है। यह सुखद संयोग हिंदी प्रेमियों के लिए प्रेरणादायी है। किसी पत्रिका के 25वें अंक का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। मैं आशा करती हूँ कि यह पत्रिका साहित्यिक चेतना एवं सामाजिक विषयों पर सारगर्भित रचनाओं के साथ निरंतर प्रकाशित होती रहेगी।

गांधीजी ने सही ही कहा है - "राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।" इसी कथन को ध्यान में रखते हुए कार्यालय में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। हिंदी पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय में हिंदी के अनुप्रयोग का महत्वपूर्ण अंग है।

आशा है कि यह अंक भी पहले अंकों की तरह हर कसौटी पर खरा उतरेगा। आपके अभिमत एवं सुझाओं का स्वागत है। इस अंक के सफल प्रकाशन पर संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई।

सभी को शुभकामनाएँ!

यशोधरा रॉय चौधुरी

तन्मय जाना
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)

संदेश

'वंदे मातरम्' के 25वें अंक का सफल प्रकाशन होना गौरव एवं हर्ष का विषय है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका अनवरत आगे बढ़ते रहेगी। इस कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण के निरंतर सक्रिय भागीदारी के फलस्वरूप ही यह पत्रिका इस आयाम तक पहुँच पाई है।

इस अंक में युवा एवं नए रचनाकारों की भागीदारी होना एक सुखद अनुभूति है। हमारी कार्यालयी हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 25वें संस्करण की रचनाएँ साहित्य एवं समाज के विविध अहम विषयों को स्पर्श करती है। मैं सभी रचनाकारों को शुभकामनाएँ देता हूँ।

सुधी पाठकों के बहुमूल्य प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

तन्मय जाना

चन्दन कुमार बढ़ई
(संपादक) हिंदी अधिकारी

संपादकीय

संविधान सभा द्वारा हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने का प्रमुख उद्देश्य था भारत के विविध भाषाई अनेकता में एकता की भावना को बल देना। क्षेत्रीय भाषाओं का आदर करते हुए राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य सम्पन्न करना हमारा ध्येय है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कार्यालय में हिंदी भाषा संबंधी कई गतिविधियां होती हैं, जिसमें हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम्' का प्रकाशन महत्वपूर्ण स्थान रखता है। साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से कार्यालय के अधिकारी/ कर्मचारीगण मौलिक हिंदी से जुड़ते हैं।

आशा है कि इस अंक में सभी रचनाएँ प्रत्येक बार की भांति ज्ञानवर्धक एवं रोचक सिद्ध होंगी।

'वंदे मातरम्' को और अधिक स्तरीय एवं उपयोगी बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझाव एवं अभिमत की प्रतीक्षा रहेगी।

चन्दन कुमार बढ़ई

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	हम	श्रीमती यशोधरा राय चौधुरी	1
2.	कश्मीर की यात्रा	श्री रेबती रंजन पोद्दार	3
3.	आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (AI)	श्री जितेंद्र शर्मा	7
4.	पहल	श्री सन्नी कुमार	12
5.	जहाँ गली मुड़ती है	श्री चन्दन कुमार बढ़ई	18
6.	हिजला मेला	श्री अभिषेक कुमार गुप्ता	21
7.	अजीब दास्तां है ये.....2	श्री आशीष कुमार	24
8.	मन के नियंत्रण में योग की भूमिका	श्री तुहिन शुभ्र चटर्जी	28
9.	एक बचपन था	श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह	32
10.	प्लास्टिक पर प्रतिबंध	सुश्री अंशु बाला	34
11.	भक्ति की शक्ति	श्रीमती सुस्मिता सरकार	37
12.	ऐसा किसने सोचा था	श्री आनंद कुमार पाण्डेय	42
13.	दिव्यांगता अभिशाप नहीं है	श्रीमती लिपिका दास	45
14.	एक जेनेरेशन की आवाज़ - के.के	श्री अतुल कुमार	49
15.	भारतीय समाज में वर्ण एवं जाति की अवधारणा	श्री मनीष कुमार महतो	51
16.	तुम ले आना	श्री कुन्दन कुमार रविदास	56
17.	भारत की अजीबो गरीब प्रथायें	सुश्री आरती शर्मा	59
18.	वोकल फॉर लोकल	श्री अनुज साव	62
19.	पक्षी - जीवन	सुश्री अलिषा मौर्या	65
20.	मानव समाज पर मोबाइल का प्रभाव	श्री सूरज किशोर	68
21.	यात्रा वृतांत	श्री मंतोष यादव	71
22.	नारी	श्री संजय कुमार	75
23.	निर्णय – भाग 1	श्री अनिल कुमार	76
24.	माँ की याद और अकेलापन	श्री सुमित कुमार वर्णवाल	78
25.	तलाश–ए- मंजिल	श्री अमित कुमार	81

टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।

मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।

शब्दों के लिए अटकिए नहीं।

अशुद्धियों से घबराइए नहीं।

अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।

हम

विवाद और अंतर्विरोध के भीतर से
गीले मटमैले धब्बों से
विषादग्रस्त बदन दर्द के भीतर से
असह्य अनिश्चयता के भीतर से
उदासी और आनंदोत्कर्ष के भीतर से
हम चलते रहते हैं

'कुछ नहीं हो रहा' और 'बहुत कुछ करना है' के भीतर से
'अत्यंत बोरिंग' और 'बेहद इंटरेस्टिंग' के भीतर से
रक्षात्मक मन और अरक्षित शरीर के बीच से
धागे से महीन रास्ते पर
हम चलते रहते हैं

और चलकर भला क्या हासिल होता है?
कुछ नहीं।
इस 'कुछ नहीं' को पाकर हम रोजाना बस में चढ़कर दूसरों के गाने
सुनते हैं,
और सोचते हैं 'ये क्या बेवकूफ़ाना है'
अपने बचपन की पुरानी तस्वीरें देखते हैं

और सोचते हैं
क्या बेवकूफ़ाना है।

ठूँस-ठूँसकर बिरयानी खाना चाहते हैं
और सोचते हैं
भूख लगी है।

इसके बाद भूख मर जाती है।
फिर क्या बेवकूफ़ाना है,
ये सब कुछ।

[यशोधरा रॉय चौधुरी, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) पश्चिम बंगाल, कोलकाता समकालीन साहित्य के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। जीवन के विविध पहलुओं पर लिखी उनकी कविताएँ आधुनिक जीवनशैली और मध्यमवर्गीय नैतिक द्वंद्व की गहरी पड़ताल करती हैं। यह उनकी मूल बांग्ला कविता 'आमरा' का हिंदी अनुवाद है।]

श्रीमती यशोधरा राय चौधुरी

मूल बांग्ला कविता से अनुदित

अनुवादक : चन्दन कुमार बढ़ई

कश्मीर की यात्रा

मैं बचपन से सुनता आ रहा था कि धरती पर यदि कहीं स्वर्ग है तो वो है कश्मीर। जब मैं बड़ा हुआ तब, मैं कश्मीर में व्याप्त मनभावन दृश्यों का आलेख अपनी आँखों के समक्ष रेखांकित करना शुरू कर दिया था जिससे मेरा मन और मस्तिष्क उद्वेलित हो उठता था। मैंने यह भी सुना था कि अनेक कारणों के चलते कश्मीर जाना संभव नहीं था। एक तो यहाँ जाना काफी महंगा पड़ता है ऊपर से वह बहुत ही विक्षुब्ध घाटी है। खैर, कुछ भी हो मैं तो इस स्वर्ग के स्वरूप को सोचकर ही प्रफुल्लित हो जाया करता था और यही सोचता था कि क्या इस जन्म में वहाँ जाना संभव नहीं होगा!

किन्तु 'प्रकृति' का एक नियम है कि यह बदलती रहती है। सैलानियों को कश्मीर में सुरक्षित वातावरण प्रदान करने के लिए भारत सरकार ने विभिन्न कदम उठाएँ हैं।

अंततः मैंने भी कश्मीर भ्रमण करने का निर्णय ले लिया जो मेरे बचपन का सपना भी रहा है।

मैं अपने परिवार (पत्नी और दो बेटियों) के साथ इसी वर्ष 24 अप्रैल को कोलकाता से कश्मीर के लिए रवाना हुआ। दिल्ली में फ्लाइट बदलने के बाद उसी दिन दोपहर 12 बजे हमलोग श्रीनगर पहुँच गए थे। हमलोग एयरपोर्ट से होटल लगभग 1 बजे पहुंचे जो डल झील के पास था। हमलोग होटल पहुँचकर स्नान, भोजन और कुछ देर विश्राम किए। फ्रेश होने के बाद हमलोग डल झील की तरफ चल दिए वहाँ नौका विहार जो करना था। हमलोग एक सुसज्जित नौका पर सवार हो गए जिसे 'शिकारा' कहा जाता है। शिकारा कुछ दूर आगे बढ़ा होगा कि डल झील का सौन्दर्य मेरे आँखों के समक्ष

वास्तव में सामने आता है जिसकी कल्पना मैंने बचपन में की थी। मैं चकित हो गया। इसकी सुंदरता को देखकर मेरे मन में प्रश्न उठने लगे। क्या है यह? मैं अभी कहाँ आ गया हूँ? हाउस बोट की एक शृंखला झील के एक किनारे लगी हुई थी, वे सभी काफी खूबसूरत तरीके से सजे हुए थे और उस हाउस बोट में सीढ़ियाँ भी बनी हुई थी जो झील के पानी को छू रही थी। जो यात्री उस हाउस बोट में रुकते थे वे उसी सीढ़ियों के मदद से दूसरे नौका को पकड़ते थे।

सभी हाउस बोट अलग-अलग नामों से जाने जाते हैं। झील के एक तरफ गाड़ियों के आवागमन के लिए सड़क

था और उस सड़क के पार अनगिनत होटल थे। बाकी तरफ वह झील पर्वतों और हरे पहाड़ों से घिरा हुआ था। मैं यह सब देख कर आश्चर्यचकित हो गया था। यहाँ का दृश्य मेरी कल्पना से परे निकला। वास्तव में, जो मैंने देखा उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता बस इस दृश्य का आनंद आँखों से लिया जा सकता है। तीन घंटे यूं निकल गए मालूम भी नहीं पड़ा। तत्पश्चात हमलोग होटल आ गए और रात्रि का खाना खाने के बाद सोने चले गए।

अगले दिन नाश्ता करने के पश्चात हमलोग कार के द्वारा श्रीनगर से 'सोनमर्ग' के लिए रवाना हुए। वहाँ लगभग दोपहर 12 बजे पहुंच गए। घुड़सवारी करते हुए हमलोग बर्फीली भूमि वाले स्थान पर पहुँच गए। हाँ यही जन्नत है। मैंने जब सिर उठाकर चारों तरफ देखा तो बर्फ की चादर से भूमि ढकी हुई थी जिसके चारों ओर हरे-भरे पेड़ थे। ऐसा लग रहा था कि हम प्रकृति के बच्चे उसकी गोद में खेल रहे हो। वहाँ पर सभी सैलानी अपने परिवार वालों के साथ एक दूसरे पर बर्फ का गोला फेंक खूब मजे के साथ खेल रहे थे। मैं आश्चर्य से खड़ा होकर वहाँ चारों ओर प्रकृति की पसरी हुई सुंदरता से भरे मनोरम दृश्य को निहार रहा था। लगभग शाम को 03:30 बजे हमलोग घुड़सवारी करते हुए

अपने कार पार्किंग के स्थान पर आ गए और खाना खाने के पश्चात हमलोग श्रीनगर स्थित होटल की ओर चल दिये। दो दिन ही हुए थे कश्मीर में और मुझे यह भली-भाँति अनुभव हो गया कि इसे 'धरती का स्वर्ग' क्यों कहते हैं।

तीसरे दिन हमलोग 'गुलमर्ग' के लिए कूच किए। यह स्थान 'सोनमर्ग' जैसा ही मनमोहक था। यहाँ भी चारों तरफ बर्फ की चादर फैली हुई थी। सोनमर्ग और इस जगह में यह अंतर था कि यहाँ पर सैलानियों को बर्फ पर सवारी करने के लिए स्लेज वाहन उपलब्ध था। हमलोग कार पार्किंग स्थान से घुड़सवारी करके इस स्थल पर पहुंचे थे। मैं इतने सारे सहीस (अश्वपाल) को देख अचंभित हो गया कि वे लोग प्रतिदिन 'गुलमर्ग' पैदल ही आया और जाया करते थे। वे थोड़े से पैसों के एवज में सैलानियों को घुमाने एवं प्रसन्न करने हेतु इतनी मेहनत कर रहे थे। उनका यह परिश्रम देख मैं हैरान था। हालांकि वे लोग सैलानियों के साथ हंसी-मज़ाक करके काफी खुश प्रतीत होते थे। हमलोग श्रीनगर स्थित होटल में रात्रि 8 बजे पहुँच चुके थे। तीसरे दिन भ्रमण करने के बाद मेरे मस्तिष्क और मन में एक सुखद अनुभूति हुई कि सच में मेरा और मेरे परिवार का कश्मीर आना सफल रहा।

चौथे दिन हमलोग श्रीनगर के ग्रामीण क्षेत्र के तरफ रुख किए। हमलोग वहाँ एक 'शिव मंदिर' देखने गए जो पर्वत पर स्थित था और मंदिर तक पहुँचने में 283 सीढ़ियाँ चढ़ना पड़ता था। सीढ़ियों पर चढ़ने में काफी दम तो लगा पर ऊपर पहुँच कर भगवान शिव का दर्शन करने के पश्चात सारी थकान छू-मंतर हो गयी। उस पर्वत से श्रीनगर को देखना काफी मनोरम लगा साथ ही ऊपर से डल झील का दृश्य भी दिल को छू लेने वाला था।

हमलोग एक पुष्प गार्डेन देखा जिसका नाम था 'मुग़ल गार्डेन'। इस गार्डेन की खूबसूरती का बखान शब्दों में नहीं किया जा सकता है। यह गार्डेन लगभग 2 बीघा में फैला हुआ है। यहाँ व्याप्त विभिन्न प्रकार के रंगों के पुष्प इस गार्डेन की खूबसूरती में चार चाँद लगा रहे थे। सैलानी अपने परिवार वालों के साथ फोटो भी ले रहे थे कुछ लोग तो मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ सेल्फी ले रहे थे। लगभग 3 घंटों तक उस गार्डेन में हमलोग घूमते रहे। मन में ऐसा लग रहा था कि काश इस गार्डेन में घूमने का अवसर हर दिन मिल पाता। लेकिन ऐसा हो नहीं सकता। गार्डेन में घूमने के पश्चात हमलोग वापस होटल में शाम तक पहुँच गए थे। हमलोग ट्यूलिप गार्डेन का लुत्फ नहीं उठा पाएँ क्योंकि इसका सीज़न 2 हफ्ता पहले ही समाप्त हो चुका था।

कश्मीर में चार दिन बड़े मजे से बीतें तत्पश्चात पांचवें दिन हमलोग 'पहलगाँव' के लिए निकल पड़े। हमलोग शाम को 5 बजे यहाँ पहुंचे। हमलोग का मन दुख से भर गया जब हमने 'पुलवामा' के उस स्थल को देखा जहां भारतीय सैनिकों पर हमला हुआ था। छठे दिन हमलोग 'चंदनबाड़ी' घूमने गए। 'अमरनाथ' जाने वाले यात्री अपनी यात्रा की शुरुआत 'चंदनबाड़ी' से ही करते हैं। इसी क्रम में, हमलोग 'बेताब घाटी' एवं 'अरु घाटी' घूमने गए। इन दोनों घाटियों की खूबसूरती बेमिसाल है। इन घाटियों में चारों तरफ कई मीलों में हरे-भरे घास के मैदान पसरे हुए थे

जो पहाड़ों से घिरे हुए थे। इन मैदानों में, हमने भेड़ों के एकाध झुंड को भी जाते हुए देखा।

सातवें दिन हमलोग 'पहलगाँव' छोड़ते हुए 'कटरा' की तरफ बढ़ गए रात होने के कारण हम 'पतानितोप' में रुक गए। अगले दिन हमलोग 'पतानितोप' से 'कटरा' के लिए रवाना हो गए। 'पतानितोप' से निकलने से पहले, उस सुबह मैं अकेले ही वहाँ के सड़कों पर घूमा, वहाँ के मनभावन दृश्यों को महसूस किया, मुझे एहसास हुआ कि सच में कश्मीर कितना सुंदर है। 'पतानितोप' की सुंदरता ने मुझे इतना आकर्षित किया कि मैं मन ही मन ठान लिया कि मैं 'पतानितोप' के कारण कश्मीर घूमने फिर से एक बार जरूर आऊँगा। हमलोग खाना खाने के बाद कटरा के लिए चल दिए। वहाँ पहुँचते-पहुँचते शाम हो गई थी। कटरा 'वैष्णो देवी' के कारण प्रसिद्ध है। उसी रात लगभग 10 बजे हमलोग पैदल वैष्णो देवी मंदिर दर्शन के लिए निकल पड़े। पूरी रात पहाड़ी रास्ते से लगभग 14 किलोमीटर का सफर तय करने के बाद हमलोग मंदिर के द्वार तक पहुंचे। मंदिर जाने का रास्ता पक्का किया हुआ है और यात्रियों को धूप से बचने के लिए रास्ते के ऊपर छावनी बनाया हुआ था जिसमें लाइट भी लगी हुई थी तथा सड़क के दोनों किनारों पर ढ़ेर सारी दुकानें भी थी। सफर काफी कठिन था लेकिन माँ की कृपा से हमलोग सुबह 4 बजे वहाँ पहुँच गए। पूजा करने के लिए हमलोग कतार में खड़े थे। करीब सुबह 5:30 में हमलोगों को माता के दर्शन प्राप्त हुए और हमने पूजा अर्चन की। नौवें दिन 12 बजे दोपहर को हमलोग होटल पहुँच चुके थे। मंदिर के अंदर चलना ओर माता के दर्शन करना एक आध्यात्मिक अनुभव रहा जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है और मैं इसे व्यक्त करने का कोशिश भी नहीं करूंगा। दोपहर के बाद हमलोग होटल में विश्राम किए। दसवें दिन हमलोग वायु यात्रा करते हुए जम्मू से दिल्ली के रास्ते अपने शहर कोलकाता पहुंचे। अंत में, मैं अपने पाठकों से निवेदन करना चाहता हूँ कि अगर आप कश्मीर नहीं घूमें हैं तो जीवन में एक बार कश्मीर जरूर जाएँ तथा इसकी सुंदरता का अनुभव करें।

रेबती रंजन पोद्दार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (AI)

कृत्रिम मेधा यानि 'आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस' (AI) क्या है? आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस मतलब, ऐसे कम्प्यूटर प्रोग्राम जो उन समस्याओं को हल कर सकता है या निर्णय ले सकता है जैसे कि सामान्यतः मनुष्य कर सकता है। जैसे किसी फोटो को देखकर उसके बारे में बताना। इसी प्रकार एक अन्य कार्य जो सामान्यत: मनुष्य द्वारा किया जाता है, वह है- उदाहरणों के द्वारा सीखना और मशीन लर्निंग प्रोग्राम को इसी प्रकार के कार्यों के लिए उपयोग में लाना अर्थात्, कम्प्यूटरों को उदाहरणों से सीखने के बारे में बताना। इसके लिए बहुत सारे एल्गोरिदम जुटाने पड़ते है, ताकि कम्प्यूटर बेहतर अनुमान लगाना सीख सके। लेकिन अब कम एल्गोरिदम से मशीनों को तेजी से सिखाने के लिए मशीनों को ज्यादा सामान्य बुद्धि (कॉमन सेंस) देने के प्रयास किए जा रहे हैं। मशीन लर्निंग के द्वारा कम्प्यूटरों की पूर्वानुमान लगाने की क्षमता काफी बढी है, क्योंकि मशीन लर्निंग उल्लेखनीय रूप से सटीक पूर्वानुमान लगा सकती है। यह डाटा द्वारा भारी मात्रा में पैटर्न तलाशने के सिद्धान्त पर काम करता है। मशीन लर्निंग के द्वारा एक बार किसी कम्प्यूटर को प्रशिक्षित करने के बाद भविष्य में वह कम्प्यूटर स्वयं स्वायत्त रूप से वह कार्य करने लगता है।

'आर्थर सैम्युअल' नामक अमरीकी कम्प्यूटर विज्ञानी ने सर्वप्रथम वर्ष 1959 में पहली बार "मशीन लर्निंग" के

बारे में बताया था। उन्होंने कहा था कि कम्प्यूटर को बिना किसी खास प्रोग्राम की आवश्यकता के मशीन लर्निंग के द्वारा इस प्रकार बनाया जा सकता है ताकि वे अपने आप ही निर्णय ले सके। दरअसल मशीन लर्निंग में एल्गोरिदम के द्वारा कम्प्यूटर उसमें डाले गए डाटा को समझता है फिर उसके आधार पर फैसला लेता है। मसलन आप यू-ट्यूब पर कई वीडियों देखते हैं, तो उस वीडियो जैसी कई अन्य वीडियो के लिए यू-ट्यूब द्वारा आपके पास सुझाव आते हैं दरअसल ये सुझाव आपके द्वारा खोजे गए वीडियो के आधार पर आते हैं, जोकि मशीन लर्निंग का ही कमाल है।

स्मार्ट फोन, आई फोन तथा कम्प्यूटर सिस्टम में कृत्रिम मेधा का बखूबी से इस्तेमाल किया जा रहा है। इन पर लिखते समय कृत्रिम मेधा के माध्यम से की-बोर्ड हमारी गलतियों को सुधारता है और सही शब्दों का विकल्प भी देता है। जी.पी.एस. तकनीक, मशीन पर चेहरे की पहचान करना तथा सोशल मीडिया में दोस्तों को टैग करने जैसे कामों में कृत्रिम मेधा का बखूबी इस्तेमाल किया जा रहा है। वित्तीय व बैंकिंग संस्थानों द्वारा डाटा को व्यवस्थित व प्रबंधित करने और स्मार्ट कार्ड सिस्टम में कृत्रिम मेधा तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। विंडोज-10 में Cortana या आई फोन में Siri हमें मदद पहुँचाने के लिए तैयार रहते हैं और जी.पी.एस. के माध्यम से लम्बी यात्रा या ड्राइविंग के द्वारा सही जगह पर पहुँचते हैं, तो इसमें कृत्रिम मेधा तकनीक का ही कमाल है।

कुछ कार्य ऐसे हैं, जो सिर्फ कृत्रिम मेधा द्वारा ही सम्पन्न किए जा सकते हैं। जैसे अन्तरिक्ष स्टेशनों का निर्माण, रख-रखाव व मरम्मत, विषम परिस्थितियों वाले चन्द्र, मंगल पर खोज के लिए जाने वाले यान या अन्य मिशनों का सफल संचालन, गहरे समुद्रीय क्षेत्रों में प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम खनिज तथा अन्य प्रकार के संसाधनों की खोज व उत्खनन तथा गहरी खानों/खदानों में खुदाई का काम आदि। अधिकांश खतरनाक जोखिम भरे तथा दोहराए जाने वाले कार्यों में कृत्रिम मेधा मशीनों का ही सहारा लिया जाता है, क्योंकि ये मशीनें मनुष्य से अधिक तेज सोचती है, मल्टीटास्किंग होती है, मनुष्यों से अधिक देर व कार्यक्षमता से काम कर सकती है और उनके मापदण्ड जरूरत के मुताबिक समायोजित किए जा सकते हैं। स्वास्थ्य व चिकित्सा क्षेत्र में महत्वपूर्ण जाँच, ऑपरेशन, स्कैनिंग, रेडियो-सर्जरी तथा बीमारी का पता लगाने जैसे अनेक कामों में कृत्रिम मेधा की मदद ली जा रही है। फैक्ट्री, लैब तथा अधिक जोखिम भरे कार्यों में कृत्रिम मेधा तकनीक पर आधारित रोबोटों का खूब इस्तेमाल किया जा रहा है।

भारत में भावी आवश्यकताओं तथा चुनौतियों के मद्देनजर रोजमर्रा की जीवन शैली से लेकर रोजगार, व्यवसाय, उद्यम, विज्ञान-प्रौद्योगिकी तथा आभियांत्रिकी इत्यादि सभी क्षेत्रों में अति उन्नत कृत्रिम मेधा तकनीक के इस्तेमाल की बहुत अधिक आवश्यकता महसूस की जा रही है। विशेषकर चौथी औद्योगिक क्रांति तथा समग्र सामाजिक आर्थिक विकास के मद्देनजर इसकी उपयोगिता काफी बढ़ गई है।

रोबोटिक्स, वर्चुअल रिएल्टी, क्लाउड टेक्नोलॉजी, बिग डाटा, सूचना, संचार व परिवहन प्रौद्योगिकी तथा मशीन लर्निंग जैसी तमाम अन्य प्रौद्योगिकियों के साथ मिलकर कृत्रिम मेधा भारत में चौथी औद्योगिक क्रांति के ऊँचे लक्ष्यों को प्राप्त करने में बेहद उपयोगी व निर्णायक भूमिका निभा सकती है। भारत में चिकित्सा, स्वास्थ्य, शिक्षा, सूचना, संचार, परिवहन, कृषि, रोजगार, व्यवसाय, उद्योग, विज्ञान व प्रौद्योगिकी, रक्षा, प्रतिरक्षा, कृषि व सम्बद्ध क्षेत्र, आपदा प्रबन्धन, विनिर्माण इजीनियरिंग इत्यादि कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ कृत्रिम मेधा तकनीकों का किसी न किसी रूप में उपयोग किया जा रहा है, मगर यह काफी नहीं है बल्कि भारत को समग्र व समावेशी सामाजिक आर्थिक विकास तथा वैश्विक प्रतिस्पर्द्धा के मद्देनजर और अधिक दक्षता, गतिशीलता तथा गुणवत्ता के साथ काम करने के लिए सभी क्षेत्रों में अत्याधुनिक आर्टिफिशियल तकनीकों का बेहतर ढंग से इस्तेमाल करना होगा।

बाढ़ प्रबंधन, आपदा प्रबंधन तथा मौसम पूर्वानुमान प्रणाली में अत्याधुनिक कृत्रिम मेधा तकनीकों का उपयोग करके जान माल की क्षति को न्यूनतम किया जा सकता है। साथ ही सटीक मौसम पूर्वानुमान प्रणाली से कृषि क्षेत्र को विशेष लाभ पहुँचाया जा सकता है। इसी प्रकार भारत को अगर अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी क्षेत्र में विशेष ताकत बनना है, तो उसे इस क्षेत्र में भी अधिक समुन्नत कृत्रिम मेधा तकनीकों का इस्तेमाल करना होगा। यह तकनीक मानव सहित एवं मानव रहित दोनों ही प्रकार के अन्तरिक्ष अभियानों में विशेष रूप से उपयोगी है। रक्षा प्रतिरक्षा तथा आन्तरिक सुरक्षा के क्षेत्र सैन्य प्रौद्योगिकी तथा दक्षता का गुणवत्तापूर्ण विकास करने में कृत्रिम मेधा तथा मशीन लर्निंग तकनीकें विशेष उपयोगी साबित हो सकती है। शासन, प्रशासन तथा न्यायिक प्रणाली को और अधिक चुस्त-दुरुस्त, गतिशील, गुणवत्तापूर्ण, जिम्मेदार व जवाबदेह बनाने में उक्त तकनीकों का बेहतर इस्तेमाल बेहद निर्णायक व लाभकारी साबित हो सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि अत्याधुनिक आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस तथा मशीन लर्निंग तकनीके तकरीबन सभी क्षेत्रों में बहुआयामी तथा बहुद्देशीय रूप से उपयोगी है।

भारत सरकार द्वारा कृत्रिम मेधा तथा मशीन लर्निंग के क्षेत्र अनुसंधान तथा विकास कार्यों को बढ़ावा देने के लिए नीति आयोग को मुख्य भूमिका के रूप में चुना गया है। नीति आयोग राष्ट्रीय डाटा और एनालिटिक्स पोर्टल के साथ कृत्रिम मेधा पर राष्ट्रीय कार्यनीति विकसित कर रहा है ताकि व्यापक व बहुद्देशीय रूप से इसका उपयोग किया जा सके।

अपनी निर्धारित रणनीति के तहत नीति आयोग इटेल (ITEL) तथा टाटा इस्टीट्यूट ऑफ फण्डामेंटल रिसर्च आर्टिफिशियल इटेलीजेंस आधारित शोध परियोजनाओं के विकास तथा कार्यान्वयन के लिए 'परिवर्तनीय कृत्रिम बुद्धिमता का अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र (International Center for Transformative Artificial Intelligence-

ICTAI) की स्थापना करेगें। यह पहल दरअसल नीति आयोग के कार्यक्रम आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के लिए राष्ट्रीय कार्यनीति का एक अहम हिस्सा है। इस केन्द्र की स्थापना बेंगलूरू में की जाएगी। इस केन्द्र के द्वारा विकसित ज्ञान कौशल तथा सर्वोत्तम अभ्यासों का उपयोग नीति आयोग द्वारा पूरे देश में स्थापित होने वाले ICTAI केन्द्रों के निर्माण में किया जाएगा।

ICTAI के प्रमुख लक्ष्य हैं (i) एप्लीकेशन आधारित शोध कार्यों को प्रोत्साहन देने के लिए कृत्रिम मेधा तकनीकी का विकास करना तथा (ii) विश्व स्तरीय कृत्रिम मेधा दक्षता के लिए प्रतिभाओं का विकास करना तथा उन्हें कौशल प्रशिक्षण में सहयोग प्रदान करना। इस केन्द्र के प्रमुख कार्य उद्देश्य हैं- (i) चिकित्सा, स्वास्थ्य, कृषि, स्मार्टसिटी तथा गतिशीलता के क्षेत्र में कृत्रिम मेधा आधारित समाधान के अनुसंधान का संचालन करना, (ii) पूरे देश में कृत्रिम मेधा के आधारभूत फ्रेम वर्क को विकसित करना, (iii) सूचना प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित नीतियों का विकास करना तथा मानकों को विकसित करना तथा (iv) प्रशासन, मूलभूत अनुसंधान, अवसरंचना विकास, गणना व सेवा अवसरंचना विकास तथा प्रतिभाओं को आकर्षित करने जैसे क्षेत्रों में परीक्षण व खोजबीन करना तथा सर्वोत्तम अभ्यासों की स्थापना करना।

इसरो द्वारा उपग्रहों के निर्माण परीक्षण से लेकर आँकड़ों के विश्लेषण तक कृत्रिम मेधा इस्तेमाल बढ़ाए जाने की प्रक्रिया चल रही है। चन्द्रयान-2 तथा गगनयान जैसे भावी मिशनों में कृत्रिम मेधा तकनीक वाले रोवर व रोबोट का उपयोग किया जाएगा। इसके अलावा डेटा केन्द्रों में रोबोटिक्स का प्रयोग बढ़ाने की योजना है। कृत्रिम मेधा तकनीक का विशेष फायदा रिमोट सेन्सिंग उपग्रहों से मिलने वाले आँकड़ों के विश्लेषण में भी मिलेगा क्योंकि कृत्रिम मेधा से इनका विश्लेषण कर सही समय पर इसका इस्तेमाल सम्भव हो सकेगा, जिससे प्राकृतिक आपदाओं की सूचनाएं, फसलों की निगरानी तथा संसाधनों की सूचनाएँ एकत्र करने जैसे कई महत्वपूर्ण कार्य बेहतर ढंग से किए जा सकेंगे।

केन्द्रीय जल संसाधन मंत्रालय के अधीन केन्द्रीय जल आयोग (NCW) द्वारा 'गूगल' के साथ बाढ़ प्रबंधन को लेकर एक समझौता भी किया गया है, इसके द्वारा बाढ़ प्रबंधन तथा पूर्वानुमान से जुड़ी प्रणालियों को बेहतर किया जाएगा, ताकि समय पर और नियमित रूप से इससे सम्बन्धित आवश्यक सूचनाएँ लोगों तक पहुंचाई जा सके। इसके अन्तर्गत केन्द्रीय जल आयोग कृत्रिम मेधा तकनीक, मशीन लर्निंग तथा भू-स्थानिक मान चित्रण के क्षेत्र में गूगल की अत्याधुनिक क्षमताओं का इस्तेमाल करेगा।

राष्ट्रीय स्तर पर आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने के लिए नीति आयोग के उपाध्यक्ष की अध्यक्षता वाली एक समिति का गठन भी किया गया है, जिसमें विज्ञानियों, शिक्षाविदों तथा उद्योग वाणिज्य जगत के प्रतिनिधियों को शामिल किया गया है। सरकार के द्वारा 5th जनरेशन टेक्नोलोजी स्टार्टअप को वित्तीय सहायता की सुविधा उपलब्ध कराई गई है, जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, मशीन लर्निंग, 3-D प्रिंटिंग तथा ब्लॉक चेन आदि शामिल है। इसके अलावा सरकार द्वारा कृत्रिम मेधा तकनीकी पर आधारित रोबोटिक्स, डिजिटल मैन्युफैक्चरिंग, डिजिटल मार्केटिंग, बिग डाटा इंटलीजेंस, रियल टाइम डाटा तथा क्वांटम कम्युनिकेशन के क्षेत्र में अनुसंधान विकास शिक्षण प्रशिक्षण मानव संसाधन तथा कौशल विकास को बढावा देने के लिए प्रयास कर रही है।

जितेंद्र शर्मा

सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

पहल

[पात्र]

[प्रदीप :- सेवानिवृत केंद्रीय कर्मचारी, 62 वर्ष की आयु, रंग गोरा, मध्यम कद।

मंजू :- प्रदीप की पत्नी, 59 वर्ष की आयु, रंग गोरा, शरीर से स्थूल, अनपढ़।

दिलीप :- प्रदीप का भाई, 50 वर्ष की आयु, गेहुआँ रंग, पेशे से किसान, पाँचवी पास, मुश्किल से हिंदी बोल पाता है।

जीवन :- प्रदीप का बड़ा बेटा, 33 वर्ष की आयु, गोरा रंग, लंबा कद, गाँव में विकास का पहिया घुमाने के लिए तत्पर।

रमन :- जीवन का छोटा भाई, 22 वर्ष की आयु, गेहुआँ रंग, शरीर से कमजोर, छात्र।

कविता एवं बबीता :- प्रदीप की बेटियाँ।

बलवंत, गुप्तेशर, बीर बहादुर, नसीम आदि :- गाँव के लोग।]

अंक - पहला

दृश्य – पहला

[पर्दा उठता है।]

[एक छोटे से गाँव में स्थित जीवन के घर का दृश्य। घर की दीवारें मिट्टी की हैं तथा छत खप्पड़ से बना है। घर के बीच में आँगन है। पाँच कमरे के दरवाजे आँगन की ओर खुलते हैं। आँगन की दीवारें पर चुन्ने का रंग चढ़ा है। आँगन में खटिया लगी है जिस पर जीवन बैठा हुआ है एवं रेडियो पर समाचार सुन रहा है]

प्रदीप :- इतनी महंगाई बढ़ गयी है कि समाचार में भी उसका उल्लेख हो रहा है। इसकी कीमतों में इतना उछाल तो रुपया कमजोर, उसकी कीमत आसमान छू गयी। क्लर्क को आखिर पेंशन ही कितना मिलता है।

मंजू :- क्या बड़-बड़ बोला तानी। पूरा 30 वर्ष चाकरी करनी औरो शहर में एगो घरो न लेनी। खाली एगो बबीतवा के शादी कर पैनी। रिटायर होला के बाद क्वार्टर खाली करके सीधा गाँव आ गैनी जा। दिलीप बबुआ रउआ से ठीक बानी। घर के घर में रहलन औरों चार बीघा ज़मीनों खरीद लेले बारण।

प्रदीप :- हाँ, सही कहती हो, नाश्ता बन गया है तो देदो, मुझे भूख लगी है।

मंजू :- अभी ब न ता, बनला के बाद कवितवा से भिजवा देहम। बहुते काम बा जा तानी।

प्रदीप :- तुम्हारा मातृभाषा भोजपुरी का परिवर्तन हिन्दी भाषा में मालूम नहीं कब होगा? (हँसते हुए)

मंजु :- रावे तो क़हत रहनी मातृभाषा नदी बा औरो राजभाषा हिन्दी महानदी तो दुनों में पानी का अंश भईल न मतलब दुनों एके जईसन बा। हमार देश के भाषा बा।

प्रदीप :- वाह ! धन्य हो भाग्यवान।

[दिलीप का प्रवेश]

प्रदीप :- आओ दिलीप बैठ। और क्या हाल है घर में सब कुशल मंगल। बबुआ लोग सब ठीक हैं।

दिलीप :- हाँ भईया, सब ठीक है घर में। बबुआ लोग भी ठीक है। अभी तो वो लोग धान की कटाई में लगे हैं। आएंगे शाम तक।

प्रदीप :- दिनभर खेत में काम करेंगे तो उनकी पढ़ाई पर असर पड़ेगा।

दिलीप :- भईया, दुनों को आठवाँ पास करवा दिए हैं। और कितना पढ़ेंगे। नौकरी में अब कोई फायदा न है भईया। एक तो नौकरी में कंपटीशन बढ़ गया है ऊपर से पेंशन भी बंद बा और तो और महंगाई एक अलग डायन। इहे गुने नहीं पढ़ाएँ आगे। अब बबुआ घर के घर में और केकरो अंदर काम नहीं है, अपना काम में मनों लगता है और जितना मन लगेगा उतना तरक्की। अब जा तानी भईया, बबुआ सब के खाना पहुंचाना है।

प्रदीप :- नाश्ता कर के जाना।

दिलीप :- न भईया जा तानी, कहीनों और खा लेवेंगे।

[दिलीप चला जाता है, कविता आती है तथा नाश्ता अपने पिताजी को पड़ोसती है।]

कविता :- पापा, नाश्ता आ गया है, हाथ मुंह धो लीजिये। [फिर चली जाती है।

प्रदीप हाथ धोने के लिए उठता है तभी बीर बहादुर तथा जीवन का प्रवेश होता है।]

प्रदीप :- कहाँ रहता है जीवन, दिनभर इधर उधर भाग-दौड़ करने में थकते नहीं हो, खाने पीने का भी ख्याल नहीं है। अच्छा ब्लॉक में जो संविदा पर बहाली निकला है उसका फॉर्म भर दिये न।

जीवन :- जी पापा।

बीर बहादुर :- जानते है प्रदीप बाबू, जीवन के मेहनत के कारण विधायक जी ने ई गाँव में सड़क बनावे के परमिट दे दिया है। सड़क बनने से किसान समेत सभी लोगों को सहूलियत हो जाएगी। [बीर बहादुर फिर चला जाता है।]

प्रदीप :- बेटा, ये सब तो ठीक है लेकिन अपना भविष्य पर भी ध्यान देना जरूरी है। [विश्राम करने के लिए कमरे में जाते हुए]

जीवन :- जी पापा।

[रमन और कविता आती हैं, कविता के हाथ में एक प्लेट है]

कविता :- भैया, नाश्ता कर लीजिए। [प्लेट देती है।]

जीवन :- वाह आलू पराठा और मटर की सब्जी।

रमन :- बहुत टेस्टी है भैया।

जीवन :- तेरा बी.ए. फ़ाइनल का परीक्षा का डेट निकला। चार साल तो बी.ए में ही लग गए।

रमन :- निकलने वाला ही था लेकिन फिर हड़ताल के कारण डेट टल गया।

जीवन :- तैयारी जारी रखना। कविता तेरा कम्प्यूटर कोर्स ठीक से चल रहा है न।

कविता और रमन :- जी भैया।

दृश्य-2

[गाँव के मंदिर के समीप बने चबूतरे का दृश्य। चबूतरे पर जीवन खड़ा है और गाँव वालों को संबोधित करने वाला है। सभी लोग उसकी बातों को सुन रहे हैं।]

[पर्दा उठता है।]

जीवन :- प्रिय, गाँव के निवासी। आज हमलोग यहाँ एक खास विषय पर चर्चा करने के लिए उपस्थित हुए हैं। आज आप सभी के पास बैंकिंग सुविधा है। साथ ही पैसा निकासी हेतु ए.टी.एम. का भी प्रयोग आपलोगों के द्वारा किया जाता है। आजकल फ़ेक कॉल, मैसेज आदि से आपके खाते की जानकारी लेने का प्रयास किया जाता है। हमारे गाँव के नसीम चाचा भी इसके चपेट में आते आते बचे हैं। कुछ महीने पहले इन्हें एक फोन आया जिसमें कहा गया कि ये लॉटरी में 4000 रुपये जीते हैं। चाचा को मालूम न चला वो लोभ में आकर उन्होनें अपना अकाउंट नंबर तथा आई.एफ़.एस.सी. कोड दे दिया। इनके खाते में उस आतंकी ने 4000 रु भी डाल दिये। चाचा बहुत खुश हो गए थे। इस तरह से उस जालसाज ने चाचा के अंदर विश्वास जगाने में सफल हो गया। धीरे-धीरे इन दोनों में गहरी दोस्ती हो गई। एक दिन अचानक से उस जालसाज ने अपनी बेटी की बीमारी का बहाना बनाकर चाचा से 10,000 रु की मांग कर दी। चाचा उसे सब कुछ बता रखे थे कि इनके खाते में कितनी राशि है और घर परिवार में कौन-कौन है, यहाँ तक की गाँव के अमीर लोगों के नाम भी बता रखे थे। चाचा ने दोस्ती के नाम पर 10,000 रु इसे भेज दिये। धीरे-धीरे आए दिन चाचा से कुछ न कुछ पैसे की मांग वह करता रहा। चाचा को भी अजीब लगने लगा था। करीब 25,000 रु वह ठग चुका था। अब वह लंबा हाथ मारने के फिराक में था। उसने इस बार चाचा का ए.टी.एम. कार्ड नंबर के साथ पिन का मांग किया। जैसे ही वह मांग किया चाचा का मोबाइल डिस्चार्ज हो गया। लाइट भी नहीं थी उस दिन। अगले दिन चाचा ने मुझे इस घटना के बारे में बताया। मैने और नसीम चाचा ने तुरंत थाने में इसकी रिपोर्ट कराई। पुलिस अब उस साइबर आतंकी को ढूंढ रही है। आप सब को भी फेक मैसेज, कॉल, फ्रेंडशिप आदि से सतर्क रहना चाहिए।

गुप्तेश्वर :- हाँ, जीवन बेटा हमरा मैसेज आया था कि हम कार जीत गए हैं और रजिस्ट्रेशन करावे के लिए पैसा जमा का बात कहा। और 2 दिन हम कुछों नहीं किए फिर कॉल कर के कहता है कि ए.टी.एम कार्ड का नंबर

दीजिये। लेकिन हमरा बैंक वाला बोला था कि ए.टी.एम. पिन गुप्त रखें। इसलिए हम तो कुछों नहीं बताए उल्टा गलियाएँ है उसको एक दम भर पेट।

[सभी हँसते हैं।]

जीवन :- सही किए गुप्तेशर चाचा। अब से कोई भी अंजान मैसेज, कॉल, लिंक आदि मोबाइल पर आए तो उसे नजरंदाज करें। तथा इसकी रिपोर्ट भी आप थाने में कर सकते हैं। लोभ में आकर कोई भी ऐसा कदम न उठाएँ जिससे कि आर्थिक हानि उठानी पड़े। बच्चों को भी इसके बारे में बताएं।

बलवंत :- जीवन बेटा तुमसे एक विनती है। सभी गाँव वाले के पास खाता नंबर है। किसान संबंधी ऋण एवं सरकार के योजनाओं का लाभ प्राप्त करने के लिए ही सभी ने खाता खोलवाया है। यह तो जरूरी ही था। परंतु बेटा इस विषय पर घर-घर जाकर एक ज्ञान की ज्योत जलानी होगी।

[सभी साथ में हुंकार भरते हैं एवं पर्दा गिरता है]

सन्नी कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

हमारे कार्यालय में आयोजित हिंदी तिमाही बैठक की झलकियाँ।

जहाँ गली मुड़ती है

उस शाम को अर्पिता ऑफिस से निकलकर टहलते हुए धर्मतल्ला के हॉग मार्केट जा पहुँची। कोलकाता का यह बड़ा व्यस्त बाजार है। धर्मतल्ला का न्यू मार्केट एरिया महिलाओं के लिए खरीदारी करने की बिल्कुल मुफीद जगह है। कपड़े, खिलौने, जूते, घड़ियाँ, बैग, पर्स, फूल,इत्र, सूखे फल और न जाने कितनी चीजें यहाँ बहुतायत मिलती हैं। इन दुकानों के सामने रेहड़ी वाले सड़क किनारे भी कपड़े-जूते, खिलौने आदि बेचते हैं। यह बाजार बड़ा सजीव है, युवा और ऊर्जावान है।

अर्पिता को यहाँ घूमना बेहद पसंद है। शाम को रंगीन लाइटों के प्रकाश से दुकाने जग-मग कर उठतीं हैं। फुटपाथ पर सजी चीजों को घेर महिलाएं अपनी पसंद की चीजों को उलट पलट कर देखते हुए मोल भाव करती हैं। सड़क किनारे खड़ा कोई गुब्बारे वाला अदद बच्चा ग्राहक के इंतजार में खड़ा रहता है। इधर कोई प्लास्टिक के बन्दूकनुमा चीज से भीड़ पर झाग के बुलबुले उड़ाता रहता है।

दो दिनों के बाद अर्पिता का बारह वर्षीय बेटा आयुष होस्टल से छुट्टी पर घर आने वाला था। उसने आयुष के लिए जूते खरीदे, एक डिजिटल घड़ी खरीदी और एक टोपी खरीदी। अर्पिता ने खुद के लिए एक पर्स खरीदा। इन चीजों को बैकपैक में डालकर, बैग को पीठ पर झुलाए वह भीड़ में खोई सी घूमती हुई सजी दुकानों की रोशनियां अपनी आंखों में भर रही थी।

तभी एक युवक उसकी ओर देखते हुए बोला, 'चोरी कर रहा है।'

इससे पहले की अर्पिता कुछ समझ पाती वह युवक लगभग चीखते हुए बोला, 'आपका बैग...।'

अर्पिता तेजी से पीछे की ओर मुड़ी। उसके बैकपैक का ज़िप खुला था!

अर्पिता ने फूर्ती से चोर को पकड़ा। चोर करीब दस साल का मरियल सा लड़का था।

जब अर्पिता सड़क पर धीरे धीरे चल चल रही थी, तब वह लड़का उसके पीछे चलते हुए बैग का चेन खोल समान

चुराने का प्रयास कर रहा था। शायद तभी उस भले युवक की नजर पड़ी होगी।

अर्पिता को आश्चर्य हुआ कि किसी ने उसके बैग का चेन खोल दिया और उसे आभास तक नहीं हुआ।

अर्पिता उस चोर की कलाई भींचे खड़ी थी। उसे पकड़े ही अर्पिता ने अपना बैग चेक किया। बैग में छोटा मनी बैग, मोबाइल और सभी चीजें सलामत थीं। बालक चोर कुछ चुरा न पाया था।

अर्पिता ने उसकी कलाई पकड़े लगभग खींचते हुए सड़क के किनारे लाई।

'क्यों रे मेरा पर्स चुरा रहा था। बुलाऊँ पुलिस को?'

लड़का मिमियाते हुए बोला, 'मेरे हाथ में घाव है। हाथ छोड़िए।'

फिर उसने अपनी फुल स्लीव कमीज के आस्तीन को ऊपर चढ़ाया। उसके केहुनी के पास एक गंदी सी पट्टी बंधी थी। उसने पट्टी हटाया।

अर्पिता सकते में आ गई। चोर के कलाई पर उसकी पकड़ ढीली पड़ गई। उसकी कलाई से थोड़ा ऊपर गहरा घाव था। मानों एक चम्मच जितना गहरा।

हाथ छूटते ही लड़का भीड़ में कहीं अदृश्य हो गया।

घर आकर अर्पिता ने अपने पति सुब्रत को यह घटना सविस्तार बताई। सुब्रत ने कहा, 'वह बच्चा किसी गिरोह का सदस्य हो सकता है। उस गिरोह के कुछ लोग उसके आस पास ही रहते हैं। चोरी का माल पहला दूसरे को और दूसरा तीसरे को देता है। माल को यूँ गायब करते हैं कि किसी को भनक तक न लगे और पकड़े भी न जाए। कुछ गिरोह बच्चों से केवल इसलिए चोरी करवाते हैं, ताकि पकड़े जाने पर लोग बच्चे पर दया कर उसे छोड़ दे। पुलिस में शिकायत न करे। यह भी संभव है कि गिरोह वालों ने ही बच्चे के हाथ पर जख्म बना दिया हो ताकि पकड़े जाने पर उसे दिखाकर वह सहानुभूति बटोर सके।'

सुब्रत की बातें और विचलित करने वाली थी।

डिनर करने के बाद अर्पिता अपने बेटे आयुष से फोन पर बात करती है। आयुष बारह साल का है और हॉस्टल में रहता है। आयुष से बातें कर वह चोर बालक के प्रसंग को भूल गई।

रात को एक भयावह सपने ने अर्पिता को जगा दिया। उसने सपने में देखा कि आयुष काफी कमजोर हो गया है। वह अपनी कमीज के आस्तीन को हटाकर अर्पिता को दिखाते हुए कह रहा है, 'देखो न ममी, मेरे हाथ में कितना बड़ा घाव है।'

अर्पिता ने देखा ठीक वैसा ही गहरा घाव! एक चम्मच गहरा।

अर्पिता बेचैन हो गई। मन हुआ कि आधी रात को ही आयुष को फोन करे। फिर उसने अपने को समझाया कि वह एक सपना था। आयुष होस्टल में गहरी नींद में सो रहा होगा।

शनिवार को ऑफिस बंद रहता है। अर्पिता सुबह पुनः हॉग मार्केट गई। सुबह सुबह भीड़ खास नहीं होती। वह उस चोर लड़के का हुलिया बताकर दुकानदारों से पूछताछ करने लगी। कोई उस लड़के का ठिकाना बता नहीं पाया। अर्पिता उसे करीब एक घंटे तक ढूंढती रही। थककर वह एक दुकान के समीप रखे बेंच पर बैठ गई।

कुछ देर बाद एक बूढ़ा आकर बोला, 'आप उसे क्यों ढूंढ रहीं हैं? उसने तो आपका कुछ चुराया नहीं।'

अर्पिता बोली,'आप उस लड़के को जानते हैं? उससे मिलवा दीजिए।'

बूढ़े आदमीं ने कहा, 'वह बड़ा गरीब है। आप पुलिस में रिपोर्ट मत करना। इस गली से तीसरी दुकान के पीछे वह मिल जाएगा।'

अर्पिता वहाँ गई। वह लड़का वही फुल स्लीव कमीज़ पहने बैठा था।

अर्पिता को देखते ही घबरा कर उठ खड़ा हुआ। अर्पिता ने उसे पास बुलाया।

बैग से कुछ दवा की शीशियाँ, लोशन और क्रीम का पैकेट उसे थमाती हुए बोली, इसे घाव पर लगाना।'

लड़का उसे टुकुर टुकुर देख रहा था।

अर्पिता ने कुछ बिस्किट और एक केक का पैकेट उसके ओर बढ़ाते हुए बोली, 'आइंदा चोरी मत करना।'

अर्पिता तेजी से गली से निकलते हुए सड़क की ओर बढ़ी। सड़क पर उसने एक नजर लड़के की ओर देखा। वह दवा और बिस्किट के पैकेट हाथ में लिए अपनी जगह खड़ा था।

चन्दन कुमार बढ़ई
हिन्दी अधिकारी

हिजला मेला

झारखंड राज्य की उपराजधानी दुमका जिले से सटे हिजला पहाड़ी की तलहटी में बसी हिजला बस्ती दुमका सदर प्रखंड की सरूवा पंचायत का एक गांव है और दुमका शहर से महज चार किलोमीटर की दूरी पर बसा हुआ है। यह बस्ती मयूराक्षी नदी तट व हिजता पहाड़ी के मध्य में है। यहां लगने वाले हिजला जनजातीय मेला का इतिहास लगभग 130 साल पुराना है। दुमका शहर में 13 फरवरी, 1890 को तत्कालीन ब्रिटिश जिला मजिस्ट्रेट जॉन रॉबर्ट्स कास्टेयर्स के समय में हिजला मेला की परम्परा की शुरुआत की गई थी। 1855 के संताल हुल के समय ही आदिवासी अंग्रेज शासकों से चिढ़े हुए थे और उनसे अलग चल रहे थे। उन्हें मुख्य धारा से जोड़ने के मकसद से उपायुक्त जॉन आर कास्टेपर्स ने यह मेला शुरु कराया था जो आजादी के बाद भी जारी रहा। ऐसा माना जाता है कि स्थानीय परंपराओं, रीति-रिवाज और सामाजिक नियमों को समझने और स्थानीय लोगों से सीधे संपर्क करने के उद्देश्य से इस मेले की शुरुआत की गई थी। इसी सन्दर्भ में 'हिजला' शब्द 'His Laws' से बना है। ऐसी भी मान्यता है कि हिजला मेले का नाम स्थानीय गांव हिजला के आधार पर रखा गया है।

वर्ष 1975 में श्री जी. आर. पटवर्धन, तत्कालीन संथाल परगना आयुक्त की पहल पर हिजला मेले में आदिवासी शब्द जोड़ा गया। झारखंड सरकार ने 2008 से इस मेले को उत्सव के रूप में मनाने का फैसला किया

और 2015 में इस मेले को राज्य मेले का दर्जा दिया गया, जिसके बाद इस मेले को "राज्य आदिवासी हिजला मेला महोत्सव" के रूप में जाना जाता है।

आमतौर पर यह मेला माघ फाल्गुन के शुक्ल पक्ष में मनाया जाता है। इस समय तक ग्रामीण किसान काम से मुक्त होकर जश्न के मूड में रहते हैं। सोहराई उत्सव के संदर्भ में, पूरे क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पूरी दुनिया में इसकी निरंतरता से परिलक्षित होती है। यह मेला न केवल आदिवासी समुदायों के अद्भुत समन्वय का प्रतिनिधित्व करता है। बल्कि स्थानीय गैर-आदिवासी समुदायों की साझी विरासत का भी प्रतिनिधित्व करता है। मयूरक्षी नदी

और पर्वतीय पठार हिजला मेले को अनुपम सौन्दर्य प्रदान करता है। नदी की धाराएं, पक्षियों का स्वर, नाच- गाना, ढोल और फरिश्ते एकमत होकर सभी को झूमने पर मजबूर कर देते हैं। मानो हर व्यक्ति और प्रकृति के कण-कण में हिजला का प्रवाह व्याप्त हो गया है।

हिजला मेला विविधता से भरा हुआ है। यह मेला यहां की संस्कृति को मंच प्रदान करने का कार्य करता है। जहां एक ओर आदिवासी संस्कृति पर आधारित नृत्य संगीत का प्रदर्शन किया जाता है। वहीं दूसरी ओर आंतरिक कला मंच पर बच्चों की प्रश्नोत्तरी, बातचीत, वाद-विवाद प्रतियोगिता और बुद्धिजीवियों के बीच परिचर्चा की व्यवस्था भी की जाती है। रात में मंच पर कॉलेज के छात्रों द्वारा पारंपरिक कहानी तथा प्रतियोगिता की व्यवस्था की जाती है। बाहरी कला मंच पर सांस्कृतिक पार्टियों के कलाकारों द्वारा भव्य कला का प्रदर्शन भी किया जाता है। मेले में खेल प्रतियोगिता, खानपान, मनोरंजन, पुस्तक इत्यादि की अनेक दुकानें लगती हैं। विभागों द्वारा सरकार की विभिन्न

योजनाओं को गतिमान करने के उद्देश्य से स्टॉल लगाए जाते हैं, ताकि किसानों को आधुनिक तकनीक से अवगत कराने के लिए कृषि, आत्मा, उद्यान और मत्स्यपालन द्वारा उनकी जांच की जा सके।

दूसरे शब्दों में कहे तो यह मेला न केवल सांस्कृतिक गतिविधियों से ओत-प्रोत है अपितु शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, खेल आदि संबंधी जानकारियों से भी लवरेज है। यह मेला छोटे व्यापारियों के लिए लाभकारी सिद्ध होता है। वे नाना-प्रकार की वस्तुओं को बेचते हैं।

यदि आप लोकगीतों को करीब महसूस करना चाहते हैं, यदि आप प्रकृति में शाश्वत संगीत और इसकी लय का अनुभव करना चाहते हैं, यदि आप लोक मंगल समरसता में डूबना चाहते हैं, तो एक बार आपको हिजला मेला आना चाहिए। हमारे देश में विविधता में एकता के भाव को यह मेला शत-प्रतिशत चरितार्थ करता है।

अभिषेक कुमार गुप्ता
सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

अजीब दास्तां है ये.....2

[नोट- इस कहानी का पहला भाग वंदे मातरम् के 24वें अंक में पढ़ा जा सकता है]

सभी लोग सांस रोके मेरी बात सुन रहे थे।

"पिताजी, आपने भी मुझसे पूछा था कि बाहर लाठी लेकर क्या कर रहे हो?"

पिताजी ने पिछली रात की घटना को याद करते हुए कहा " और तुमने कहा था कि शायद कोई चोर था। "

" हां। "

इतनी कहानी सुनकर मेरी मां को मानो सदमा ही लग गया हो। वह कुछ बोलना चाह रही थी लेकिन वह कुछ बोल नहीं पा रही थी। भाभी ने तुरंत अंदर से ठंडे पानी का गिलास लाकर मां को दिया। वह धीरे-धीरे पानी पीने लगी।

थोड़ी देर बाद जब वह कुछ सामान्य हुई तब उन्होंने कहा "तुम्हारी बात सुनकर मुझे कल सुबह की घटना याद आ रही है।"

" क्या हुआ था कल?" पिताजी ने सहमते हुए पूछा।

मां के चेहरे पर डर साफ झलक रहा था। उन्होंने कांपते हुए आवाज में कहना शुरु किया।

" "कल सवेरे 10:00 बजे के आसपास मैं और नंदिनी रसोई में अपना-अपना काम कर रहे थे।

नंदिनी ने मुझे चाय का कप देते हुए कहा, " आप जाकर आराम से चाय पी लीजिए फिर काम कीजिएगा।"

मैं बाहर कमरे में जाकर सोफे पर बैठकर आराम से चाय पीने लगी तभी मेरी नजर खिड़की से बाहर गई। सब्जी वाली टोकरी लेकर शांत भाव से गली का चक्कर लगा रही थी। मुझे भी सब्जी लेना था इसलिए मैं बाहर दरवाजे पर जाकर उसे आवाज़ लगाई। वह मेरी तरफ मुड़ी और तभी मेरा ध्यान उसके टोकरी पर गया।

"अरे यह क्या? सब्जी की जगह टोकरी में बच्चा क्या कर रहा है?"

वह जैसे-जैसे मेरे करीब आती जा रही थी मुझे सब कुछ साफ नजर आता जा रहा था। 'उसके चेहरे पर सिंदूर की

अजीब-सी एक रेखा माथे, नाक से होते हुए उसके होंठ तक जा रखी है। सिर पर एक टोकरी है लेकिन उसमें सब्जी की जगह एक छोटा बच्चा सोया हुआ है। बच्चे का चेहरा भी लाल दिख रहा है। '

"शायद इस औरत ने ही बच्चे को सिंदूर लगा दिया हो!" मैंने सोचा।

"कोई कमरा किराए पर मिलेगा क्या दीदी?" उस औरत ने पास आते ही पूछा।

"नहीं हम कमरे किराए पर नहीं देते।" मैंने कहा

वो गिड़गिड़ाते हुए बोली, "वो क्या है कि पीछे मुख्य सड़क पर मेरा और मेरे बेटे की दुर्घटना में मौत हो गई है, कृपया कर मुझे एक कमरा किराए पर दे दीजिए वरना मैं कहां-कहां भटकती फिरूंगी!"

"मुझे तो यह औरत पागल ही लगती है। कैसी बहकी बहकी बातें कर रही है!" मैंने खुद से बोला।

मैं दरवाजा बंद करने लगी तभी वह बोली, "दीदी अगर आप दरवाजा लगा लेंगी तो मैं समझ जाऊंगी कि आपने एक कमरा मुझे किराए पर दे दिया है।"

"मैंने कहा ना, हम कमरा किराए पर नहीं देते।" मैं थोड़े गुस्से में बोली।

तभी मेरा ध्यान उसके चेहरे पर गया। जो पहले मुझे सिंदूर लग रहा था दरअसल वह खून था जो उसके माथे से बहते हुए नाक के रास्ते उसके होंठ तक जा रहा था। मुझे लगा शायद इसके सिर पर चोट लगी है तभी यह पागलों जैसी बात कर रही है, फिर मेरी नजर बच्चे पर गई। शायद उसे भी चोट लगी है। मुझे बच्चे पर ममता आ गया।

"रुको! " मैंने कहा और अंदर चली गई।

कमरे में अपने पर्स से 100 रुपए का नोट निकालकर उसे देने जाने लगी। दो कदम चलकर मैंने सोचा इस महंगाई के जमाने में 100 रुपए से क्या होगा। फिर मैं 500 रुपए निकालकर उसे देने गई।

"लो रख लो और अपना मरहम पट्टी करवाओ।" ऐसा कहते हुए मैं दरवाजा लगाने लगी। जैसे ही दरवाजा लगा कर मैं अंदर कमरे में जाने लगी तो जो अंतिम बात मुझे सुनाई दी वो ये थी कि "धन्यवाद दीदी, कमरा किराए पर देने के लिए। आप कितनी अच्छी हैं, भाड़ा भी महीने के शुरुआत में ही दे दिया आपने।"

अब मुझे पूरा यकीन हो गया था कि यह औरत सच में पागल ही है। " "

इतना कहकर मां ने अपनी बात समाप्त की।

मां की बात सुनकर हम सभी दंग रह गए थे। तभी मैंने अखबार का वो पन्ना मां की तरफ किया। पन्ने में उस औरत की फोटो देखकर मां चिल्ला उठी " यह तो वही औरत है जो कल...."

बातें अब कुछ हद तक साफ हो गई थी। तार से तार मिलते नजर आ रहे थे।

"तो यह उसी सब्जी वाली की आत्मा थी!" पिताजी ने घबराते हुए कहा।

मैं तो यह मानने को तैयार ही नहीं था कि प्रेत-आत्मा जैसी कोई चीज भी होती है, लेकिन पिछले दिन ये जो घटना घटी, हम सभी को यह मानने पर मजबूर कर दिया कि वो सच में आत्मा ही थी। पिताजी ने आनन-फानन में बामकेश्वर पंडित जी को फोन मिलाया। वह घर आए। उन्हें सारी बातें बताई गई। इसके बाद पंडित जी आंख बंदकर कुछ मंत्र बुदबुदाए फिर आंखें खोलकर उन्होंने कहा कि वह आत्मा बहुत भली आत्मा थी इसलिए किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचाई। वह उल्टी दुनिया से थी इसलिए वह उल्टी बातें करती थी और हमें वह अजीब लगता था। अब हमें अग्नि देव की पूजा करनी होगी ताकि अग्नि देव अपने ताप से इस घर में बची खुची नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त कर दें और साथ में ही उन दोनों आत्माओं की शांति के लिए महामृत्युंजय जाप करना होगा। हम सभी पंडित जी की बात मानकर पूजा की तैयारी में लग गए। योजनानुसार अगले दिन पूजा प्रारंभ हुआ। पंडित जी के साथ पूजा पर मुझे ही बिठाया गया। अग्नि देव की पूजा के बाद हवन शुरू हुआ। हवन के कारण पूरा कमरा धुआं-धुआं हो गया था, कुछ भी दिखना बंद हो गया। फिर शुरू हुआ महामृत्युंजय जाप। पंडित जी ने कहा खड़े हो जाओ और आरती की थाल लेकर उसे अग्नि देव को दिखाओ, पूरे 108 जाप के बाद ही तुम्हें रुकना है। जाप चालू था मैं आरती दिखा रहा था। धुएं के कारण हम सभी की आंखों में जलन होने लगी थी मैं अपनी आंखों को खुला रख नहीं पा रहा था। मैंने अपनी आंखें भींच कर बंद कर ली। अब मेरी हालत खराब होनी शुरू हो गई थी। आरती दिखाते-दिखाते मेरे दाहिने बांह में दर्द भी शुरू हो गया था और यह जाप था कि खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था। परंतु पंडित जी ने जैसे ही अंतिम जाप किया और मुझसे कहा कि आरती की थाल जमीन पर रखो, मेरी जान में जान आई और मैं जमीन पर आरती की थाल रखने लगा।

"अरे! ये क्या? " मुझे जमीन मिल ही नहीं रहा था। मैं झुकता गया लेकिन जमीन सामने आ ही नहीं रहा था। अचानक मुझे लगा कि मैं हवा में उड़ रहा हूं और यह धुआं नहीं बल्कि बादल है। मैं तेजी से नीचे गिर रहा था। मुझे लगा मेरा बचना अब नामुमकिन है। मुझे सारी बातें ध्यान आने लगी। " मैं उस औरत की आत्मा से बुरे तरीके से पेश आया इसलिए वह बदला ले रही है, मुझे उस पर चिल्लाना नहीं चाहिए था। " तभी एक झटके में मैं जमीन पर गिरता हूं, और.. और... यह क्या? उस झटके से मेरी नींद खुल गई।

"ओह! तो मैं यह सब सपना देख रहा था?"

मुझे मेरी दाहिने बांह में थोड़ा दर्द महसूस हो रहा था, 'शायद रात में सोने वक्त ठीक से करवट नहीं ली होगी।'

"लेकिन ये आंख में जलन कैसी?" ऐसा सोचते और अपनी आंख मलते हुए मैं हर रोज की तरह बालकनी में जाकर बैठ गया। सामने के टेबल पर अखबार रखा हुआ था। तभी मां गरम पानी का लोटा और एक गिलास लेकर आई और उसी टेबल पर रख दी।

"बड़ी देर तक सोया?" मां ने पूछा।

"हम्म...!!" "पिता जी कहां गए?"

"सब्जी लेने मोड़ पर गए हैं। बड़ी देर हो गई है, पता नहीं किधर रह गए।" कहते हुए मां पास की कुर्सी पर बैठ गई।

थोड़ी देर में पिता जी आते हैं। वो थोड़े उदास लग रहे थे।

"क्या हुआ आपको? इतनी देर किधर थे?" मां ने पिता जी के चेहरे के भाव को समझते हुए पूछा।

" नहीं, कुछ नहीं हुआ मुझे।" ठंडी आह भरते हुए पिता जी ने कहा, " पता नहीं आज कल के नौजवान को क्या हो गया है? किस हड़बड़ी में रहते हैं? इतनी तेज बाइक चलाते हैं मानो बाइक न हो, हवाई जहाज हो। मैं वहां सब्जी ले रहा था, तभी पीछे एक तेज आवाज होती है। मैं मुड़ कर देखता हूं कि एक बाइक वाले ने तेजी से एक सब्जी वाली को टक्कर मार दिया है, बेचारी के गोद में एक छोटा बच्चा भी था। बाइक वाले को तो खास कुछ नहीं हुआ, लेकिन सब्जी वाली को बहुत बुरी तरह चोट लगी। बच्चे को वो कुछ भी नहीं होने दी। कुछ लोग उसे सदर अस्पताल ले गए हैं। पता नहीं बेचारी बचेगी भी या नहीं।.....

आशीष कुमार
लेखाकार

मन के नियंत्रण में योग की भूमिका

श्रीमद्भगवत गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है 'योग: कर्मसु कौशलम्' अर्थात कर्म करने का सटीक कौशल ही योग है। कर्म के माध्यम से जीवात्मा जन्म-जन्मांतर के बंधन को छिन्न कर मुक्तिलाभ के पथ पर चल देती है जिसके फलस्वरूप परमात्मा अर्थात ईश्वर के साथ जीवात्मा का संयोग साधित होता है। कर्म के बंधन के ही कारण से जीवात्मा का आत्मविस्मृति होता है, बार-बार शुभ-अशुभ कर्म करना और उसके परिणामस्वरूप सुख-दुख के तनाव में कुचली हुई हवा की चक्रीय पुनरावृत्ति है। लेकिन जीवात्मा केवल देह नहीं है, जीव के प्रकृत स्वरूप वह जन्महीन, मृत्युहीन, विकारहीन, बुढ़ापा रोग से ऊपर एक निर्विशेष सत्ता है।

लेकिन इस स्वरुप मैं वह उप्लब्धि नहीं पा रहा है, कारण उसने अपनी आत्मज्योति को जन्म-जन्मांतर के संस्कार और कर्मफल के मलिन परत द्वारा ढक रखा है। इस परत को हटाकर अंतर्ज्योति का विकास करना ही योग का मूल उद्देश्य है। उद्देश्य एक है मार्ग अनेक हैं। भारतीय दर्शन के प्रत्येक स्तर पर इस योग के विभिन्न उपायों की चर्चा बार-बार होती है। योगशास्त्र के अलग-अलग अंशों में कभी भक्तियोग, कभी कर्मयोग, कभी ज्ञानयोग तो कभी राजयोग की बात होती है। योगी सन्यासी स्वामी विवेकानंद ने कहा है- इन सब में एक, एकाधिक भक्तिलाभ प्राप्त की जा सकती है। अर्थात यह योग ही असीम स्वतन्त्रता और आत्मनिर्भरता की चरम अवस्था है, जहां समाज का व्यक्ति के साथ, धनी का दरिद्र के साथ, विज्ञान का दर्शन के साथ कोई विवाद नहीं है। उनमें से एक यह भी मूल उद्देश्य है- मनुष्य के मन पर पूर्ण नियंत्रण।

मन को नियंत्रित करने के लिए सर्वप्रथम मन के स्वभाव के संपर्क में जानने का प्रयोजन है। सांख्य दर्शन के मतानुसार सब कुछ सत्व, रजः एवं तम: इन तीनों गुणों के समन्वय से गठित है। मन भी इससे बाहर नहीं है इसलिए मन के गठन के संपर्क में बोलने से पहले इन तीनों गुणों के संबंध में बोलने की जरूरत है। तमोगुण अंधकार, आलस्य एवं अज्ञानता का प्रतीक है। रजोगुण मौजूदा वस्तु में गति लाता है। सृष्टिशीलता, शक्ति, प्रतियोगिता के मनोभावों का कारक ही रजोगुण है। दूसरी ओर सत्व गुण प्रकाश, ज्ञान और शांति का सूचक है। इन तीनों गुणों में से कोई भी एक दूसरे को छोड़कर नहीं

रह सकता है। लेकिन जिस मन में जिस गुण का प्राबल्य अधिक है, उस मन की प्रकृति भी तदनुसार होती है। समाज के ज्ञानी, गुणी मनुष्य और साधक श्रेणी के व्यक्ति प्रधानतः सात्विक प्रकृति के मन के अधिकारी होते हैं। रजोगुणी लोग स्वयं को रचनात्मकता में, युद्ध के मैदान में समझौता न करनेवाले झगड़ों में या सत्य के पथ पर असीमित धन कमाने की लत में व्यस्त रहते हैं। दूसरी ओर, तमोगुणी मन के अधिकारी मनुष्य नकारात्मक मनोभाव के होते हैं,वे सहजता से ही नाना प्रकार के असामाजिक कार्यकलाप में या नशे में लिप्त हो जाते हैं या गंभीर हताशा में डूब कर अपना सर्वनाश करते हैं और दूसरों को भी नाना प्रकार से क्षति पहुंचाते हैं। योग बोलता है- तुम मन को शुद्ध करो, रजोगुण द्वारा तमोगुण से मुक्त हो, अर्थात आलस्य पूर्ण मस्तिष्क को साधना के माध्यम से सचल और सबल करो, परिश्रम करो, तपस्या करो। इसके फलस्वरूप तुम्हारा मन थोड़ा शुद्ध होगा। इसके बाद जोगुणी मन को और शुद्ध करने के लिए साधना को अंतर्मुखी करो मन का विश्लेषण करो। अप्रयोजनीय वासनाओं से मन को मुक्त करो, उत्ताल झील जैसे चंचल मन को ध्यान के माध्यम से स्थिर करो- ऐसे मन में सतोगुण का आधिक्य होगा जिसके फलस्वरूप, 'आत्मज्ञान' का लाभ होगा।

वेदान्त में मानव-अस्तित्व के पाँच स्तरों की बात कही गई है, जो जीव के प्रकृत स्वरूप आत्मा को ढककर रखता है। पहला है शरीर या अज्ञानमय कोश, उसके बाद दूसरा है शरीर में क्रियारत शक्तिसमष्टि या प्राणमय कोश, तृतीय स्तर है चिंताशील क्षेत्र या मनोमय कोश, चतुर्थ स्तर है बुद्धि या विज्ञानमय कोश और पंचम सत्वगुण परिपूर्ण आनंदमय कोश। कम बुद्धि वाले सामान्य लोग अपने शरीर के बारे में सोचकर ही संतुष्ट हो जाते हैं। क्षुधा, तृष्णा, निद्रा, मैथुन, भय, मलमूत्र त्याग- यही उसका सर्वस्व है। लेकिन जैसे-जैसे वह परिपक्व होता है, वह धीरे-धीरे खुद को प्राण, मन और बुद्धि के स्तर में उठाना सीख जाता है। अंततः सुख की अनुभूति सभी स्थितियों में की जा सकती है। यही पर ही योग की प्रासंगिकता है। योग इन पाँच स्तरों के द्वारा प्रगति के पथ को दिखाता है। योगाचार्य महर्षि पतंजलि ने राजयोग तथा अष्टांगयोग की बात कही है। राज योग के आठ अंग हैं- यम, नियम, आसान, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

'यम' का अर्थ है अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह। 'नियम' का अर्थ है- शौच, संतोष, तपस्या, स्वाध्याय एवं ईश्वर प्रणिधान। मूलतः 'यम' के ये सब साधु जीवन में पालन करनेवाले व्रत समाज की भलाई के लिए अत्यंत प्रासंगिक है, यह कहने की जरूरत नहीं है। वहीं दूसरी ओर 'नियम' के व्रत व्यक्ति के जीवन को और भी संगठित कर देते हैं, चारित्रिक दृढ़ता देते हैं। योग की साधना या अभ्यास करनेवाले के लिए इन सब का पालन करने का विशेष प्रयोजन है। उसके बाद 'आसन' या बैठने की प्रणाली है। विभिन्न प्रकार के दैहिक भंगिमा या आसन का अभ्यास करने के फलस्वरूप विभिन्न शारीरिक कष्टों से मुक्त होना भी संभव है। श्वास नियंत्रण अथवा 'प्राणायाम'

विकारों, श्नायुतंत्र और मन के स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद है। आसन और प्राणायाम ध्यान के अभ्यास के लिए भी आवश्यक है।

यम, नियम, आसन और प्राणायाम ये प्रथम चार योगांग या योग के वहिरंग हैं। 'अंतरंग योग' प्रत्याहार से शुरू होता है। मन की स्वाभाविक प्रवृति बहिर्मुखी होती है। उस बहिर्मुखी अस्थिर मन को शांत करके बाहर से समेटकर भीतर स्थिर करने का निरंतर प्रयास ही प्रत्याहार है। मन एक बार अंतर्मुख होने पर भीतर एक नया जगत उद्घाटित होता है। इस प्रकार बहिर्जगत से और बेहतर तरीके से यदि बोला जाए तो अत्यंत मनोरम विषय में लिप्त मन को इच्छाशक्ति के प्रयोग के माध्यम से किसी एक निर्दिष्ट विषय पर स्थिर करने की चेष्टा 'धारणा' है अर्थात विषय विशेष पर मन को स्थिर करना अथवा पकड़ कर रखना। योगशास्त्र कहता है- किसी भी एक विषय पर मन को 12 सेकंड के लिए स्थिर करना यदि संभव हो तब एक 'धारणा' सम्पूर्ण होती है। इस प्रकार 12 क्रमिक निर्विछिन्न धारणाओं के फलस्वरूप उस विषय विशेष की ओर मन की जो निर्बाध गति होती है, उसे 'ध्यान' कहते हैं। योगशास्त्र कहता है धारणा जलधारा के बराबर है, दो बिन्दुओं के मध्य रिक्त स्थान है। 'ध्यान' तेलधारा जैसी निर्विच्छिन है। इस प्रकार निष्ठा के साथ निरंतर अभ्यास के फलस्वरूप मन जब गंभीर ध्यान में सहजता से मग्न होने का क्षमता लाभ करता है, तब मन अपने अस्तित्व को विस्मृत होकर इस ध्येय वस्तु के साथ अभेद रूप धारण करता है। यही पूर्ण एकाग्रता या 'समाधि' है।

समाधि योग की सर्वोच्च अवस्था है। समाधि दो प्रकार की होती है- 'संप्रज्ञात' समाधि और 'असंप्रज्ञात' समाधि। समाधि जब किसी निर्दिष्ट विषय पर ध्यान करने के फलस्वरूप प्राप्त होती है तब उसे संप्रज्ञात या सविकल्प समाधि कहते हैं। योगी बोलते हैं, इस संप्रज्ञात समाधि में मन ज्ञान के शिखर पर आरोहण करता है और इस से योगी मन नाना प्रकार की अलौकिक सिद्धियों का लाभ करता है। दूसरी ओर, जब मन सर्वस्व का त्याग कर अपनी अंतरात्मा में समाधिस्य होता है, तब वह असंप्रज्ञात या निर्विकल्प समाधि होता है। यह निर्विकल्प समाधि साधक मन को जन्म-जन्मांतर के समस्त संस्कार राशि को धोकर परिस्कृत कर मोक्ष प्रदान करती है।

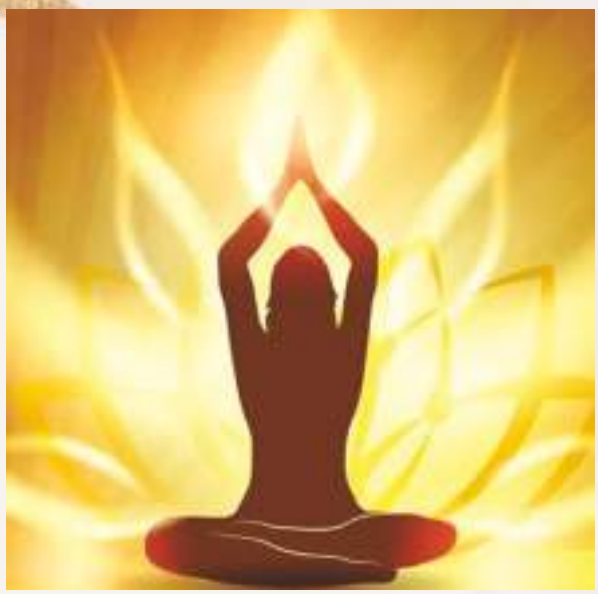

हम साधारण मनुष्य सचराचर इस उच्च समाधि के शिखर पर न चढ़ पाने के उपरांत भी, योग के नियमित अभ्यास के माध्यम से मन को उन्नत करने में बहुत दूर तक जा सकते हैं। नियमित ध्यान अभ्यास के फलस्वरूप मानसिक तनाव, हताशा, अनिद्रा, स्नायु दुर्बलता, मानसिक असंतुलन जैसी नाना प्रकार के बीमारियों का सहज उपचार हो सकता है। आजकल, अधिकांश आधुनिक मनोवैज्ञानिक बोलते हैं अधिकतर बीमारी "साइकोसोमैटिक" अर्थात रोग का मूल जड़ मन में है किन्तु रोग का वहि: प्रकाश बाहर शरीर में होता है। इसलिए इन समस्त रोगों को जड़ से निर्मूल करने के लिए केवल मात्र मुट्ठी-मुट्ठी दवाई खाना उचित नहीं है, बल्कि रोगी के मानसिक स्वास्थ्य का देखभाल सुनिश्चित करना आवश्यक है। और इस क्षेत्र में योग कार्यकारी औषधि के रूप में कार्य करता है। अर्थात दूसरे शब्दों में बोला जाए तो, चरित्र गठन, शारीरिक कल्याण, मन एवं बुद्धि की निर्मलता तथा उन्नति सर्वोपरि व्यक्तित्व के परिपूर्ण विकास प्रणाली के लिए रामबाण है भारत की यह अत्यंत प्राचीन प्रणाली 'योग'।

वर्तमान में हम पूरे विश्व में भारत के इस योग का व्यापक प्रचार एवं प्रसार देख रहे हैं। भारत सरकार के अथक प्रयास के उपरांत 21 जून को राष्ट्र संघ द्वारा विश्व योग दिवस के रूप में घोषित किया गया। उपयुक्त गुरु के परामर्श एवं निर्देश द्वारा योग के सुनिर्दिष्ट तथा नियमित अभ्यास से केवल शारीरिक नहीं, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक उत्कर्ष का लाभ बहुत ही सहजता से संभव है। इसके फलस्वरूप मानव समाज में हिंसा, मिथ्याचार एवं अनैतिक आचरण का अंत होगा, दूसरी ओर इस पृथ्वी के भावी नागरिक मन से स्वाधीन, बलिष्ठ, सहनशील, समृद्ध एवं उन्नत होंगे। इसके फलस्वरूप जनमानस में भारत की चिरंतज वाणी ध्वनित होगी:-

"सर्वे भवन्तु सुखिन:
सर्वे संतु निरामय।
सर्वे भद्राणि पशन्तु
माँ कश्चित दुख: भाक् भवेत्।।
दुर्जनों सज्जनेम् भुयात
सज्जन: शांति माप्मुयान्।
शांतो मुच्यते वंधेभ्य:
मुक्तश्च अन्यान् विमोचयेत्।।"

तुहिन शुभ्र चटर्जी
लेखाकार

एक बचपन था

एक बचपन था,
कि माँ का आंचल।
कभी बाल संवारना,
कभी आँख का काजल।

भाई- बहन के झगड़े थे,
खेल खिलौनों की लड़ाई थी।
राजा- रानी, गुड्डे- गुड़िया,
ये ही बचपन की कमाई थी।

झूमना होता था बागों में,
खेल-कूद का ही काम था।
थक हार कर घर को लौटना,
घर का खाना और आराम था।

कभी गिल्ली- डंडा, कभी रस्सी कूदना,
पतंग की डोरी थामे, कभी आकाश नापना।
बह चले, उड़ चले दो छोटी आँखों में,
तैरता एक निहाल सपना।
पढ़ना- लिखना सब करना था,

कभी डाक्टर, कभी इंजीनियर बनना था।
माँ का सपना, पिता का कर्त्तव्य,
वर्तमान संभालते हुए भविष्य बनाना था।

फिर शुरू हुआ मुहाने का सफर,
बचपन धीरे- धीरे गया गुज़र।
अब थी बड़े होने की बारी,
इस संसार से जूझने की तैयारी।

अब जो बचपन छूट रहा था,
हँसता जीवन रूठ रहा था।
एक नया ढलान था आगे,
बचपन जवानी के पीछे भागे।

कि कोई ले चले हमें,
वापस बचपन की गलियों में।
जीवन बोझिल हो रहा है,
भागा - भागी के थपेड़ों में।

एक बचपन था,
कि माँ का आँचल।
कभी बाल संवारना,
कभी आँख का काजल।

प्रियंका संजीव सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

प्लास्टिक पर प्रतिबंध

1 जुलाई 2022 से शुरू हुए एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक (एस.यू.पी.) उत्पादों पर राष्ट्रव्यापी प्रतिबंध दो दशक के लंबे प्रयास के बाद आया है। पहला प्रयास 1999 में पतले पॉलीथीन बैग पर प्रतिबंध के साथ किया गया था। तब से एस.यू.पी. को खत्म करने के लिए तीन राष्ट्रीय और कई राज्य कानून बनाए गए हैं। जबकि हर एक प्रतिबंध पिछले की तुलना में अधिक कठोर रहा है, फिर भी पिछले 23 वर्षों में हम पतले पॉलीथिन बैग सहित एक भी एस.यू०पी० उत्पादों को समाप्त करने में असमर्थ रहे हैं।

तो आखिर प्रतिबंध प्रभावकारी क्यों नहीं हुए? इसका कारण लागू करने की विधि नहीं है। इसके कुछ मौलिक, तकनीकी, सामाजिक और आर्थिक कारण हैं। :

- बाजार में विकल्पों की कमी के कारण एस.यू.पी व्यापक रूप से प्रयोग किए जाते हैं क्योंकि वे सस्ते और सुविधाजनक होते हैं। यदि समान किफायती और सुविधाजनक विकल्प उपलब्ध हो तो बाजार पूरी तरह से बदल जाएगा।
- यह बदलाव आसान नहीं है। वर्तमान में देश में खपत होने वाले प्लास्टिक का लगभग 1/3 हिस्सा एस.यू.पी. का है। दुर्भाग्य से इतनी मात्रा में एस.यू.पी का विकल्प उपलब्ध नहीं है, क्योंकि सरकार वैकल्पिक उद्योग को बढ़ावा देने में विफल रही है।
- एस.यू.पी कारखानों में कार्यरत लाखों श्रमिकों के लिए रोजगार का कोई विकल्प प्रदान नहीं किया गया है, इन सबका नतीजा यह है कि बाजार प्रतिबंध के लिए तैयार नहीं है और उपभोक्ता सुविधा का त्याग करने को तैयार नहीं है।

तो हम किस तरह के विकल्प खोज रहे हैं? तथ्य यह है कि केवल एस.यू.पी पर प्रतिबंध लगाना और अन्य सामग्रियों से बने एकल उपयोग उत्पादों पर स्विच करना समाधान नहीं है। अधिकांश प्रयोगों से पता चलता है कि ज्यादातर पर्यावरणीय समस्याएं उत्पादों की एकल उपयोग प्रकृति के कारण होती हैं, न कि उस सामग्री के कारण जिनसे वे बनाई जाती है। यहां इस बिंदु के कुछ उदाहरण है----

- प्रयोगों से पता चलता है कि एक बार इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक बैग की अपेक्षा पेपर शॉपिंग बैग का कम से कम 4-8 बार उपयोग किया जाना चाहिए।
- मिट्टी का कुल्हड़ चाय परोसने के लिए रोज़मर्रा में इस्तेमाल होने वाले अरबों प्लास्टिक के प्लास्टिक कपों का विकल्प नहीं हो सकता इससे हमारी उपजाऊ मिट्टी समाप्त हो जाएगी।
- एस.यू.पी. को बायोडिग्रेडेबल एस.यू.पी. के साथ बदलने से माइक्रोप्लास्टिक्स की समस्या समाप्त नहीं होगी जो आजकल हमारे खाद्य शृंखला और रक्तप्रवाह में पाए जा रहे हैं।

इसलिए एस.यू.पी. की समस्या का समाधान एक ऐसा उद्योग बनाने से होगा जो एकल उपयोग उत्पादों को बहु-उपयोग में बदल दे जिससे की एक चक्रीय अर्थव्यवस्था (circular economy) का सृजन होगा। विनिर्माण उद्योग और सेवा उद्योग को एयरलाइन उद्योग से लेकर फेरीवालों तक सभी प्रकार के उपभोक्ताओं को बहुउपयोगी उत्पादों के इस्तेमाल का बढ़ावा देना होगा और इसकी आपूर्ति करनी होगी। सरकार को इसमें निवेश करना होगा और इसे नीतिगत समर्थन देना होगा। पर्यावरण मंत्रालय की नीति को वित्त और उद्योग से संबंधित मंत्रालयों की आर्थिक और औद्योगिक नीति का पूरक होना चाहिए। इसके बिना पर्यावरण नीति का विफल होना तय है जैसा कि पिछले सभी एस.यू.पी. प्रतिबंधों के मामले में हुआ है और आगे भी ऐसा ही होगा।

अंशु बाला
लेखाकार

हमारे कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ।

भक्ति की शक्ति

इस्कॉन मंदिर तथा इस संस्था से लगभग सभी परिचित होंगे। भारत के प्रायः सभी नगरों में भगवान श्री कृष्ण के भव्य मंदिरों का निर्माण इस्कॉन द्वारा कराया गया है। केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के अधिकांश देशों में इस्कॉन नामक संस्था सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। इस संस्था ने वैष्णव परंपरा को सुदृढ़ किया है तथा विदेशों में भी वैष्णव भक्ति परंपरा का खूब प्रचार प्रसार किया है। इस्कॉन नामक इस विशाल संस्था के संस्थापक थे श्री प्रभुपाद। उन्हें उनके अनुयायी आदर से स्वामी श्रील भक्तिवेदांत प्रभुपाद के नाम से संबोधित करते हैं। इस लेख में हम श्रील प्रभुपाद की भक्ति भावना, धर्म प्रचारक के रूप में उनकी महत्ता तथा वेदांत वैष्णव दर्शन से पूरे विश्व को परिचय कराने के संकल्प के साथ-साथ उनके दृढ़ निश्चय, हार न मानने की प्रवृत्ति तथा कठोर संघर्ष की संक्षेप में चर्चा करेंगे।

भक्ति आंदोलन में बंगाल की अनन्य भूमिका रही है। मध्यकाल में श्री चैतन्य महाप्रभु ने गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय की स्थापना कर श्री कृष्ण संकीर्तन का खूब प्रचार किया। आधुनिक काल में वैष्णव भक्ति परंपरा को श्री प्रभुपाद ने नई दिशा दी। जिस महती कार्य का शुभारंभ श्री चैतन्य ने किया था प्रभुपाद ने उसे अगले सोपान तक पहुंचाने का कार्य किया है।

श्रील प्रभुपाद का वास्तविक नाम अभय चरण दे था। उनके पिता कपड़ा के व्यवसायी थे। उनका परिवार कोलकाता के हैरिसन रोड जो अब महात्मा गांधी रोड के नाम से जाना जाता है वहां रहता था। उनका परिवार प्रारंभ से ही वैष्णव था। उन्होंने स्कॉटिश चर्च कॉलेज में पढ़ाई की, यह वही कॉलेज है जहाँ कभी नेताजी सुभाष चंद्र बोस पढ़ा करते थे। बहरहाल, अभय चरण दे अपनी कॉलेज की डिग्री नहीं ले पाए। वे स्वदेशी आंदोलन से प्रेरित होकर बीच में ही पढ़ाई छोड़ दी। कुछ दिनों के बाद पिता के कहने पर उन्होंने एक स्वदेशी दवा कंपनी में नौकरी कर ली।

नौकरी के सिलसिले में उन्हें प्रयागराज (इलाहाबाद), लखनऊ, झांसी आदि शहरों में जाना पड़ता था। नौकरी में वे खासे जम गए थे। उन्होंने विवाह किया उनकी संताने हुई। एक आम मध्यम वर्गीय परिवार की तरह ही उनका जीवन सुख में कट रहा था। परंतु सांसारिक जीवन में होकर भी अध्यात्म में उनकी गहरी आस्था थी। वैष्णव परिवार के होने के कारण मांस मछली से दूर ही रहते थे।

अभय चरण अक्सर गौड़ीय मठ जाते थे। वहाँ उनका भक्ति सिद्धांत ठाकुर सरस्वती से मिलना हुआ। एक दिन गौड़ीय मठ के साधु ने उनसे कहा - 'तुम शिक्षित हो, युवा हो, तथा समर्थ हो। तुम श्री चैतन्य महाप्रभु की वाणी का प्रचार पूरे विश्व में क्यों नहीं करते?'

यह लगभग 1920 के दशक का प्रसंग है। तब हमारा देश पराधीन था। सभी देशवासी विकट समस्याओं से जूझ रहे थे। ऐसे में चैतन्य महाप्रभु के उपदेश भला कौन सुनेगा! एक गुलाम देश के नागरिक की बातों को विदेशी क्यों महत्व देंगे! अभय चरण द्वंद में थे। स्थिति प्रतिकूल थी पर गौड़ीय मठ के साधु की बात वे भूल नहीं सके।

समय बीतने के साथ धर्म के प्रति उनका रुझान बढ़ने लगा। अभय चरण दे ने निश्चय किया कि वे सांसारिक जीवन का त्याग कर आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करेंगे। उन्होंने सन्यास ग्रहण किया और घर परिवार त्याग कर दिल्ली चले गए। उनका उद्देश्य था श्री कृष्ण के उपदेश तथा चैतन्य महाप्रभु की वाणी का प्रचार प्रसार। दिल्ली जाकर बड़ी मुश्किल से उन्होंने नि:शुल्क किसी धर्मशाला में ठहरने का प्रबंध किया। तब उनकी उम्र करीब 56-57 वर्ष थी। इस उम्र में भी उनकी सक्रियता एवं लक्ष्य सिद्धि के लिए संघर्ष किसी युवा से कम नहीं था। इन्हें घर से कोई आर्थिक सहायता नहीं मिलती थी। वे दिल्ली में 'बैक टू गॉड हेड' नामक एक अंग्रेजी दैनिक पत्रिका प्रकाशित करने लगे। इस पत्रिका के वे एकमात्र लेखक, संपादक, प्रूफ रीडर तथा विक्रेता थे। वे अपनी पत्रिकाओं का बंडल लेकर किसी चौक-चौराहे में खड़े हो जाते थे और राहगीरों से खरीदने का अनुरोध करते थे। पत्रिका बिके या न बिके उन्होंने प्रकाशन बंद नहीं किया। न ही हिम्मत हारी। गीता का अंग्रेजी अनुवाद तथा टीका लिखकर एवं पत्रिका का प्रकाशन कर इस जिद्दी वृद्ध ने दिल्ली में 15 वर्ष गुजार दिए।

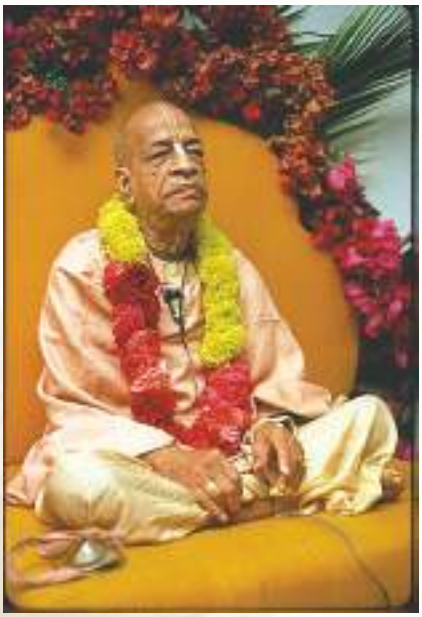

एक बार अभय चरण दे को लगा कि वेदांत दर्शन का प्रचार उन्हें पाश्चात्य देशों में करना चाहिए। तब उन्होंने निश्चय किया कि वे संयुक्त राज्य अमेरिका जाकर वेदांत दर्शन का प्रचार-प्रसार करेंगे। यह निर्णय जितना अनूठा था वैसा ही चुनौतीपूर्ण था। श्री दे के पास विदेश जाने योग्य कोई

साधन नहीं था ना तो उनके पास धन था ना ही अमेरिका में कोई अपना था। तब उनकी आयु करीब 70 साल थी। एक चीज जो असाध्य को साध्य कर सकती है वह है उनका मनोबल। उनमें आत्मविश्वास तथा दृढ़ संकल्प कूट-कूट कर भरा था इसी आत्मविश्वास के सहारे वे सीढ़ी दर सीढ़ी आगे बढ़ते गए।

वे अक्सर वृंदावन आते-जाते रहते थे। वृंदावन के एक व्यसायी का पुत्र पेंसिलवेनिया में रहता था। उनकी मदद से उन्हें वीजा प्राप्त हो सका। पासपोर्ट की व्यवस्था उन्होंने किसी प्रकार कर लिया। अब सबसे बड़ी चुनौती थी, जाने का खर्च। वे सीधे चले गए मुंबई। मुंबई में सुमति मोरारजी नामक एक प्रसिद्ध शिपिंग कारोबारी महिला थी। एक बार उस भद्र महिला ने अभय चरण दे को गीता अनुवाद के प्रकाशन में आर्थिक मदद की थी। अभय चरण ने उस महिला से धर्म प्रचार के लिए उनके अमेरिका जाने में मदद करने का अनुरोध किया। श्रीमती मोरारजी उनका प्रस्ताव सुनकर दंग रह गई। उन्होंने खूब समझाया कि वे अमेरिका ना जाए। कम से कम अपने उम्र का ख्याल करें। अमेरिका में भयंकर ठंड पड़ती है वहाँ उनकी देखभाल करने वाला भी कोई नहीं होगा। पर सत्तर वर्षीय वयोवृद्ध अपनी जिद पर अड़ा रहा। अंततः श्रीमती मोरारजी ने उनके टिकट का प्रबंध कर दिया।

अमेरिका के ब्रुकलिन पोर्ट पर जहाज ने जब लंगर डाला तो सभी अमेरिकी एक विचित्र मनुष्य को देखकर अवाक रह गए। गेरुआ धोती और फतुआ पहने, कपाल पर तिलक लगाए, गले में कंठी माला पहने, हाथों में जप माला की थैली लिए, पावों में सफेद सस्ते रबड़ के जूते पहने अभय चरण दे वाकई विचित्र लग रहे थे। उनके पास एक सूटकेस था, जो उनके द्वारा लिखित पुस्तकों से भरा पड़ा था। जेब ने मात्र 8 डॉलर थे। इन्हीं सामान्य संसाधनों के साथ वे अमेरिका में धर्म प्रचार करने आए थे!

अमेरिका में वे पहले जा पहुंचे वृंदावन के व्यवसायी के पुत्र गोपाल के पास। पेंसिलवेनिया के बटलर नामक स्थान रहने का पहला ठिकाना बना। अभय चरण अपना भोजन स्वयं पकाते थे। निरामिष साग-सब्जी व दाल पका कर अन्य लोगों को भी खिलाते थे। अमेरिकियों ने ऐसा भोजन कभी नहीं किया था। वे साधारण वैष्णव भोजन खाकर तृप्त हो जाते। गोपाल की पत्नी भी अमेरिकी थीं। वह भी उनके पकाए भोजन की मुरीद हो गई। उनका मिलनसार स्वभाव, शांत चित्त एवं स्वार्थहीन व्यक्तित्व सभी को बरबस अपनी ओर आकृष्ट करता था।

कुछ दिनों के प्रवास के बाद उन्हें गोपाल पर आश्रित रहना अच्छा नहीं लगा। वे वेनियर चले गए वहाँ राममूर्ति मिश्र नामक एक भारतीय ने उनके रहने की व्यवस्था कर दिया। वे घूम-घूम कर चैतन्य महाप्रभु की सीख का प्रचार करते, सुबह-शाम करताल बजाकर संकीर्तन करते और स्वयं निरामिष खाना पका कर खाते और यथासंभव दूसरों को भी खिलाते। तब तक उनका नाम श्रील अभयचरणारविंद भक्तिवेदांत स्वामी हो गया था। आगे चलकर वे प्रभुपाद के नाम से लोकप्रिय हुए।

प्रभुपाद किसी के आश्रय पर कब तक रहते। उन्होंने एक छोटा सा कमरा किराए पर लिया। अपनी लिखी पुस्तकों को बेचकर उन्हें कुछ डॉलर मिल जाते थे। धीरे-धीरे उनकी लोकप्रियता बढ़ी। उनके निःस्वार्थ भक्ति भावना, उनकी सादगी, सद्चरित्र तथा उनकी तेजोमय वाणी से लोग खींचे चले आते थे।

उस समय अमेरिकी युवक-युवतियां हिप्पी संस्कृति की चपेट में थे। इन भटके हुए युवाओं को एक सही दिशा की तलाश थी। प्रभुपाद का हरिनाम संकीर्तन उन्हें उपयुक्त लगा। वे भी प्रभुपाद के साथ शामिल होकर हरे कृष्णा हरे राम कीर्तन करने लगे। प्रभुपाद के संपर्क में आकर उन हिप्पियों के चरित्र और व्यवहार में चमत्कारी परिवर्तन आने लगा। वे प्रभुपाद द्वारा पकाए निरामिष भोजन करते तथा नशा-व्यसन से दूर रहते।

इस दौरान प्रभुपाद के एक कमरे के घर में चोरी हो गयी। उनके पास विशेष कुछ था भी नहीं। एक पुराना टेप रिकॉर्डर और एक टूटा टाइप राइटर था, जो चोरी हो गई। प्रभुपाद उस स्थान का त्याग कर बाउरी में आकर रहने लगे।

बाउरी में उन्हें किसी भक्त ने अपना परित्यक्त अपार्टमेंट रहने को दिया था, पर शर्त यह थी कि उन्हें डेविड नामक एक व्यक्ति के साथ साझे में रहना था। प्रभुपाद के पास पैसे थे नहीं, अतः वे उस अपार्टमेंट में रहने लगे।

बाउरी का वह इलाका बेहद बदनांम था। वहाँ चोरी-राहजनी, लूट पाट जैसी घटनाएं बेहद आम थीं। नशेड़ी गलियों में भटकते, फुटपाथ पर बेसुध पड़े रहते। यहाँ तक कि प्रभुपाद का रूममेट डेविड भी ड्रग्स लेता था। इतने भयावह माहौल में भी प्रभुपाद विचलित नहीं हुए। वे निडर होकर उस अपार्टमेंट में रहने लगे। उन्हें अपने गंदे परिवेश से कोई शिकायत नहीं थी। वे अपने कमरे को स्वयं साफ करते, धूप-दीप जलाते और सुबह-शाम कीर्तन करते।

धीरे-धीरे यहाँ भी उनके भक्त जुटने लगे। प्रभुपाद सड़क पर टहलने निकलते तो सबका हाल-चाल पूछते। सड़क के जुआरी, शराबी और गुंडों से भी मंद-मंद मुस्कुराकर बात करते। उन्हें अपार्टमेंट में आकर शाम की कीर्तन और गीता प्रवचन सुनने के लिए आमंत्रित करते। यह प्रभुपाद के सौम्य व्यक्तित्व का करिश्मा था कि उन्हें कोई तंग नहीं करता था। परंतु एक दिन उनके रूममेट डेविड घोर नशे में धुत होकर उनपर जानलेवा हमला कर दिया। उन्होंने उसे शांत करने का बहुत प्रयास किया। पर डेविड के सिर पर मानों खून सवार था। अंततः प्रभुपाद को आत्मरक्षा के लिए उस अपार्टमेंट को छोड़कर निकलना पड़ा। उन्होंने अपना सारा सामान उसी अपार्टमेंट में ही छोड़ दिया और कभी उन्हें लेने वापस नहीं गए।

प्रभुपाद एक बार फिर बेघर हो गए। अनजान एक देश, भिन्न भाषा, भिन्न संस्कृति, भिन्न रुचि के लोग, जेब में एक ढ़ेला भी नहीं, सत्तर साल की उम्र! कोई और होता तो कदाचित हार मान लेता। स्वदेश लौटने की सोचता। पर प्रभुपाद अपने धुन के पक्के थे। उन्होंने वेदांत दर्शन के प्रचार का जो संकल्प लिया था, उसपर अडिग थे।

उन्होंने अपने कुछ भक्तों से संपर्क किया। माइकल ग्रांट नामक एक शख्स ने सेकंड एवेन्यू में खाली पड़े एक दुकान में उनके रहने की व्यवस्था कर दी। किराए के पैसों का जुगाड़ भक्तों ने चंदा कर इकट्ठा किया। प्रभुपाद ने निश्चय किया कि वे वहीं कृष्ण भावनामृत संघ की स्थापना करेंगे। यह आश्चर्य की बात है कि सेकंड एवेन्यू के किराए के दुकान में प्रतिष्ठित हुआ- इस्कॉन, इंटरनेशनल सोसाइटी फ़ॉर कृष्णा कांशस्नेस। यहीं प्रभुपाद कीर्तन करते, भक्तों में कृष्ण दर्शन की व्याख्या करते, निरामिष प्रसाद वितरण करते।

उनके आश्रम में शुचिता का कठोर पालन किया जाता था। उनके अधिकांश भक्त अमेरिकी युवा थे। इस्कॉन में शराब, सिगरेट तो दूर की बात थी, वे चाय या कॉफी तक नहीं पी सकते थे। आश्चर्यजनक रूप से अमेरिकी इन कठोर अनुशासन के बावजूद इस्कॉन के जुड़ रहे थे। धीरे धीरे इस्कॉन की शाखाएँ अन्यत्र खुलने लगीं। उनके भक्तों की संख्या भी बढ़ने लगीं।

वर्तमान समय में इस्कॉन एक बड़ी धार्मिक संस्था है। दुनिया के कई देशों में इसकी कई शाखाएँ हैं। परंतु इस विशाल उपलब्धि के पीछे एक सत्तर वर्षीय वृद्ध का अदम्य साहस, दूरदर्शिता, निष्ठा, लगन और असीम परिश्रम छिपा है। इस लेख का उद्देश्य यह संदेश देना है कि किसी व्यक्ति में यदि सच्ची लगन, धैर्य एवं दृढ़ संकल्प हो तो वह आसाध्य कार्य को भी संभव कर सकता है। आध्यात्मिक चेतना से आंतरिक ओजस्विता का विकास होता है, जो कि प्रेरक शक्ति बनकर लक्ष्य प्राप्ति में सहायता करती है।

सुस्मिता सरकार
वरिष्ठ लेखाकार

ऐसा किसने सोचा था ....?

ऊंची शिक्षा, ऊंचा जॉब, ऊंची आकांक्षा, ऊंचा पैकेज, उम्दा रहन-सहन एवं मशीनी जिंदगी कहीं आपके दाम्पत्य जीवन को खराब तो नहीं कर रहे हैं।

समय ने बड़ी तेजी से करवट ली है। बेटों से ज्यादा बेटियाँ विभिन्न क्षेत्रों में सफलता के नए-नए आयाम स्थापित कर रही हैं। उम्मीदों से कहीं अधिक एवं ऊंची उपलब्धियां और इसे पाने में सहयोग करते हुए प्रत्येक माता-पिता अपना तन-मन-धन सब सहर्ष समर्पित कर रहे हैं। बेटियाँ अपनी सही उम्र एवं समय में उस मुकाम को प्राप्त करने हेतु आतुर रहती हैं। माता-पिता को अपनी बेटी में उसका स्वर्णिम भविष्य दिखता है और बेटियों को ऊंची जॉब/ ऊंचा पैकेज। जो हो रहा है वह प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है और बेटी का अरमान। यह होना भी चाहिए। पढ़ाई और जॉब से कोई आपत्ति नहीं।

मुख्य समस्या उसके बाद ही शुरू होती है। ऊंची जॉब और ऊंचा पैकेज मिलते-मिलते उम्र लगभग 27- 28 की हो ही जाती है। इस समय बेटियों को इच्छा होती है कुछ दिन और अविवाहित रहकर पैकेज का सुख भोगने की। जो पढ़ाई में खर्च हुआ उसे वापस प्राप्त करने का हवाला देते हुए अपने माता-पिता से 2 साल और अविवाहित रहने की गुजारिश करती है। उस समय माता-पिता बेटियों की बात मान ही लेते हैं। 2 साल बाद उम्र

लगभग 30 की हो जाती है। यही वह उम्र होती है जो दिल-दिमाग एवं शरीर से परिपक्वता हासिल कर लेती है। उसे अपने हर निर्णय सटीक लगने लगते हैं।

अब शुरू होती है वर की खोजबीन और होता है मंगल विवाह। इसी वर की खोजबीन में लगभग 2 वर्ष और बीत जाते हैं क्योंकि लड़की से ऊंचा पैकेज प्राप्त करने वाले की खोज जो करना होता है। अब उनकी उम्र लगभग 32 की हो जाती है। इस स्टेज पर कई लड़कियां अपना चयनित लड़का माता-पिता के समक्ष प्रस्तावित कर देती हैं। चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, संप्रदाय का हो या फिर शाकाहारी हो या मांसाहारी बस पैकेज थोड़ा ऊंचा हो और माता-पिता चाहे-अनचाहे उसकी खुशी को देखते हुए दबे मन स्वीकृति भी दे देते हैं। यहाँ तक कि उसके अंतर्जातीय प्रस्ताव को भी अभिभावकगण सहर्ष सहमति देते हुए गर्व से कहते हैं "अब तो सब जगह चल रहा है। सब लोग तो कर ही रहे हैं।" सम्पन्न वर्ग में तो बड़ी संख्या में ऐसा चलन प्रचलित हो गया है। चर्चाएँ तो खूब होती हैं पर उंगली भी लोग कम ही उठाते हैं। विवाह के एक-दो साल के बाद चर्चाएँ भी खत्म हो जाती हैं।

यहाँ हम सभी बेटियों की बात नहीं कर रहे हैं। पर आजकल बड़ी संख्या में बेटियों की विवाह के कुछ वर्षों में ही मतभेद-मनभेद की स्थिति बनने लगती है। पति-पत्नी के ऊंचे-नीचे पैकेज वाली नौकरी की टाइमिंग, वित्तीय प्रबंधन, निजी ज़िंदगी में मामूली दखल भी दाम्पत्य जीवन में दरार पैदा करने के लिए पर्याप्त होते हैं। कुछ-कुछ बेटियों के जीवन में वह होता है जिसकी कल्पना मात्र से ही मन विचलित हो जाता है। उस समय बेटियों के मन से प्यार-मोहब्बत एवं पैकेज का भूत उतर जाता है। दाम्पत्य जीवन समाप्त हो जाता है। माता-पिता के पास भी अब

घुट-घुट के मरने के सिवाय कोई चारा नहीं रह जाता है।

वास्तव में यह कोई आलोचना नहीं है। यह समाज में कई परिवारों की वास्तविक सच्चाई है, जो भोगता है वही जानता है बाकि सफल लोग तो उनका मज़ाक उड़ाते हैं। कुछ लोग तो बोलेंगे केवल लड़कियों की ही बात क्यों, लड़के के बारे में कुछ क्यों नहीं?

यहाँ लड़कियों की आलोचना नहीं बल्कि अनेक परिवारों की पीड़ा है। यह अपनी आत्मा के टुकड़े की फिक्र है। लड़कों की अपेक्षा लड़कियों को ही अत्यधिक पीड़ा भोगनी पड़ती है। कृपया सभी इस विषय पर चिंतन-मनन करें, बच्चियों को हर भले बुरे पक्ष से अवगत कराएं एवं संस्कारी बनाएँ।

आनंद कुमार पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

दिव्यांगता अभिशाप नहीं है

मनुष्य इस संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। वह अपने सामर्थ्य तथा शक्ति के सदुपयोग से दूसरे के आभाव को दूर कर सकता है। वह अपने मानवीय गुणों तथा परोपकारी वृति के माध्यम से दूसरों में आत्मविश्वास जगाकर उनकी हीनभावना को दूरकर सकता है। आज के युग में मनुष्य में अस्मिता, आत्मसम्मान आदि का भाव जग उठा है। दिव्यांग लोग हमारे समाज का अभिन्न अंग हैं जिनकी यथासंभव मदद करना हमारा परम कर्तव्य है।

ऐसी धारणा है कि दिव्यांग शरीर प्रकृति या ईश्वर का अभिशाप है, पृथ्वी पर बोझ है एवं परिवार पर बोझ है। दिव्यांग व्यक्ति वह है जो जन्म से किसी न किसी शारीरिक त्रुटि से ग्रस्त है जैसे :- गूंगा, बहरा, लूला-लंगड़ा आदि। कुछ दिव्यांग व्यक्ति में शारीरिक संबंधी कोई विकार नहीं होते हैं परंतु उनमें मानसिक विकृति पाई जाती है। उनमें बौद्धिक विकास की कमी होती है। उनको भी दिव्यांग श्रेणी में रखा गया है।

प्राचीन काल में दिव्यांगता को ईश्वर का कोप या प्रकृति का उपहास समझा जाता था तथा उसके प्रति लोग दया का भाव रखते थे। ऐसे लोग दया, करुणा, सहानुभूति आदि के पात्र समझे जाते थे। समाज के ऐसे व्यवहार से वह जीता तो था परंतु भावुक एवं संवेदनशील नजरों से घिरा हुआ रहता था। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि उनके प्रति दया, करुणा आदि भाव के साथ सर्वोपरि उन्हें आत्मनिर्भर बनाने पर बल देना चाहिए।

दिव्यांगता के अनेक कारण हैं। कोई जन्म से दिव्यांग होता है तो कोई किसी दुर्घटना के परिणामस्वरूप हो जाता है। कुछ दिव्यांगता का इलाज संभव हो पाता है तथा कुछ ला-इलाज होता है। परंतु इस तरह के इलाज में प्राप्त साधन और धन की बड़ी आवश्यकता होती है। जो दिव्यांग निर्धन परिवार से होता है तो उसके इलाज में काफी परेशानियाँ आती हैं। ऐसे परिवारों से नाता रखने वाले दिव्यांग लोगों की मदद सरकार तथा आम जनता को खुलकर करनी चाहिए। लोग प्रायः ऐसे परिस्थिति में शिष्टाचार, दया, करुणा आदि का भाव प्रकट करते हैं। परंतु वास्तविकता कुछ और ही है।

दिव्यांगता के कई स्तर होते हैं :- (i) पूर्ण दिव्यांगता (ii) अर्ध दिव्यांगता (iii) सामान्य दिव्यांगता। दिव्यांगता की संख्या में सबसे अधिक बढ़ोतरी अनेक प्रकार की दुर्घटनाओं के कारण होती हैं। इसके अलावा रोग और युद्ध भी दिव्यांगता में बढ़ोतरी करते हैं। अंधविश्वास भी इसमें बढ़ोतरी करता है। किसी को अगर चेचक हुआ है तो लोग उसे कहता हैं कि माता आई हैं और इलाज न होने की स्थिति में कभी-कभी आँखों की रौशनी भी चली जाती है। दिव्यांग व्यक्ति मानसिक एवं शारीरिक पीड़ा सहता है। समाज में उसे बोझ समझ कर उसका तिरस्कार करते हैं, उसकी उपेक्षा कर उससे घृणा करने लगते हैं जिसकी वजह से उसका जीवन नरकतुल्य बन जाता है।

जन्मजात दिव्यांगता को रोकने के लिए गर्भवती माँ को पोषण युक्त आहार मिलना चाहिए और जन्म के पश्चात भी बच्चों को अच्छी देखभाल करनी चाहिए।

दिव्यांगता का समाधान:- यह सार्वभौमिक सत्य है कि दिव्यांगता का समाधान तभी संभव हो पाएगा जब इसके प्रति हम अपना पूरा दृष्टिकोण केन्द्रित रखेंगे और समाज में उस हीनभावना को नष्ट करना होगा साथ ही उनमें आत्मसम्मान जागृत करना होगा ताकि वे सामान्य जीवन जीने लगे। उन्हें नाना-प्रकार का प्रशिक्षण देना चाहिए जैसे:- मशीन चलाना, टाइप करना आदि। इससे वे आत्म-निर्भर बन सकेंगे।

दिव्यांग दिवस:- संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 1992 में यह घोषणा की गयी कि प्रत्येक वर्ष 03 दिसम्बर को अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस मनाया जाएगा। इसका उद्देश्य है कि समाज के सभी क्षेत्र में दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों को बढ़ावा देना तथा राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन में दिव्यांग लोगों के सामने आने वाली परेशानियों के समाधान हेतु जागरूकता फैलाना। विश्व के 08 प्रतिशत लोग दिव्यांग है। दिव्यांगता एक अभिशाप नहीं है क्योंकि शारीरिक कमियों को यदि प्रेरणा बना ली जाय तो व्यक्तित्व के विकास के लिए लाभकारी सिद्ध होगा। उनका मज़ाक उड़ाना, उन्हें कमजोर समझना एवं उनको दूसरों पर आश्रित समझना एक बड़ी भूल है और यूं कहें तो एक गैर जिम्मेदाराना व्यवहार है।

जैसा कि हम जानते हैं कि विश्व पैरालम्पिक खेलों में झुंझुनं जिले के दिव्यांग खिलाड़ी संदीप कुमार तथा जयपुर के सुंदर गुर्जर ने भाला फेंक प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीत कर भारत का मान बढ़ाया। मासुदूर रहमान वैद्य जो पैर से दिव्यांग होने के बावजूद भी अपनी दृढ़ता के साथ इंग्लिश चैनल को तैर कर पार किया। सरकार ने दिव्यान्गों के लिए कई नीतियाँ बनाई है। उन्हें सरकारी नौकरियों, अस्पताल, रेल, बस आदि में आरक्षण प्राप्त है। केंद्र सरकार ने इन्हें सरकारी नौकरियों में आरक्षण के साथ साथ 10 वर्ष की अधिकतम आयु में भी छूट प्रदान किया है।

दिव्यांग के प्रति हमारा दृष्टिकोण :- दिव्यांग को दान की नहीं अपितु सामान्य व्यक्तियों के भांति अवसर एवं अधिकार चाहिए। हमें साहस, धैर्य और उत्साह के साथ दिव्यांग लोगों के लिए अवसर के दरवाजे खुले रखने चाहिए ताकि वे सफलता की ओर अग्रसर हो सकें। इस संबंध में हेलेन किलर का यह कथन सटीक बैठता है " एक दरवाजा बंद होता है तो दूसरा खुल जाता है लेकिन हम प्रायः देर तक बंद दरवाजे को देखते रह जाते हैं और जो दरवाजा खुला है उसे हम देखते ही नहीं।

यही बात दिव्यान्गों के लिए भी लागू होते हैं। दिव्यांग होने के बावजूद भी एक सामान्य जीवनयापन करना आश्चर्यजनक नहीं होना चाहिए। वे अध्यापक, डॉक्टर, इंजीनियर, कलाकार आदि के रूप में एक सम्मानजनक जीवन जी सकते हैं। इस क्षेत्र में अनेकों दिव्यांग ऐसे पदों पर विराजमान हैं साथ ही उन सभी के लिए एक उदाहरण स्वरूप हैं। कोलकाता के साखेर बाजार में स्थित 'Voice of World' संस्था सैंकड़ों दिव्यांग बच्चों का देखभाल करता है। वहाँ पर उन्हें कई प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाता है। उन्हें पढ़ाई, खेल-कूद, नृत्य, संगीत आदि का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। उन्हें प्रार्थना, व्यायाम, योग आदि प्रतिदिन कराया जाता है। वहाँ दृष्टि बाधित लड़कियां बड़ी बारीकी से सब्जियाँ काटती हैं जिसे देख कर विश्वास नहीं होता है। यहाँ पर हस्तकला भी सिखाया जाता है। बच्चों द्वारा बनाई गई हस्त सामग्री अत्यंत ही मनमोहक होते हैं।

यही दिव्यांग बच्चे वर्ष 2019 में बानार्वत पहाड़ पर चढ़े जो लगभग 5000 फीट ऊंचा है। इनमें से आँखों से दिव्यांग बच्चे गंगोत्री होते हुए रुदगोयड़ा पहाड़ पर चढ़ाई किए जो लगभग 3000 फीट ऊंचा है। वे वहाँ पहुँच कर अपने संस्था का झण्डा फहराकर अपनी पहचान बनाए थे। लिखते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि उस यात्रा में, मैं उन सभी के साथ शामिल थी। इस संस्था के संस्थापक हैं श्रीमती गार्गी गुप्ता जिन्होनें अपना सारा जीवन इन्हीं बच्चों के विकास एवं देखभाल में व्यतीत किया है। किसी भी दिव्यांग के लिए इस संस्था के दरवाजे सदैव खुले हैं। कभी-कभी इस संस्था के बच्चों को भर-पेट खाना नसीब नहीं होता फिर भी वे शिकायत नहीं करते। यह एक सरकारी संस्था नहीं है। इस वजह से यहाँ अनुदान उतना नहीं मिलता जितने की आवश्यकता है। लेकिन बहुत सारे लोग ऐसे हैं जो यहाँ अनुदान देते हैं। कोई सुबह का नाश्ता का व्यवस्था कर देता है तो कोई दोपहर के खाने का।

वर्ष 2018 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा श्रीमती गार्गी गुप्ता को नारीशक्ति के सम्मान से सम्मानित किया गया था। हम सभी को दिव्यांग को प्रोत्साहित करना चाहिए और साथ-ही साथ आत्मनिर्भर बनाने के लिए जितना हो सके सहायता प्रदान करना चाहिए।

अतः दिव्यांग होना कोई अभिशाप नहीं है बल्कि आत्मनिर्भरता की एक पहचान है। समाज में ऐसे लोगों को हर प्रकार से सहायता करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

लिपिका दास
सहायक लेखा अधिकारी

एक जेनेरेशन की आवाज़ - के.के

लोकप्रिय गायक कृष्ण कुमार कुन्नथ जो कि श्रोताओं एवं प्रशंसकों के बीच अपने नाम के आद्यक्षर के. के. से प्रसिद्ध थे का हाल ही में निधन हो गया। उनके अक्स्मात् निधन से संगीत जगत को अपूरणीय क्षति पहुंची है। के. के. अपनी युवा आवाज़ तथा लाइव स्टेज परफ़ोर्मेंस के लिए श्रोताओं में विख्यात थे। अपने निधन के कुछ घंटो पहले तक भी वे मंच से अपने गायन के जरिये श्रोताओं को मंत्रमुग्ध ही कर रहे थे। उनकी उम्र 53 वर्ष की थी तथा वे संगीत उद्योग में अपने आखिरी दिनों तक सक्रिय थे।

हम सभी प्रथम बार के. के. की गायकी से तब रूबरू हुए थे जब हम दिल दे चुके सनम का गाना "तड़प तड़प के इस दिल से" म्यूजिक चैनलों पर प्रदर्शित होना शुरू हुआ था। तब के. के. संगीत उद्योग में नए थे तथा यह उनका प्रथम एकल हिट गाना था। इससे पहले उन्होने दक्षिण भारत की फिल्मों में पार्श्वगायन किया था किन्तु उन्हें पहचान इसी गाने से मिली। इससे पहले हिंदी फिल्म माचिस में भी उन्होने एक गीत गाया था परंतु उस गाने में इनके अलावा अन्य जानेमाने गायकों की भी आवाज़ थी। "तड़प तड़प के इस दिल से" गाने के शब्द काफी मार्मिक थे तथा अपने स्वर से उन्होंने इसे जीवंत बना दिया। यह गाना के. के. के कैरियर के लिए ब्रेकआउट सिद्ध हुआ। इसके बाद उन्होने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

प्रसिद्धि मिलने के बाद के. के. ने काफी एल्बमों के जरिये श्रोताओं के बीच अपनी जगह बनाई। इन एल्बमों के गीत युवाओं पर केन्द्रित होते थे जो कि देश की आबादी का अधिकांश हिस्सा है। उनके बहुचर्चित एल्बम "पल" के गीत जैसे 'आप की दुआ', 'यारों', 'पल' आदि गाने आज भी लोगों के जेहन में तरोताजा है। दोस्ती तथा इससे जुड़ी हुई खुशी एवं ग़म को समेटे हुए ये गीत आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने कि तब थे। इन गानों को सुन हम नाइंटीज़ किड्स को नोस्टेल्जिया का एहसास होता है। इसके अलावा झंकार बीट्स का रूमानी गीत 'तू आशिक़ी है' भी उनके गाये शुरुआती गीतों में उल्लेखनीय है।

के. के. अपने समकालीन गायकों से काफी अलग थे। हालांकि उन्हें अपने समकालीन गायकों जितने पुरस्कार नहीं मिले पर इनके गाये गीत लोगों की ज़ुबान पर अधिक चढ़ते थे। के. के. ने गायकी की कोई विधिवत शिक्षा नहीं ली थी, शायद यही कारण था कि इन्हें अक्सर उन गीतों को अपना स्वर देने का अवसर मिलता था जिन्हें गुनगुनाना अपेक्षाकृत सरल होता था। अपनी युवा आवाज़ तथा दिल को छू लेने वाले गीतों के चयन से उन्होनें युवाओं के बीच अपनी एक अलग जगह बनाई थी। के. के. की आवाज़ अत्यंत ही विशिष्ट थी जिसकी अनुकृति करना काफी मुश्किल है।

बाद के वर्षों में के. के. द्वारा गाये गीत यथा 'क्या मुझे प्यार है', आँखों में तेरी' 'खुदा जाने' 'लबों को, 'तू ही मेरी शब है', 'अलविदा', 'फिरता रहूँ दरबदर' इत्यादि गाने 90 के दशक में पैदा हुए संगीत प्रेमियों के प्लेलिस्ट में अक्सर पाये जाते है। इनके कैरियर की शुरुआत तथा अंत के काल को नाइंटीज़ किड्स के उनके किशोर से परिपक्व होने से जोड़कर भी देखा जा सकता है। इससे ये कहा जा सकता है कि उनकी आवाज़ एक जेनेरेशन की आवाज़ थी। हमने कैसेट के जरिए उनके गाने सुनने शुरू किए, सीडीज़ का ज़माना आया तो उसपर भी सुना और अब यूट्यूब एवं म्यूजिक ऐप्स पर भी सुन रहे हैं।

जैसी सदाबहार के. के. की आवाज़ थी उससे ये कहा जा सकता है कि अभी उनके अंदर काफी गायकी बाकी थी। परंतु उनके अक्स्मात् निधन से हम न जाने कितने गीतों से वंचित रह जाएंगे जिन्हे वे अपने सुरों से सजा सकते थे। परंतु के. के. के गाने सभी के म्यूजिक प्लेलिस्ट मे मौजूद हैं। अपने गीतों के जरिये वे हमारे जेहन में हमेशा जीवंत रहेंगे।

अतुल कुमार
लेखाकार

भारतीय समाज में वर्ण एवं जाति की अवधारणा

भारतीय समाज के वर्ण, जाति, गोत्र तथा कुल को इकाईयों में बाँटा जा सकता है। वर्ण कई जातियों में बँटा होता है, जो कि एक अंतर्विवाही समूह है। वैसे तो जाति की उत्पति वर्ण से ही हुई मानी जाती है, जिसका आरंभिक उल्लेख हमें ऋग्वैदिक काल में मिलता है। इस काल में तीन वर्णों का वर्णन है- ब्राह्मण, क्षत्रिय एंव विष्। इस वर्ण पद्धति में जातियों का कोई वर्णन हमें नहीं मिलता है, जिनसे इन वर्णों का निर्माण होता है।

जाति शब्द का प्रयोग सातवीं शताब्दी में समाज के स्तरीकृत विभाजन के रूप में मिलता है। जाति के लिए प्रयोग होने वाला अंग्रेजी शब्द caste है, जो कि पुर्तगाली भाषा के शब्द casta से बना है जिसका अर्थ होता है - वंश, नस्ल आदि। जाति को पारिभाषित करना एक कठिन कार्य है। विभिन्न विद्वानों ने इसे पारिभाषित करने का प्रयास किया है।

एक विद्वान के अनुसार - जाति वह अंतर्विवाही संघ है जो धार्मिक प्रतिष्ठा से पारिभाषित होती है एवं जिसका व्यवसाय से पारंपरिक संबंध होता है।

तो दूसरे ने जाति को परिवारों का ऐसा संकलन कहा है जो अपनी उत्पत्ति एक समान श्रोत से मानता है, अपनी जाति के सदस्यों से ही विवाह करता है, जिसका एक पारंपरिक पेशा होता है, जो एक समान नाम रखता है और इस रूप में एक समरूपी समूह का निर्माण करता है। इसका एक पंचायत एंव एक पद होता है।

एक अन्य विद्वान के अनुसार जाति एक वंशानुगत अंतर्विवाही एवं सामान्यतः स्थानीय समूह है जिसका व्यवसाय से पारंपरिक संबंध होता है एवं इसका स्थानीय स्तरीकरण में विशेष स्थान होता है वर्ण एक खुली व्यवस्था है, कोई भी व्यक्ति इसमें प्रवेश पा सकता है, जबकि जाति एक बंद व्यवस्था है, जिसका आधार जन्म है एवं यह वंशानुगत होता है।

इन परिभाषाओं से यह ज्ञात होता है कि जाति स्वयं में एक स्वतंत्र ईकाई है। इसकी अपनी विलक्षण सांस्कृतिक, व्यवसायिक एवं धार्मिक पहचान होती है एवं इसके द्वारा सदस्य की प्रतिष्ठा निर्धारित की जाती है। प्रत्येक जाति की अपनी परंपराएँ, रीति-रिवाज, आदतें, सामाजिक एवं धार्मिक विश्वास एवं नियम, आहार संबंधी नियम, विवाह संबंधी नियम स्थानीय एवं सार्वभौमिक देवता, पितर इत्यादि संस्कृतिगत बातें दृष्टिगत होती हैं जो उन्हें अन्य जातियों से पृथक करती है। एक जाति के सदस्यों में आत्मीयता पायी जाती है अर्थात वे जातिगत भावना से क्रमशः एक दूसरे से जुड़े होते हैं एवं आपसी एकता, भाईचारा का परिचय देते हैं। कई बार कुछ जाति समूहों को एक ही नाम से जाना जाता है एवं असली जाति की पहचान क्षेत्र के आधार पर एवं उपनामों के आधार पर की जाती है। जैसे ब्राह्मण भी अपने को क्षेत्रीय आधार पर कई भागों में विमेल करते है - जैसे मैथिल ब्राह्मण, कान्युकब्ज ब्राह्मण, तमिल ब्राह्मण आदि।

स्तरीकरण हिन्दू जाति पद्दति की सबसे प्रधान विशेषता है। ऋग्वैदिक काल में भारतीय समाज चार समूहों में विभक्त था - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र । इनके इस विभाजन का आधार श्रम एवं व्यवसाय था। श्रम एवं व्यवसाय के विभाजन का एक अन्य मुख्य आधार था - शुद्धता । एक अन्य तथ्य पर अगर हम गौर करें तो हम पाते हैं कि प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे से प्रकृति द्वारा प्रदत्त मानसिक एवं शारीरिक गुणों - बौद्धिक क्षमता, प्रतिभा, व्यक्तित्व तथा अन्य स्वभाविक गुणों में भिन्नता प्रदर्शित करता है। इस प्रकार की व्यक्तिगत मित्रता से सामाजिक समूहों का निर्माण हो जाता है। अतः प्रत्येक समूह एक खास व्यवसाय को अपनाता है। ब्राह्मण, जो कि ज्ञानार्जन करने में बौद्धिक रूप से ज्यादा संपन्न थे, इस अर्जित ज्ञान को बाँटने (अध्यापन के द्वारा), पूजा-पाठ कराने, याज्ञिक एवं आनुष्ठानिक कर्मकांडों को संपादित करने का कार्य करते थे। ये कार्य शुद्ध, पवित्र एवं कुलीन माने जाते हैं।

वे सात्विक भोजन करते थे, जिसमें फल-फूल, कंद-मूल, दूध व खीर, शाकाहारी भोजन आदि शामिल हैं। माँसाहार से वे बचते थे, क्योंकि ऐसा करने से वे तामसिक गुणों यथा काम, क्रोध, आलस का शिकार हो सकते थे। साथ ही वे उन लोगों एवं वस्तुओं से भी परिहार करते थे जिससे उनकी पवित्रता भंग हो सकती थी। इस प्रकार समाज का एक वर्ग ब्राह्मण हुआ - जो ज्ञानी, दार्शनिक, नीतिज्ञ, अध्यापक, चिंतक, पुरोहित थे। वे ईश्वर से लोगों का संबंध स्थापित कराने वाले के रूप में स्थापित हुए। समाज में उनका स्थान प्रथम एवं उच्च था। वे राजकीय शासकों के मुख्य सलाहकार थे। राजा उनकी सलाह एवं आज्ञा से ही कोई कार्य करता था।

दूसरा वर्ग क्षत्रिय था। शारीरिक सामर्थ्य के आधार पर उन्हें राजकीय कार्य सौंपे गए। उनका काम था शासन चलाना एवं अपने भू-भाग की शत्रुओं से रक्षा करना। समाज में इन्हें द्वितीय स्थान प्राप्त था। ये कार्य भी कुलीन माने जाते हैं। क्षत्रिय लोग राजसिक भोजन किया करते थे।

तृतीय स्थान पर वैश्य थे। वे वाणिज्य, व्यापार इत्यादि कार्यों से जुड़े थे। इन्हें भी समाज में सम्मानीय स्थान प्राप्त था।

समाज में सबसे निम्न स्तर पर शूद्र थे। मानवीय अप-पदार्थ, कूड़ा-करकट, मल-मूत्र साफ करना, झाड़ू लगाना, कपड़े (गंदे एवं अपवित्र) साफ करना, मृत जंतुओं व पशु-पक्षियों को हटाना, चमड़े उतारना इत्यादि उनके कार्य थे। चूंकि उनका पेशा इन मानवीय, पाश्विक एवं समाज के अपशिष्ट पदार्थों के परिष्करण से संबंधित था, अतः इन अस्वच्छ एवं अपवित्र कार्यों को करने की वजह से वे निकृष्ट समझे जाते थे। समाज उन्हें हेय दृष्टि से देखता था और उनका स्पर्श या उनकी छाया का स्पर्श करने से भी वे बचते थे। समाज में उनकी अलग बस्ती होती थी और लोग उन्हें अछूत समझकर उनका सामाजिक बहिष्कार करते थे। उन्हें सार्वजनिक तालाबों, कुओं इत्यादि से पानी भरने की मनाही थी।

जाति व्यवस्था अत्यंत अनुकूलनशील व्यवस्था है। यह एक गत्यात्मक संस्था है। वृहत्त समाज में परिवर्तन से जाति-व्यवस्था में भी व्यापक बदलाव आए हैं। जाति व्यवस्था पर अनेक आंतरिक एवं बाह्य कारकों का घात-प्रतिघात हुआ है, लेकिन इसके बावजूद भारतीय समाज में इसका अस्तित्व बरकरार है। इसने बदली हुई परिस्थितियों के साथ अपने आपको समायोजित किया है।

सामाजिक-आर्थिक सुधार आंदोलन, सामाजिक एवं न्यायिक विधान, पाश्चात्यीकरण, आधुनिक शिक्षा, भूमि-सुधार, पंचायती राज संस्था जैसे कारकों के प्रभाव से जाति-व्यवस्था के सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक पक्ष में बदलाव आया है। सामाजिक जीवन में जाति-व्यवस्था के महत्व में कमी आयी है। रूढ़ता तथा पवित्रता और अपवित्रता की भावना ह्रासोन्मुख है। सामूहिक खान-पान संबंधी निषेध का अब महत्व नहीं रह गया है। अस्पृश्यता की समस्या समाप्तप्रायः है। इस प्रकार जाति का सांस्कृतिक आधार कमजोर हुआ है। इसके साथ जुड़ी श्रम एवं व्यवसाय संबंधी मान्यता भी अब क्षीण होने लगी है। पहले एक बच्चा अपने पिता के पैतृक व्यवसाय को ही अपनाता था। इस प्रकार यदि कोई लोहार, मोची या केवट है तो उसका पुत्र भी अपने पैतृक एवं वंशानुगत पेशे को ही अपनाता था। इस प्रकार प्रत्येक जातिगत समूह अपने खास पेशे एवं श्रम के सिद्धांत से समाज में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए था। यह विभाजन उनके लिए आवश्यक भी था। सभी के अपने-अपने काम बँटे थे, जिससे उत्पादन एवं उपभोग संबंधी एवं अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक सामाजिक व्यवस्था रहती थी, जिससे उन्हें

सुविधा होती थी। यह परस्पर अन्योन्याश्रिता पर आधारित था। परंतु बदले हुए परिदृश्य में जब औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, समाज का लोकतंत्रात्मक स्वरूप, शिक्षा का प्रसार, सामाजिक एवं राजनैतिक आंदोलन आदि आए तो उनके समक्ष अनेक अवसर एवं विकल्प उपलब्ध हो गए। अब एक शिक्षित मोची-पुत्र को यदि अपनी अर्हता के अनुसार सरकारी या निजी क्षेत्र में सेवा का अवसर प्राप्त हो रहा हो, तो वह इसे सहर्ष चुनता है। उनके लिए यह जरूरी नहीं है कि वह अपना पैत्रिक व्यवसाय मोचीगिरि को ही आगे बढ़ाता रहे। इसी प्रकार निम्न जातियाँ जो अपवित्र, मलिन एवं अस्वच्छकर कर्मों में संलग्न थे, उन्होंने भी शिक्षित होकर अपनी जीवन-शैली में सुधार किया, जिससे उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। दूसरी ओर वैसे ब्राहमण जो अब पौरोहित्य कर्म कराते हैं, उन्हे भी सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता। इस प्रकार जाति के साथ जुड़ी व्यवसाय संबंधी सिद्धांत क्षीण हो रहे है। कोई भी जाति कोई भी कार्य करने के लिए स्वतंत्र है।

राजनीतिक दृष्टि से जाति की शक्ति संरचना परिवर्तित हुई है। परंपरागत जातियाँ अपना प्रभुत्व खो रही हैं और उनके स्थान पर निम्न जातियाँ राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने में सक्षम हुई हैं। राजनीति में जाति का प्रयोग किया जा रहा है। जाति का राजनीति में उपयोग वास्तव में 'जाति का राजनीतिकरण' है। पारंपरिक भारतीय समाज में राजनीतिक शक्ति जातियों तक ही सीमित थीं, जिसे 'खाईबंद' जाति की संज्ञा दी जा सकती है। अब 'खाईबंद' जातियों को निम्न जातियों के प्रतिरोधों का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि निम्न जातियों में राजनीतिक चेतना उत्पन्न हो गई है। इन जातियों को उदीयमान जाति की संज्ञा दी जा सकती हैं। भारत में विभिन्न राजनीतिक दलों के द्वारा स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक समर्थन पाने के लिए जातिवाद का सहारा लिया जा रहा है। स्वतंत्र भारत में जातीय -गतिशीलता को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला है। अनेक निम्न जातियाँ अपनी सामाजिक प्रस्थिति को ऊपर उठाने में सक्षम हुई हैं। इनमें स्वसम्मान की भावना विकसित हुई है। निम्न जातियों के लोग अनेक महत्वपूर्ण प्रशासनिक एवं उच्च पदों पर आसीन हुए हैं। वे उच्च जातियों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करने में भी सक्षम हुए हैं।

लेकिन, इन सब परिवर्तनों के बावजूद भारतीय समाज में जाति-व्यवस्था का अस्तित्व समाप्त नहीं हुआ हैं बल्कि यह पूर्व की अपेक्षा और भी अधिक सुदृढ़ हुई है। यह नए स्वरूप में उभरकर सामने आया है। विभिन्न जातीय संगठन दबाव समूह के रूप में सरकार की नीतियों को प्रभावित कर रही हैं। हम अक्सर इस तरह के उदाहरण पाते हैं कि कतिपय जातियाँ आरक्षण का दावा कर रही हैं और कई तो अपनी माँगों को मनवाने में सक्षम भी रहीं हैं। जातिवाद भी अपने चरमोत्कर्ष पर है। एक ओर जहाँ इसका सहारा अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति प्राप्त करने हेतु लिया जाता है वहीं दूसरी ओर इससे जातिगत पूर्वाग्रह, विद्वेश, विभेद, घृणा इत्यादि को भी जन्म दिया है।

राजनीतिक दलों के लोग विभिन्न जातियों का इस्तेमाल 'वोट बैंक' की तरह करते हैं। वे अपने राजनीतिक हित एवं स्वार्थ के लिए पिछड़ी तथा उच्च जातियों के मध्य खाई को और बढ़ाते हैं। जाति पर आधारित संगठन पत्रिकाओं के माध्यम से 'जातिवाद की विचारधारा' को प्रचारित करते हैं। जाति अपने सदस्यों के लिए शक्ति का स्त्रोत रहा है। आधुनिक भारत में जाति एवं राजनीति के बीच सह-संबंध है। कई राजनीतिक पार्टी जातीय आधार पर वोट पाने में आज सफल हो रहे हैं।

पारंपरिक जाति-व्यवस्था विभिन्न जातियों के बीच सहयोग एवं अंतःसंबंधों की भावना पर आधारित थी। इनके बीच ऊर्ध्वाधर सुदृढ़ता पायी जाती थी। वर्तमान में विभिन्न जातियों के बीच सहयोग न होकर प्रतिस्पर्धा, संघर्ष एवं विद्वेष की भावना विद्यमान है। ऊर्ध्वाधर सुदृढ़ता के स्थान पर अब एक ही जाति के सदस्यों के बीच क्षैतिजीय सुदृढ़ता दिखाई देती है। 'अंतःविवाह' का नियम जाति व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। आज भी भारतीय समाज में अधिकांश विवाह अपनी ही जाति के सदस्यों के बीच किए जाते हैं। अंतर्जातीय विवाह की प्रवृत्ति बहुत कम है। यह इस बात का परिचायक है कि विवाह-संबंधों के विनियमन में अभी भी जाति व्यवस्था का महत्व विद्यमान है।

मनीष कुमार महतो

व. अनुवादक

तुम ले आना।

बचपन की चादर में लिपटी,
कुछ याद पुरानी ले आना।
आज़ाद थे सब दस्तूरों से,
बेफिक्र जवानी ले आना।

वो गीत-गजल सब आधे हैं,
जो नाम से तेरे लिक्खें थे।
मिल साथ बैठ हम बाँचेंगे,
तुम प्रेम-कहानी ले आना।

पढ़ पींग-प्रेम जहां सिमटे थे,
बारिश के सिक्त महीने में।
वो मिट्टी की सौंधी खुशबू,
बारिश का पानी ले आना।

जो बड़े अदब से रक्खे थे,
पन्नों में फूल गुलाबों के।
वो दाग-निशानी ले आना,
किताब पुरानी ले आना।

जाड़ों की सर्द सी रातों में,
खत में पैगाम सिमटतें थे।
गजलों-नज़मों-शेरों से रची,
वो खत-कहानी ले आना।

वो इश्क़ अभी भी बाकी है,
वो घाव अभी भी ताज़ा है।
नम आँखों का बहता पानी,
शिकवे वो पुरानी ले आना।

जिस मासूका की गलियों में,
धीरे से आहिस्ता चलते थे।
वो शोख-तब्बसुम अपनी सी,
वो गली पहचानी ले आना।

वो बात जो पूरी हो न सकी।
जज़्बात अधूरी सी जो रही।
जो बात रही दिल की दिल में,
वह बात जुबानी ले आना।

जो निपट-निठल्ले होकर के
जब इश्क़ में मारे-फिरतें थें।
तुम वो मनमानी ले आना,
अल्हड़ शैतानी ले आना।

जब काली-सी इन रातों में
चुप-सा सन्नाटा पसरेगा।
मेहताब निहारेंगें तुझमें।
अंजुम मस्तानी ले आना।

कुन्दन कुमार रविदास
कनिष्ठ अनुवादक

भारत की अजीबो गरीब प्रथायें

हमारा देश भारतवर्ष विभिन्न प्रकार की विविधताओं और संस्कृति से परिपूर्ण राष्ट्र है। हमारी भारतीय संस्कृति 5,000 वर्षों के आसपास दुनिया की सबसे पुरानी संस्कृति है। ऐसा माना जाता है कि हमारी संस्कृति दुनिया की पहली और सर्वोच्च संस्कृति है। हमारे भारत के बारे में एक कहावत है " अनेकता में एकता" जिसका अर्थ है कि हमारा देश एक राष्ट्र है जहाँ विभिन्न धर्म, समुदाय और जनजाति के लोग अपनी-अपनी संस्कृति और परम्पराओं का पालन करते हुए भी आपस में शांति एवं सौहार्द्रपूर्ण आचरण के साथ रहते हैं। भारत के अलग - अलग हिस्सों में मनाए जाने वाले त्योहारों की एक विस्तृत विविधता उसकी समृद्ध संस्कृति और परम्पराओं की एक सही अभिव्यक्ति है। धर्म, कला, बौद्धिक उपलब्धियाँ, या प्रदर्शनकारी कला जैसी संस्कृतियों ने भारत को एक रंगीन, समृद्ध और विविध राष्ट्र बना दिया है। रोम्या राला में कहा है "अगर संसार में कोई एक देश है, जहाँ जीवित मनुष्य के सभी सपनों को उस प्राचीन काल से जगह मिली है, जबसे मनुष्य मे अस्तित्व का सपना प्रारंभ किया है, तो वह भारत है।

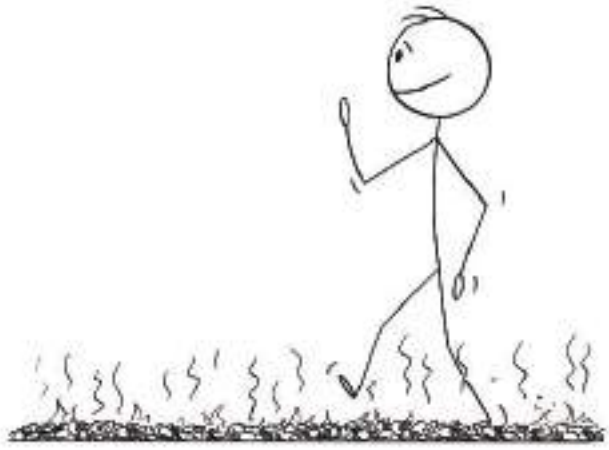

यद्यपि लोग आज आधुनिक हो रहे हैं तथापि नैतिक मूल्यों पर पकड़ रखते हैं और त्योहारों को रीति – रिवाजों के अनुसार मनाते हैं। परन्तु इन रंगीन त्योहारों और जीवंत समारोहों के बीच भारत में कुछ ऐसी प्रथाएँ भी हैं जो असाधारण रूप से अजीब है, जिनमें से कुछ खतरनाक और दर्दनाक है जबकि कुछ मनोरंजन से परिपूर्ण है। लेकिन फिर भी इनका पालन पूरी निष्ठा एवं श्रद्धा से किया जाता है। आस्था के नाम पर भारत में कई अजीबो-गरीब मान्यताएँ हैं जिन्हें सुनकर किसी के भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं जिनमें से कुछ के बारे में, मैं बताना चाहूंगी।

जलते अंगारों पर चलना – हमारे देश का सबसे दक्षिणतम राज्य तमिलनाडु देश के सबसे पढे - लिखे राज्यों में से एक है। यहाँ की साक्षरता दर 80.33% है। इसके बावजूद यहाँ की कुछ मान्यताएँ बहुत ही आश्चर्यजनक एवं दर्दनाक है। यहाँ तिमिथी नामक त्योहार मनाया जाता है जो भारत की सबसे विचित्र परम्पराओं में अपना एक अलग ही स्थान रखती है। इस उत्सव में भक्त हिन्दू देवी द्रौपती अम्मान का सम्मान करने के लिए जलते हुए कोयले पर नंगे पाँव चलते हैं। यही नहीं इस त्योहार में भक्त देवी को प्रसन्न करने के लिए अत्यन्त धीमी गति से चलते है जो वास्तव मे बहुत ही खतरनाक और दर्दनाक है।

पुली काली महोत्सव – भारत का केरल राज्य देश की सबसे विकसित शैक्षणिक प्रणालियों से युक्त है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के सर्वेक्षण के अनुसार भारत में साक्षरता के मामले में केरल सर्वप्रथम स्थान लिए हुआ है। परन्तु 96.2% की साक्षरता दर रखने वाला केरल राज्य भी अंधविश्वास से अछूता नहीं है। यहाँ भी कई त्योहार ऐसे मनाये जाते हैं जो बहुत ही अजीबोगरीब होते हैं। इनमें से पुली काली महोत्सव भी भारत की एक अजीबोगरीब परंपरा के रूप मे जाना जाता है। यह केरल के त्रिशूर जिले में प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है जहाँ प्रशिक्षित कलाकार बाघ के रूप में तैयार होते हैं और सड़कों पर चलते हुए पारंपरिक लोक गीतों पर प्रस्तुति देते हैं। यद्यपि यह कोई खतरनाक परंपरा नहीं है लेकिन फिर भी कुछ हद तक विचित्र और मनोरंजक है।

नरभक्षण और शवभक्षण - हिन्दू धर्म में वाराणसी नगर को अत्यन्त पवित्र नगर माना गया है और इसे अविमुक्त क्षेत्र कहा जाता है। भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में बसी वाराणसी अघोरी बाबाओं का केन्द्र स्थल है। ये अघोरी बाबा मृत व्यक्ति के शरीर के टुकड़े और मांस के लूथड़े खाने के लिए कुख्यात हैं। इनका मानना है कि ऐसा करने से उनके मन से मौत का डर हमेशा के लिए चला जाएगा और इन्हें अमरत्व की प्राप्ति होगी।अमरत्व इसके अलावा इन्हें 'आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति हो जाएगी। हिन्दू मान्यता के मुताबिक पवित्र व्यक्ति, 1 कुवांरी व गर्भवती लड़कियाँ, कुष्ठ रोगी और सर्प-दंश से मृत व्यक्तियों का दाह संस्कार नहीं किया जाता है। इनके शवों को गंगा नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है। ये अधोरी बाबा इन शवों को वहाँ से निकाल कर उनका भक्षण करते हैं।

बच्चों को हवा में फेकना- महाराष्ट्र के सोलापुर और कर्नाटक के संतेश्वर मंदिर में भी एक अजीबोगरीब मान्यता है जो खतरनाक एवं जानलेवा है। आमतौर पर लोग छोटे बच्चों को हवा में उछाल कर खिलाते हैं। परंतु संतेश्वर मन्दिर में बच्चों को ऊपर से नीचे हवा में फेंकना एक परम्परा का हिस्सा है। यहाँ

पिछले 700 सालों से बच्चों को 50 फीट की ऊंचाई से फेंकते हैं और नीचे खड़े लोग बच्चे को चादर से पकड़ लेते हैं। इसके पीछे यह मान्यता है कि ऐसा करने से बच्चे और परिवार को सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

कराहा पूजन- उत्तर प्रदेश में ही वाराणासी और मिर्जापुर के कुछ मंदिरों में 'कराहा पूजन ' की अनोखी परंपरा है। मान्यता है कि यहाँ नवरात्रों में पिता बच्चे को खौलते दूध से स्नान करवाता है और खुद भी करता है। ऐसा करने से उनपर भगवान का आशीर्वाद एवं कृपा प्राप्त होती है।

मुथूमारी अम्मन- कोलकाता से करीब 60 किलोमीटर की दूरी पर बैंडल नामक स्थान पर रोंगटे खड़े कर देने वाला नजारा दिखता है। यहाँ एक देवी की पूजा हेतु लोग हर हद तक जाने का प्रयास करते हैं। उनका मानना है कि यह देवी जिनका नाम मुथूमारी अम्मन है इनके सामने अपने शरीर में छिद्र करवाने से अच्छे स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है एवं घर में समृद्धि आती है।

इसी प्रकार भारत के अन्य विभिन्न राज्यों में ऐसी डरावनी एवं जानलेवा प्रथायें (जिन्हें कुप्रथायें कहना ज्यादा उचित होगा) प्रचलित हैं। जिनके कारण प्रत्येक वर्ष जनहानि होती है। फिर भी लोग आस्था के नाम पर मासूम जानों से खिलवाड़ करने से नहीं चूकते। इससे भी आश्चर्यजनक यह बात है कि ऐसे लोगों में कई प्रतिशत शिक्षित लोग भी होते हैं जो सौभाग्य सुस्वास्थ्य उत्पत्ति हेतु इन प्रथाओं पर आँख मूँद कर विश्वास करते हैं जो अत्यन्त शर्मनाक है।

आरती शर्मा
एम.टी.एस

वोकल फॉर लोकल

वोकल फॉर लोकल यह केवल तीन शब्द नहीं बल्कि यह एक स्वदेशी क्रांति है, जिसके जरिये हम आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

'स्वावलंबन की एक झलक पर है न्योछावर कुबेर का कोष।'

आत्मनिर्भरता की एक झलक पर हमें खजाना प्राप्त होने के साथ साथ व्यापार जगत में भी अव्वल स्थान प्राप्त करा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि हम अपने स्थानीय उत्पादकों पर विश्वास रखें। यह मुहिम मुख्यतः महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए की गई है। इससे भारत में रोजगार के अवसर को बढ़ावा मिलेगा। हमारे देश के वर्तमान प्रधानमंत्री लोगों को इसके प्रति प्रोत्साहित करने के लिए वोकल का मंत्र दिया। उन्होनें 15 अगस्त 2020 को स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर कहा था कि स्वतंत्र भारत की मानसिकता लोकल के लिए वोकल होनी चाहिए। हमें अपने स्थानीय उत्पादों की सराहना करनी चाहिए। अगर हम ऐसा नहीं करते हैं तो हमारे उत्पादों को लोकप्रिय बनाने का अवसर नहीं मिलेगा तथा उन्हें प्रोत्साहन भी नहीं मिल पाएगा।

वोकल फॉर लोकल के द्वारा लोगों को अपने वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहन मिल रहा है जिससे आयातित वस्तुओं के उपयोग को कम किया जा सकेगा। वोकल फॉर लोकल एक आर्थिक विचार है जिसे आत्मसात करके आगे का रास्ता तय किया जा सकता है।

स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान खादी ने पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने में बड़ी भूमिका निभाई थी। आज के समय में यह जरूरी हो गया है कि यह बदलते समय के साथ कदम ताल करे। आजादी के दौरान एक मंत्र था 'खादी फॉर नेशन' परंतु अब देश आजाद है इसलिए आज का मंत्र होना चाहिए 'खादी फॉर फ़ैशन।' यदि इस खादी उत्पाद को बढ़ावा मिलता है तो निश्चित ही इनके कारीगर को लाभ मिल पाएगा। खादी उत्पादों की ऑनलाइन बिक्री स्वदेशी मुहिम को गति प्रदान करती है।

वोकल फॉर लोकल मुख्य रूप से महिलाओं में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना भी है, इससे वे स्वावलंबी बनेगी तथा उन्हें आर्थिक मजबूती मिलेगी।

वोकल फॉर लोकल का मुख्य लक्ष्य केवल स्थानीय वस्तुओं की खरीद के लिए ही प्रोत्साहित नहीं करता बल्कि स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए भी आग्रह करता है। यदि सभी भारतीय लोकल मंत्र को अपनाते हैं तो भारतीय वस्तुएँ आसानी से वैश्विक ब्रांड बन सकती हैं। इसलिए हम सभी को लोकल वस्तुओं का खरीद करना चाहिए तथा इसका प्रचार एवं प्रसार ऑनलाइन के माध्यम जैसे सोशल मीडिया या ऑफलाइन के माध्यम से करनी चाहिए। इस तरह से हमारा देश आत्मनिर्भर बन सकता है।

लॉकडाउन के दौरान वोकल फॉर लोकल की आवश्यकता तब सामने आयी जब परिवहन के सभी साधन रुक गए थे तथा पूरी दुनिया को स्थानीय उत्पादों की महत्ता का एहसास हुआ।

वोकल फॉर लोकल का सकारात्मक प्रभाव तथा दशहरा जैसे त्योहारों के दौरान भी देखा गया। देश के लोगों ने स्थानीय उत्पादों की सराहना की और विदेशी उत्पादों के स्थान पर स्थानीय रूप से बने उत्पादों को खरीदा। दिवाली के अवसर पर प्राप्त अच्छी प्रतिक्रिया से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि इस नई पहल से अन्य त्योहारों या विविध अवसरों पर स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा मिलेगा तथा भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

वर्ष 2022 के रक्षा बजट में, रक्षा पूंजी खरीद बजट का 68 प्रतिशत स्थानीय खरीद के लिए आबंटित किया गया है जिससे भारत की स्थानीय उत्पादों की मांगों में बढ़ोतरी होगा। हाल के ही दिनों में एक बंगलुरु के स्टार्टअप Pravaig Dynamics ने टेस्ला जैसी इलैक्ट्रिक कार बनाई है जिसका नाम Pravaig MK1 (EV) है जो कि टेस्ला से हर लिहाज में बेहतर है, यह भारत की पहली इलैक्ट्रिक कार है। ऐसे और भी कई स्टार्टअप भारत में गति पकड़ी है जिससे भारतीय उत्पाद विश्व स्तर पर प्रसिद्ध हो सकती है।

वोकल फॉर लोकल हम भारतीयों के लिए आज एक मिशन बन गया है क्योंकि इससे भारत आत्मनिर्भर होगा, आयात से ज्यादा निर्यात होगा, रोजगार के मौके बढ़ेंगे, और इससे लोगों में पलायन भी घटेगा, जो देश की सबसे बड़ी समस्या है। इससे सामाजिक संपन्नता बढ़ेगी क्योंकि इससे दिए बनाने वाले से लेकर सरिया बनाने वाले तक के लोगों को फायदा होगा और उसकी आर्थिक स्थिति सुधरेगी। देशी ब्रांड अंतर्राष्ट्रीय होंगे।

हिंदुस्तान बदल रहा है, नए भारत में स्वदेशी का नारा बुलंद हो रहा है। इस अभियान से न केवल देश की आर्थिक स्थिति सुधरेगी बल्कि दुनिया में भारत के व्यापक निर्यातक देश के रूप में उभरेगा।

अनुज साव
एम.टी.एस.

हमारे कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला के समापन पर प्रमाण पत्र वितरण समारोह की झलकियाँ।

पक्षी - जीवन

अक्सर लोगों को आपने यह कहते हुए सुना होगा कि काश! मैं एक पक्षी होता। पक्षियों की भाँति खुले आसमान में उड़ता, पेड़ों पर रहता - तो चलिए.....आज हम पक्षियों के जीवन की कहानी को उनके दृष्टिकोण से देखते है :

नीले आसमान में दोनों पंखों को फैलाये, आसमान को छूने की इच्छा हवाओं से बातें करते हुए अपने मित्रों से आगे निकलने की जिद्द - सब कितना अच्छा था ना। ऐसा लगता था मानो पूरा आसमाँ अपना घर हो जहाँ चाहो, जैसे चाहो उड़ने की आजादी हो न रहने की चिंता और न ही खाने की। किसी भी वृक्ष के किसी भी डाल पर विश्राम करने फल खाने की आजादी, खेत खलिहानों से अन्न के दाने चुगने की स्वतंत्रता। इन सभी पलों को याद करके मन कितना रोमांचित हो उठता है लेकिन वर्तमान परिस्थितियों को देखकर ऐसा लगता है मानो ये सब मेरी कोई कल्पना मात्र हो या कोई मीठा स्वप्न जो नींद से जगते ही समाप्त हो गया हो।

मुझे आज भी याद है जब हमने पहली बार जहाज को आसमान में उड़ते हुए देखा था। बहुत सारे पक्षियों को ऐसा लगा जैसे कोई विचित्र -सी पक्षी हमारे बीच जा गई हो। सभी उसे देखने के लिए उसके पीछे-पीछे उड़ने लगे। वे जैसे ही उसके पास गए, पंखे के सम्पर्क में आने से उनकी मौत हो गई। ऐसे अनेकों पक्षियों की मौत जहाज की वजह से होने लगी। मानवों ने इस घटना को पक्षियों का जहाज पर किया गया आक्रमण कहा। धीरे-धीरे पक्षियों में भय का माहौल बन गया। अब वे पहले की भाँति स्वतंत्र रूप से उड़ नहीं पाते थे। ज्यादातर समय पक्षी अपने घोंसले से या पेड़ों पर ही रहने लगे सिर्फ दानी- पानी के लिए ही वे कुछ समय पश्चात बाहर निकलते।

कुछ समय पश्चात मानवों ने उद्योग-धंधों के विकास के नाम पर वनों की अंधाधुंध कटाई शुरू कर दी। इससे न जाने कितने पक्षियों के घर तबाह हो गए, कितने चूजों (छोटे पक्षी जो उड़ना नहीं सीखें हो) की मौत टूटे हुए डालों से दबकर ही गई। कितने अंडे ऐसे होगें, जिनसे चूजे बाहर भी न आए हो, सब मौत के घाट उतार दिए गए। पक्षियों के रोने - चिल्लाने और कराहने की आवाज से पूरा वन गूंजने लगा। किसी ने अपना पति को खोया तो किसी ने अपने बच्चे किसी ने अपनी माँ खोया तो किसी ने अपना पिता। कुछ तो ऐसे भी थे जो पूरा परिवार एक ही साथ समाप्त हो गए। इधर- उधर घूम-घूम कर चीख कर चिल्ला कर सारे पक्षी अपने परिवार वालों को ढूँढ़ रहे थे। नहीं मिलने पर वे जोर-जोर से रोने लगते।

काश! मनुष्य हमारे उस दर्द उस पीड़ा को समझ पाता तो शायद ऐसा ना होता जिसे आज वे पक्षियों का कोलाहल कह रहे हैं, काश ! वे उस दर्द को महसूस कर पाते। काश ! जिस प्रकार मानव न्याय पाने के लिए न्यायालय का सहारा लेता है, उसी प्रकार यदि पक्षियों के लिए भी ऐसी व्यवस्था होती तो आज उन सभी दोषियों को इतने सारे पक्षियों की हत्या के जुर्म में फांसी की सजा सुनायी जाती। धीरे-धीरे वनों की संख्या और भी कम होती गई अब वे वृक्षों के अलावा दूसरी- दूसरी जगहों जैसे ऊँची इमारतों, कार्यालयों, मंदिरों आदि पर भी घोंसला बनाने लगें। जैसे ही मनुष्यों की नजर उसपर पड़ती है तब वे उससे उसके अंडे, चूजे निकाल ले भागते। बेचारी ! पक्षी अपने अंडे, बच्चे को ना पाकर इधर-उधर भागती, उसकी तलाश करती और ना मिलने पर फूट-फूटकर रोती। इसके अलावा और कर भी क्या सकते है?

मनुष्य इतने पर भी संतुष्ट ना हुआ। अब उसने पक्षियों को पकड़ने के लिए नए तरकीब अपनाने शुरू किए जैसे दाने डालना, पानी की कटोरी रखना आदि। गर्मी के दिनों में जब पक्षी भूख -प्यास के मारे तड़प रहे होते तब वे जैसे ही दाना-पानी देखते उसकी ओर तेजी से जाते। जैसे ही वे दाना चुगना शुरू करते वे कैद कर लिए जाते। कैद होने पर उनके नाजुक पर (पंख) पिंजड़े की तिलियों से टकराकर टूट जाते। उस पिंजड़े से निकलने का वह निरंतर प्रयास करती परन्तु असफल हो जाती। उस पिंजड़े में पक्षी कितना घुट घुट कर जिती है कितने कष्ट सहती है, क्या मनुष्य उसे कभी महसूस कर पाएगा?

खुले आसमान में उड़ने वाले, पेड़ों की टहनियों पर खेलने, अन्न फल खाने वाले, बहती नदी व तालाब का जल पीने वाले पक्षियों को लोग पिंजड़ों में देखना ज्यादा पसंद करने लगे हैं। जिस दिन वे हमारी पीड़ा को समझ जाएंगे, वे ऐसा करने से पहले हजार बार सोचेंगे।

आज सुबह से मेरा मन बहुत ही व्याकुल हो उठा है। ऐसा लग रहा है, मानो कोई अनहोनी होने वाली हो। जब से मैंने कुछ लोगों को इस पेड़ के ईर्द- गिर्द देखा है मेरी धड़कनें तेज हो गई है। मेरे घोंसले में दो छोटे-छोटे बच्चे हैं जिनकी अभी आँखे भी नहीं खुली है। मेरे पति जो कल सुबह से ही भोजन की तलाश में गए थे, अभी तक वापस नहीं लौटे हैं। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा कि मैं क्या करूँ? पता नहीं, वे कैसे होंगे? वे सुरक्षित हैं भी या नहीं, यदि में बच्चों को यहीं छोड़कर उनकी तलाश में जाती हूँ तो खतरे से खाली नहीं होगा। मैं इन दोनों बच्चों को एक - साथ लेकर उड़ भी नहीं सकती हे ईश्वर! ये क्या, पेड़ की कटाई करने के लिए लोग आ गए हैं अब मै क्या करूँ, हे ईश्वर ! हमारी रक्षा करें। हे प्रभु ! हमारी सहायता करें। आज फिर से कितने ही मासूमों की जीवन का अंत हो जाएगा भगवन्! हमारी सहायता करें। जैसे-जैसे आरी की धार पेड़ को काट रही है ऐसा लग रहा है मानो मेरे निःसहाय शरीर से उसी प्रकार आत्मा निकल रही हो।

अलिषा मौर्या

एम.टी.एस.

मानव समाज पर मोबाइल का प्रभाव

मैं ट्रेन से सफर कर रहा था और मेरे सामने के बर्थ पर ही एक परिवार था, जिसमें दो छोटे बच्चे तथा एक दंपति थे। सभी मोबाइल में व्यस्त थे। काफी देर तक किसी ने एक दूसरे से बात भी नहीं की थी। मैंने सोचा - वर्तमान समय मे सभी मोबाइल के चंगुल में बुरी तरह से फंसे हुए हैं।

आधुनिकता के इस युग ने बहुत सारी टैक्नोलॉजी को जन्म दिया। जिसने लोगों के काम को बहुत आसान कर दिया। विज्ञान दिन-प्रतिदिन तरक्की कर रहा है। नए नए आविष्कार हो रहे हैं। जहां पुराने जमाने में कोई भी काम करने में बहुत समय लगता था वहीं वर्तमान युग में प्रत्येक काम को कम समय में करने की मशीन आ गई है। आधुनिकता की इस भागदौड़ में अब लोगों के पास समय ही नहीं है कि किसी भी काम को ज्यादा देर तक करें। जैसे पुराने जमाने में लोगों को एक-दूसरे के पास संदेश पहुँचाने के लिए चिट्ठी लिखी जाती थी। जिसका जवाब आते जाते काफी समय लग जाता था। लोग डाकिया का इंतजार करते या पोस्ट ऑफिस के चक्कर लगाते थे। अभी मोबाइल ने यह आसान कर दिया है। विज्ञान ने तरक्की की और मोबाइल से आने से पहले टेलिफोन का आविष्कार हुआ इसने लोगों के काम को आसान कर दिया। धीर धीरे प्रत्येक घर में लोग टेलिफोन लगवाने लगे। अब वे आराम से एक -दूसरे के बारे में अपने संबंधी से बात कर लेते थे, पर टेलिफोन वायरलेस नहीं था। फिर धीरे-धीरे विज्ञान ने और तरक्की की और मोबाइल फोन आया जिसने पूरे समाज में एक क्रांति ला दी, मानो लोग अंधेरे से प्रकाश की ओर बढ़ गए थे। वर्तमान समय में यह प्रत्येक व्यक्ति के पास है इसने लोगों के काम को आसान कर दिया। किसी भी चीज की जानकारी लोग मोबाइल पर सर्च करके ढूंढ लेते हैं। घर-बाहर कहीं भी बात कर सकते हैं। ऑफिस का काम हो या बैंक का काम हो सब कुछ आसान हो गया है। बच्चे अब पढ़ाई भी मोबाइल से करने लगे हैं।

कोरोना काल में हाई-फ़ाई तकनीक, लैपटाप, मोबाइल तथा कम्प्यूटर ने बच्चों की पढ़ाई ऑनलाइन कराने तथा लोगों को घर से काम करने में बहुत मदद की। जिस तरह से इसने हमारे जीवन को सरल बनाया है इंसान इसका गुलाम बनता जा रहा है। वह अपने जीवन की कल्पना अब बिना मोबाइल के कर भी नहीं सकता। उसकी दिनचर्या में सुबह जागने से रात्रि सोने तक मोबाइल एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। जहां मोबाइल ने बहुत सारे काम आसान कर दिये इसके फायदे भी हैं, पर इन फ़ायदों के पीछे छिपा नुकसान किसी ने नहीं सोचा होगा। लोगों को मोबाइल की आदत इस कदर पड़ी है कि थोड़ी देर अलग रहे तो उसको बेचैनी होने लगती है। आँखों से ओझल होते ही मन बेचैन होने लगता है। बिना काम के भी मोबाइल में फ़ेसबुक, व्हाट्सएप, यूट्यूब आदि को देखते रहना मानव समाज की नित्य क्रिया बन गई है। इस कारण व्यक्ति अपने समाज तथा परिवार से कटता जा रहा है। पति-पत्नी के बीच तलाक के मामले भी मोबाइल के प्रयोग के कारण बढ़ गए हैं। व्यक्ति मोबाइल में ही लगा रहता है। मोबाइल देखते-देखते सोने की आदत भी लोगों में शुमार हो गई है।

मोबाइल फोन का सबसे ज्यादा प्रभाव युवा पीढ़ी तथा बच्चों पर पड़ा है। युवा पीढ़ी सोशल मीडिया पर लगे रहते हैं, अपना विडियो भी बनाते रहते हैं। कोई भी प्रश्न का हल गूगल सर्च से ही ढूंढते हैं। मोबाइल ने युवा पीढ़ी को खोखला बना दिया है। बच्चे जो अभी एक दम मासूम हैं उनके हाथों में भी आज मोबाइल ने जगह बना ली है। पुराने जमाने में बच्चे बाहर खेलते, खाना भी माँ, दादी, बहन आदि के हाथों से खा लिया करते थे। अब आज के समय में बच्चे खेलेंगे भी तो मोबाइल पर और खाना भी खाएँगे तो मोबाइल सामने होना चाहिए। इसका प्रभाव बच्चों के स्वास्थ्य पर भी पड़ा है। कम उम्र में ही आँखों पर चश्मा लगना, मोटापा आदि ने बच्चों को जकड़ लिया है। मोबाइल के कारण बच्चे अपना समय माँ-पिता से ज्यादा मोबाइल पर ही देने लगे हैं। मोबाइल में नाना-प्रकार के कॉमिक, हॉरर, ड्रामा, संगीत आदि बच्चों को अपनी तरह ही बना दिया है। बच्चे भी अपने फेवरेट पात्र का नकल करने लगते हैं। अगर हाथ में मोबाइल नहीं हुआ तो बच्चे चिल्लाने लगते हैं। उनमें चिड़चिड़ापन की शिकायत भी होने लगी है।

इंसान मोबाइल पर बात करते हुए गाड़ी चलाते हैं तो कभी सड़क पार करते हैं जिसके कारण वे दुर्घटना के शिकार हो जाते हैं। वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या लोगों का डिप्रेशन में जाना हो गया है। मोबाइल के अत्यधिक उपयोग के कारण तनाव और डिप्रेशन जैसी समस्या होने लगती है।

मोबाइल का उपयोग करना आज के समय में उपयोगिता से ज्यादा समय का दुरुपयोग हो गया है। मोबाइल में व्यस्त रहने के कारण हम जरूरी कामों को भी भूल जाते हैं और उन्हें समय पर नहीं कर पाते हैं। सत्य ही कहा गया है आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है। इसके लाभ भी हैं और नुकसान भी। अगर सही तरीके से इसका उपयोग

किया जाए तो यह बहुत लाभकारी सिद्ध होगा जिसे वरदान कहना गलत नहीं होगा। इसके अत्यधिक प्रयोग से बचना चाहिए। समय मूल्यवान होता है उसी को मन में रख कर इसका प्रयोग करना चाहिए। साथ ही बच्चों को ग्राउंड में खेलने के लिए प्रेरित करना चाहिए। वे इससे जितना दूर रहेंगे उनका स्वास्थ्य उतना ही बेहतर होगा।

जब मेरा स्टेशन आया तब मैं नीचे उतरा अपने चारों ओर वही माहौल पाया। सभी अपने-अपने मोबाइल में कुछ न कुछ कर रहे हैं। निकट भविष्य में इसके दुरुपयोग से बचने का प्रयास करना होगा वरना मानव के जीवन में ऐसा बीमारी उत्पन्न होगा जिसका इलाज संभव नहीं हो पाएगा। मानव जीवन में अनुशासन और एकाग्रता ही इसका एक मात्र समाधान प्रतीत हो रहा है।

सूरज किशोर

डी.ई.ओ.

यात्रा वृतांत

मेरे मन में कितने दिनों से उस जगह को देखने की लालसा हो रही थी जो नदी, पहाड़, झरना और सुन्दर वादियों से परिपूर्ण है। ऐसा लगा जैसे भगवान ने मेरे मन की सुन ली। एक दिन मेरे भाई का फोन आया कि मुझे किसी काम से उत्तराखण्ड (देवभूमि) जाना है, जहाँ मेरा भाई कार्यरत है। मेरा मन बहुत खुश हुआ और तरह-तरह के विचार मन में आने लगे क्योंकि मैं पहली बार घूमने के लिए ऐसे स्थान पर जाने वाला था।

मैं यहीं से योजना बनाने लगा कि मुझे वहाँ जाकर काम खत्म होते ही कहाँ- कहाँ जाना है और कौन-कौन सी जगह देखनी है। मेरे मन में प्रसन्नता की लहर उठ रही थी क्योंकि मेरे सपने पूरे होने वाले थे।

मुझे उत्तराखण्ड के लिए 15.04.2022 को प्रस्थान करना था। मुझे जानकारी थी कि उधर मौसम अभी ठंड है। मैंने कुछ गर्म कपड़े भी रख लिए। मेरी गाड़ी रात को 10:00 बजे अपराह्न में थी। मैं घर से ही खाना खाकर रेलवे स्टेशन चला गया। ट्रेन प्लैटफ़ार्म पर आ चुकी थी। मैं नीचे वाली शायिका पर बैठा था। और बाकी यात्रियों की बातों से पता चल रहा था कि अधिकांश लोग घूमने के मकसद से ही उत्तराखण्ड जा रहे थे। जो यात्री लंबा सफर तय करके आ रहे थे वो अपना-अपना भोजन करने की तैयारी कर रहे थे। मैं अपने शायिका पर सो गया। अगले दिन मैं हरिद्वार स्टेशन शाम 4:00 बजे अपराह्न को पहुंचा। गाड़ी अपने मूल समय से एक घंटे देरी से पहुँची। स्टेशन के बाहर निकलते ही मुझे ये आभास हुआ कि ये जगह मनमोहक और शान्तिप्रिय है। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था।

मेरे भाई के मुताबिक स्टेशन से बाहर आकर मुझे राज्य नगर निगम की बस पकड़कर गोचर को जाना था, जहाँ मेरा भाई कार्यरत है। मैं बस में बैठा और कुछ देर जाने के बाद मुझे असहज लगने लगा क्योंकि रास्ते बहुत घुमावदार थे। इसलिए क्योंकि उत्तराखण्ड राज्य पहाड़ों पर बसा है, लेकिन ये असहजता मेरे घूमने के जूनून के आगे कुछ नहीं था। मैं रात को 10:00 बजे अपने गन्तव्य स्थान जहाँ मेरा भाई कार्यरत है वहाँ पहुंचा। मैं एकदम थका हुआ महसूस कर रहा था। इससे पहले मैं कभी भी ऐसे रास्तों में सफर नहीं किया था। ये मेरे लिए रोमांचक था। मैंने भाई को सफर के बारे में बताया और फिर हमलोग खाना - खाने लगे। मैं जल्दी ही सो गया क्योंकि सुबह काम खत्म करके मुझे घूमने जाना था।

मैं सड़क के किनारे बस का इंतजार कर रहा था। सुबह के 6:00 बज रहे थे। एक पुलिस वाले ने मुझे बताया कि बस कुछ देर पहले निकल चुकी है, और अगली बस आधे घंटे बाद आयेगी। मैं थोड़ा दुःखी हुआ क्योंकि वहाँ से मुझे ऋषिकेश के लिए जाना था जो कि 100 km दूरी पर था। परन्तु भगवान की महिमा और एक निजी वाहन ने मुझे ने लिफ्ट दे दिया और मैं अपने गंतव्य स्थान पर जल्दी ही पहुँच गया।

ऋषिकेश जाकर सबसे पहले मैं त्रिवेणी घाट गया। वहाँ का दृश्य अत्यंत भक्तिमय और शान्तिपूर्ण था। लोग गंगा-स्नान कर रहे थे। मैं भी भक्ति-भाव और भजन करने लगा क्योंकि कोई ऐसा करने से खुद को रोक नहीं पायेगा। मैं भी स्नान किया और कहीं ठहरने का आश्रय देखने लगा। थोड़ी दूर जाकर मुझे रहने का स्थान मिला। मैं वहाँ भोजन करके आराम किया और शाम को मैं गंगा आरती देखने गया। शाम 5:00 बजे मैं घाट की तरफ निकला, आरती प्रारंभ ही होने वाली थी। मैं भी भक्तों के बीच जाकर खड़ा हो गया। आरती शुरू हुई और सभी लोग भक्ति के सागर में डूब गये। गंगा घाट पर इतना ऊर्जावान और स्वच्छ वातावरण था कि कोई वहाँ से आना नहीं चाहेगा।

अगले दिन मुझे मसूरी के लिए निकलना था। सुबह जल्दी उठ कर मैं तैयार हुआ क्योंकि बस सुबह 6:00 बजे ही थी। मैं जब बस से मसूरी जा रहा था, रास्ते में नदी, पहाड़ को देखकर ऐसा आभास हो रहा था जैसे मानो सच में मैं अपनी आँखों से स्वर्ग देख रहा हूँ। मैं करीब 8:00 बजे मसूरी पहुंचा।

सबसे पहले मैंने रूकने का स्थान पता किया और अपना सामान वहाँ रखकर कुछ नाश्ता करके घूमने निकल पड़ा। मसूरी वाकई पहाड़ों की रानी है, जैसा मैनें किताबों में पढ़ा था। हर तरफ सुन्दर और आकर्षक पहाड़ थे। सबसे पहले मैं 'केंप्टी फॉल' गया जो मसूरी की प्रसिद्ध जगहों में से एक है। मैं रास्ते में एन्जॉय करते जा रहा था। रास्ता थोड़ा घुमावदार था परन्तु बहुत ही सुन्दर पेड़ों से घिरा हुआ था। मैं एक घंटा बाद अपने गन्तव्य पर पहुंचा। वहाँ लोग फॉल को एंजॉय कर रहे थे। छोटे बच्चे, बूढ़े और जवान सब उस फॉल में मस्ती कर रहे थे। मैं भी उत्साहित था और नहाने के लिए फॉल के पास एक छोटा सा जगह था जहाँ से होकर फॉल का पानी नीचे आ रहा था वहीं नहाने लगा।

फिर मैं 'तान हिल' के लिए प्रस्थान किया जो कि मसूरी के पास एक ऊँची चोटी है। बहुत ज्यादा ऊपर होने के कारण लोग रस्सी के मार्ग का प्रयोग करते हैं जिसका किराया 180 रुपया प्रति व्यक्ति है। 'तान हिल' से बहुत ही मनमोहन दृश्य दिखाई देता है। वहाँ से उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून साफ-साफ दिखाई देता है। वहाँ लोग बहुत सारे खेल प्रतियोगिताओं का भी आनंद लेते हैं। बहुत सारे लोग वहाँ खाना पीना भी पकाकर खाते हैं और मस्ती करते हैं।

अब मुझे वहाँ से एक प्रसिद्ध हिल-स्टेशन 'धनौल्टी' जाना था जो कि मसूरी से 33 किलोमीटर की दूरी पर है। मैने इस जगह के बारे में काफी सुना था इसलिए और भी उत्साहित हो रहा था।

मसूरी से बस पकड़कर करीब एक घंटे बाद मैं 'धनौल्टी' पहुंचा। वहाँ सबसे प्रसिद्ध 'सुरखण्डा देवी' का मंदिर है जो किं 9000 फीट ऊपर स्थित हैं। पहले तो लगा कि इतनी ऊँचाई पर जाना बहुत कठिन है परंतु और भी लोगों को जाता देखकर मैं भी चल पड़ा। रास्ते में रुकते हुए और जगह- जगह थोड़ा विश्राम करते हुए मैं एक घंटे बाद मन्दिर पहुंचा। वहाँ का दृश्य अत्यंत सुन्दर और सुखमय था। मैंने प्रार्थना की और थोड़ा मस्ती भी, क्योंकि वहाँ से इतने आकर्षक पहाड़, नदी और झरना दिखाई दे रहे थे कि कोई भी मस्ती में घूमना ही चाहेगा। यात्रा करना मानव की मूल प्रवृति है। हम अगर मानव इतिहास पर नजर डालें तो पाएंगे की मनुष्य के विकास की यात्रा में यात्रा का महत्वपूर्ण योगदान है। यात्रा करने से हमें वहाँ की संस्कृति, रहन-सहन और खान-पान के बारे में पता चलता है। मुझे ऐसा आभास हुआ कि यहाँ के लोग थोड़ा कठिन जीवन-यापन कर रहे हैं क्योंकि पहाड़ों की ऊँचाई और हर वक्त वर्षा होते रहना यहाँ के लोगों की जीवन-चर्या को कठिन बनाता है। अधिक वर्षा और पहाड़ों के कारण यहाँ भूस्खलन

होते रहता है जिसके कारण रास्ते में रुकावट तथा कभी-कभी लोगों की जान भी चली जाती है। इसलिए यात्री मी कभी-कभी फंस जाते हैं और उनको काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ जाता है।

अब मैं वहाँ से हरिद्वार के लिए निकला क्योंकि शाम को 8:00 बजे मेरी गाड़ी थी। हरिद्वार पहुँचकर मैंने वहाँ की शाम की गंगा आरती देखी और कुछ प्रसाद ग्रहण किया क्योंकि मुझे आज ही लौटना था।

मैं ट्रेन में आकर बैठ गया और अन्दर से बहुत खुश था क्योंकि मैंने जो सोचा था सबकुछ देखा और एन्जॉय किया। ट्रेन खुल गई और मैं भोजन करके सो गया। अगले दिन शाम 3:00 बजे मैं अपने स्टेशन पहुंचा और घर आ गया।

मंतोष यादव

एम.टी.एस.

नारी

मैं जननी हूँ, जगतारिणी हूँ,
मैं नारी हूँ नारायणी हूँ,
मुझ से उत्पन्न सारी सृष्टि
मुझ में विलीन सारा ब्रह्मांड,

मैं कल-कल बहती धार हूँ,
मैं दया, करुणा, ममता की अवतार हूँ,
जब हसूँ तो खुश हो सारा जग,
जो गिरे आँसू तो नदी बनूँ।
जो काल संहार करूँ॥

मैं ही दुर्गा, मैं ही चंडी,
मैं अहिल्या, लक्ष्मीबाई की अवतार हूँ।
मैं शिव की पार्वती,
पांडवों की द्रौपदी रूपी संसार हूँ।

मैं रमणी ना दुर्बल हूँ,
मैं मृदुल, मैं ही शक्ति, मैं ओज, मैं भक्ति हूँ।
मैं जननी हूँ, जगतारिणी हूँ।
मैं नारी हूँ नारायणी हूँ॥

संजय कुमार
डी.ई.ओ.

निर्णय – भाग 1

आज आप जो भी हैं, जहां भी हैं, आप जैसा भी जीवन जी रहें हैं, सब कुछ आपके निर्णय का परिणाम है। आप सुबह से शाम तक क्या करते हैं, कैसा व्यवहार करते हैं, यहाँ तक कि आप ईमानदारी या बेईमानी के साथ किसी के साथ व्यवहार कर रहे हैं। यह सब आपके निर्णय का कमाल है।

आपका आचरण, व्यवहार, चरित्र, दिनचर्या, आपके मित्र, सगे-संबंधी, परिवार आदि रिश्तों का नियंत्रण आपके अंदर है। आज आप कितने भी सुखी सम्पन्न हों, बहुत अच्छे दफ्तर में बैठकर काम कर रहें हों या आप अगर आज दुखभरी जिंदगी जी रहें हों तो मैं यही कहूँगा कि सबकुछ आपके द्वारा भूत-काल में लिए आगे 'निर्णय' के कारण है।

आपका नाम, प्रसिद्धि, धन-संपत्ति, अच्छा स्वास्थ, अच्छे रिश्ते, आरामदायक ज़िंदगी, गाँव समाज में इज्जत, लोगों की नजर में आपकी अहमियत आदि सब कुछ आपने खुद बनाया है। उचित वक़्त पर सटीक निर्णय लेकर ही आपने सब कुछ हासिल किया है।

अगर आपकी इच्छाशक्ति आपको सटीक निर्णय नहीं लेने देती तो शायद कुछ अलग ही होता। आज आपने जो कुछ भी हासिल किया वह सब शायद वैसा नहीं होता जैसा आपके उचित निर्णय के कारण हुआ है।

अकसर कहा जाता है कि उसके साथ वही हुआ जो उसके नसीब में था, उसकी किस्मत अच्छी थी जो आज उसे सब कुछ हासिल हुआ या उसकी किस्मत खराब थी जिसके कारण उसके जीवन में दुख है। वास्तव में ऐसा कुछ

नहीं है। किस्मत नाम की चीज नहीं होती। आपके द्वारा किसी भी क्षेत्र में लिया गया निर्णय जैसे कर्म, मेहनत आदि आपकी आगे की ज़िंदगी तय करती है। आपके और हमारे निर्णय का प्रतिफल ही भाग्य है। सही वक़्त पर सही निर्णय का परिणाम अच्छा हुआ तो 'गुडलक' और लिए गए निर्णय से परिमाण बुरा हुआ तो 'बैडलक'। भाग्य या दुर्भाग्य का आधार निर्णय ही है।

मान लीजिए कि आप एक ऐसी जगह पर हैं जहां से बहुत सारे रास्ते नजर आ रहे हैं और आप किसी एक रास्ते का चयन करने का निर्णय लेते हैं। आप उस रास्ते पर निरंतर बढ़ते गए। अंततः आपको ज्ञात होता है कि उस रास्ते पर चलना अच्छा नहीं रहा अर्थात आप विफल रहे। इस परिणाम के लिए कौन ज़िम्मेवार है। इस परिणाम के लिए आपका उस रास्ते पर चलने का निर्णय कारण है। दूसरे शब्दों में कहे तो यहाँ पर गुडलक या बैडलक का ज़िम्मेवार वह स्वंय है जो जीवन के किसी भी क्षेत्र में कोई भी निर्णय लेता है।

मेरा यह मानना है कि जीवन के पथ पर चलने के क्रम में निर्णय हमेशा आपके पक्ष में नहीं होता। लेकिन निर्णय तो लेना ही पड़ता है चाहे वह सार्थक हो या न हो। सटीक निर्णय ही हमें अपनी मंजिल हासिल करने में मदद करता है। इसलिए असफल होने पर दूसरों की बातों पर ध्यान न देकर अपने निर्णय पर विचार करें। उसमें सुधार लाकर, उस पर मंथन करकर, अपनों से विमर्श करकर फिर से उठकर अपनी मंजिल की तरफ बढ़ जाना चाहिए। क्योंकि

"यह जिंदगी एक कश्ती है
सोच-समझकर चलिए
जब यह चलती है तो किनारा नहीं मिलता,
और जब डूबती है तो सहारा नहीं मिलता।"

अंहकार, घृणा, लालच अथवा लोगों की मानसिकता को किनारे रखकर निर्णय लें और अपने कल को बेहतर बनाएँ।

अनिल कुमार
एम.टी.एस.

माँ की याद और अकेलापन

उल्लास को उठने में आज देरी हो गई। बड़ी हड़बड़ाहट में वह नित्य कर्म कर अवसर के यहाँ ट्यूशन पढ़ाने पहुंचा। वह रास्ते में सोचता आ रहा है कि कहीं आज अवसर ट्यूशन में छुट्टी न मांग ले। हुआ भी यही अवसर ने कहा, "सर आप कल छुट्टी दे दीजिये न,प्लीज। कल होलिका दहन है और परसो होली। घर में मेहमान भी आ रहे हैं। बगल में गुलशन के सर ने भी छुट्टी दे दिया है।" उल्लास ने उसे किसी तरह समझा दिया कि वह कल तक पढ़ ले, फिर चाहे तो 2 दिन और अधिक छुट्टी ले ले। अवसर इस बात को मानने वाला ही था कि भाभी आ गई और अंततः उसे कल ही छुट्टी मिल ही गई। भला उल्लास अभिभावक को क्या बोलकर समझाता कि त्योहार के दिन बहुत ज्यादा अकेला महसूस करता है, इसलिए पढ़ाने आ जाता है। छुट्टी पाकर अवसर के चेहरे पर खुशी दिखी और उल्लास के चेहरे पर थोड़ी उदासी।

वह ट्यूशन पढ़ाकर फिर अपनी पढ़ाई के लिए ग्रुप में जाता है। सभी सोच रहे थे कि आज ग्रुप का लास्ट दिन है। फिर छुट्टियों के बाद ही पढ़ाई होगी। यहाँ भी उल्लास सोच रहा है कि ग्रुप की छुट्टी केवल होली के दिन ही हो। ग्रुप में पढ़ाई आरंभ हुई। पढ़ाई के दौरान किसी खास टॉपिक पर चर्चा हुई। उल्लास ने सभी को बाल-विकास एवं बच्चों से संबन्धित मनोवैज्ञानिक तथ्य बताया। साथ ही साथ उसके मन में यह चल रहा है कि कैसे ग्रुप क्लास की छुट्टी केवल होली के दिन ही हो। अचानक प्रयास के मोबाइल में एक मैसेज प्राप्त होने की आवाज आती है। सभी से नजरें बचाकर वह मोबाइल देखता है और खुशी से उछल पड़ता है कि जल्द ही केंद्रीय विद्यालय में शिक्षकों की भर्ती आ रही है। ये बात वह सभी को बताता है। सभी खुश हो जाते हैं। उल्लास को एक मौका मिल जाता है। वह सभी सदस्यों से कहता है कि हमारे लिए असली त्योहार तब होता है जब रिक्तियाँ आती हैं, हम सभी परीक्षाओं में बैठते हैं और सफल होकर माता-पिता का नाम रौशन करते हैं। होली तो त्योहार ही है पर जिस दिन हम सभी का नाम मेधा सूची में आएगा तब उसी दिन हमारी होली और दिवाली दोनों होगी। उस दिन हम सभी पटाखे भी फोड़ेंगे और रंग-गुलाल भी लगाएंगे। तभी

बीच में पल्लवी बोल पड़ी, "हाँ पर पटाखों से प्रदूषण होता है न।" यह सुनकर सभी हंस पड़ें। मुस्कान तो उल्लास के चेहरे पर भी आ गई थी परंतु इस बात पर कि कल ग्रुप क्लास बंद नहीं रहेगा। तब वह बोलता है कि हमलोग कल भी पढ़ाई करेंगे। भर्तियों की अधिसूचना जारी कर दी गई है। हर समय का उपयोग करना चाहिय। इसलिए होलिका दहन के दिन अर्थात कल छुट्टी नहीं करनी चाहिए। सभी ने जोश में हामी भर दी। उल्लास का दोस्त 'सभ्य' होली की छुट्टी में गाँव आ रहा है। उल्लास क्लास से खुशी-खुशी लौटा और अपनी स्कूल जाने की तैयारी करने लगा। उल्लास अपने स्कूल का प्रिय शिक्षक है। स्कूल में भी होली की छुट्टी हुई। स्कूल से लौटते वक़्त आज उसे अपने माता-पिता की याद आने लगी। कैसे वह अपने परिवार के साथ होली मनाता था। आज साथ में न माँ हैं ओर न ही पापा। उसके पिताजी का वर्ष 2017 में देहांत हो गया था और माँ का देहांत वर्ष 2019 में हो गया था। वह अपने पापा से ज्यादा माँ के करीब था। माँ उसके हर फैसले में साथ दिया करती थी। पिताजी के जाने के बाद उसे अपनी कैरियर की चिंता सताने लगी थी। वह जीवन में 2 वक़्त की रोटी का भी जुगाड़ कर पाएगा या नहीं, यह डर उसे सताते रहता था। वह अपनी माँ के साथ किराए के मकान में रहता था। उसकी माँ की तबियत खराब रहती थी ऊपर से बेटे की कैरियर की चिंता उन्हें खाए जा रही थी। माँ को भी ज्ञात था कि उल्लास भी अपने भविष्य को लेकर परेशान है। माँ को पता था कि उल्लास अभी थोड़े ही पैसे कमा पाता है जिससे घर मुश्किल से चल पाता है।

उल्लास के दो मित्र सभ्य और साक्ष्य पटना में रहते हैं। साक्ष्य किसी निजी कंपनी में काम करता है एवं सभ्य वहाँ पढ़ाई करता है। उल्लास को लगा था कि वह भी पटना में दोनों दोस्तों के साथ रहकर काम करता लेकिन फिर उसकी बीमार माँ की देखभाल कौन करता। जब उसकी माँ को मालूम पड़ा कि वह पटना जाना चाहता है तब उसने उसे जाने के लिए विवश कर दिया। उल्लास को पटना में एक कंपनी में काम भी मिल गया। पटना में कुछ ही दिन हुए थे कि उल्लास की माँ की तबियत और ज्यादा खराब हो गई। उसने माँ का इलाज पटना में करवाया। कनिष्ठ चिकित्सकों की हड़ताल के कारण माँ का इलाज अच्छे से नहीं हो सका। फिर वह अपनी माँ को गाँव ले आया। तब से उल्लास अपनी माँ के साथ गाँव में ही रहने लगा। माँ की तबियत में कुछ सुधार होने पर वह अपनी माँ को दीदी के पास पहुंचा देता है और वह पुनः पटना चला जाता है। अचानक माँ की तबीयत बिगड़ जाती है और उनका देहांत दीदी के घर ही हो जाता है। यह सब सोचकर उल्लास के आँखों में आँसू आ जाते हैं। वह अपने किराए के कमरे में पहुँच गया। शाम में नाश्ता करने के बाद वह ट्यूशन पढ़ाने के लिए जाता है। वहाँ भी उसे बड़े बे मन से होलिका दहन की छुट्टी देनी पड़ती है।

ग्रुप के सहपाठियों ने बताया कि वे लोग कल यानि होलिका दहन के दिन नहीं आ रहे हैं क्योंकि उनलोगों के घरों में होली के कारण अत्यधिक कार्य पसरा है। उल्लास ने मन ही मन सोचा कि कल वह पूरा दिन पढ़ाई करने में

लगाएगा। रात होती है वह सोने चला जाता है। मध्य रात्रि में उसकी नींद टूट जाती है। उसके माता-पिता उसके सपने में आते हैं। वह अपने कुल देवता को याद करके सोने की कोशिश करता है। लेकिन जब सपने में माता-पिता दिखते हैं तो और भी पुरानी, प्यारी और खुशी के पल मन में चलचित्र की भांति एक सुखद सैर पड़ ले जाती है। अब उल्लास को नींद आने से रही। इन्हीं पल के उधेड़बुन के बीच सुबह हो जाती है। होलिका दहन के दिन एक अजब से अकेलापन उसे खाए जा रहा था। वह आज प्रातः काल में ही सैर पड़ निकल जाता है। हर तरफ फगुआहट का गीत बज रहा था परंतु उसके मन में एक अलग कौतूहल थी जो इस गीत से ज्यादा शोर मचा रही थी। उसने देखा कि एक बालक अपनी माँ से पैसे मांगने की जिद कर रहा था। यह दृश्य देखकर उसका मन और कुंठित हो उठा। फिर उसे लगा कि इस अकेलेपन से बचने के लिए कुछ और उपाय करना होगा। तभी उसने फिल्म देखने का मन बनाया। वह घर जाता है। वह कमरे की सफाई करता है। कमरा बहुत ही गंदा था। उसे सफाई में कई घंटे लग जाते हैं। सफाई करने के बाद उसे अपने माता-पिता की याद आती है। अब तो उसे न खाने का मन कर रहा था ओर न ही फिल्म देखने का। वह काफी उदास था।

अचानक उसे याद आया कि उसने खाना बनाया ही नहीं है। जैसे ही वह कुछ बनाने जाता है तभी सभ्य का फोन आता है। सभ्य ने उल्लास को रात्रि का खाना अपने घर खाने का निमंत्रण देता है। बात करने पर सभ्य को प्रतीत हुआ कि वह उदास है। वह कहता है कि वह उससे मिलने आ रहा है। ऐसा सुनकर उल्लास थोड़ा अच्छा महसूस करता है। अचानक उल्लास को याद आता है कि आज उसके रिश्तेदारों का फोन नहीं आया। फिर उसे ज्ञात होता है कि शायद उनलोगों को आज उससे काम नहीं होगा। उल्लास के रिश्तेदार अपनी जरूरत पड़ने पर ही उसे फोन करके मदद मांगते थे। शाम में सभ्य आता है। फिर वे दोनों अपने कुछ मित्रों के साथ घूमने के लिए निकल जाते हैं। उसके बाद सभी अपने-अपने घर चले जाते हैं। उसके बाद सभी होलिका दहन की तैयारी में लग जाते हैं। उल्लास अपने कमरे में आकार पढ़ाई करने लगता है। रात के करीब 10 बजे सभ्य का फोन आता है। सभ्य उल्लास को खाने के लिए बुलाता है। परंतु वह कुछ बहाना बनाता है कि वह नहीं आ सकेगा। सभ्य ने दोस्ती का वास्ता दिया। फिर उल्लास मना नहीं कर सका। वह सभ्य के घर जाता है एवं अपनी मन की व्यथा उसको बताता है और रोने लगता है। सभ्य उसको संभालता है और कहता है रो लो दोस्त मन हल्का हो जाएगा, दुख बांटने से कम होता है।

सुमित कुमार वर्णवाल

एम.टी.एस.

तलाश–ए- मंजिल

एक समय की बात है। कृष्णा बहुत शरारती बच्चा था, वह अपनी माता-पिता को भी बहुत परेशान करके रखता था। माँ–पापा उसकी शरारतों में अपने बचपन को देखा करते थे, उन्हें ऐसा महसूस होता कि ये तो हमारी ही परछायी है। यह सोचकर वे हमेशा कृष्णा की हर शरारत को नजरअंदाज किया करते थे। कृष्णा को कुछ भी पता नहीं होता कि वह क्या कर रहा है। वह यह भी नहीं समझ पाता कि वह जो करता है, वो सही है या गलत। उसे जो अच्छा लगता, वह करता जाता और उसके माता-पिता को भी उसकी हर शरारत पसंद आती। इसी तरह धीरे-धीरे उसका बचपन बीतता जा रहा था और वह बड़ा होता जा रहा था, लेकिन उसकी शरारत कम होने की जगह बढ़ती ही जा रही थी। मानों माता-पिता का प्यार और दुलार उसे और शरारत करने के लिए बल दे रहा हो। शरारत करते-करते समय बीतता गया और उस बच्चे को स्कूल में नामांकन करने के लिए उसके माता–पिता ने सोचना शुरू कर दिया।

कुछ दिनों बाद उन्होनें अपने बच्चे का दाखिला एक अच्छे स्कूल में करवा दिया और अब उसके माता-पिता सोचने लगें कि उसकी शरारत कम हो जाएगी। इसी तरह से वे अपने बच्चे को स्कूल में भेजकर बहुत खुश हो रहे थे। इधर कृष्णा भी स्कूल जाने के नाम से बहुत एक्साइटेड हो रहा था। उसने सोचा कि मैं तो अब स्कूल जाऊँगा, वहाँ खूब मौज–मस्ती करूँगा। यह सब सोचकर वह खुशी-खुशी स्कूल जाना शुरू कर दिया। कुछ दिनों के बाद उसके स्कूल से भी बड़ी-बड़ी शरारतों की लिस्ट आनी शुरू हो गई। उसके माता–पिता सोच रहे थे कि वह जब जाएगा तो उसकी शरारत थोड़ी कम हो जाएगी, परंतु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। यह सब सोच वे थोड़ा चिंतित रहने लगे। वे अपने बच्चे कृष्णा को समझाया करते, लेकिन उसे कुछ भी समझ नहीं आता। वह बस वही करता जो उसे पसंद होता, फिर चाहे वह सही हो या गलत। इन सब बातों के बावजूद वह अपने माता-पिता से बेहद प्यार भी करता। माता-पिता की बातों को वह बड़े गौर से सुनता और कुछ समय तक वह वही करता जो उसके माता-पिता कहते, लेकिन कुछ ही देर में खेल-खेल में वह सबकुछ

भूलकर वापस इसी तरह से अपनी शरारत को अंजाम देने लगता। कृष्णा अपनी माँ से बहुत प्यार करता था और अपने पिता से थोड़ा डरता भी था, परंतु उसकी माँ का प्यार उसके लिए अमृत के समान था। वह अपनी माँ के लिए कुछ भी कर गुजरना चाहता परंतु इसे वक़्त का तक़ाज़ा कहा जाए अथवा नासमझी, वह थोड़ी देर में ही सबकुछ भूलकर मस्ती के मूड में आ जाता। उसकी माँ को भी उसकी मस्ती बहुत पसंद थी, लेकिन करे भी तो क्या करे। वह शरारत ही तो बहुत ज्यादा किया करता, जिससे सबको बहुत अटपटा सा महसूस होता था।

अब वह धीरे-धीरे बड़ा होने लगा था, वह जैसे–जैसे बड़ा होता जा रहा था उसकी शरारत थोड़ी कम होती जा रही थी। इससे माँ- पिता को बहुत अच्छा महसूस होने लगा था, परन्तु कही न कही माँ–पिता सोचते कि अचानक ऐसा क्या हो गया कि वह शरारतें कम करने लगा। एकदिन उन्होने अपने बच्चे कृष्णा से पूछा- "बेटा सब ठीक तो है न? आजकल तुम हमेशा गुमशुम क्यों रह रहे हो?" तब कृष्णा ने बताया कि ऐसा कुछ भी नहीं है परंतु पढ़ाई का इतना प्रेशर और टेंशन है कि मैं कुछ और सोच ही नहीं पा रहा हूँ। तब माता-पिता को महसूस हुआ कि अब हमारा बच्चा आगे के बारे में सोचने लगा है और अपने भविष्य को ध्यान में रखकर वह अपने आप को बदलने की कोशिश कर रहा है। इसी बात को लेकर कृष्णा के माता– पिता बहुत खुश रहने लगे। मानों माता– पिता की सारी चिंताएँ अब दूर हो गई हो। कृष्णा धीरे-धीरे बड़ा हो गया और उसकी बोर्ड की परीक्षा शुरू होने वाली थी। वह अपनी पढ़ाई–लिखाई में बहुत लीन रहने लगा। उसने अपनी किताबों को ही अपना मित्र बना लिया था। वह शिपयार्ड की परीक्षा की तैयारी में लगा हुआ रहता, मानों उसे किसी ने कुछ समझा-बुझा दिया हो। जैसे– जैसे परीक्षा नजदीक आता गया, माता-पिता के साथ उसकी दूरियाँ बढ़ती जाने लगी, मानों उसे किसी मंजिल पर पहुँचने की तलाश हो। यह सोच माता-पिता चिंता करने लगे कि पहले तो वे शरारत करता था तो वह हमलोंगों को अच्छा नहीं लगता था, लेकिन अब जब वह शरारत करना बंद कर किताबों की दुनिया में खो गया है तो अब फिर से मन नहीं लगता। इसी बात को सोच माता-पिता को महसूस होने लगा कि जब समय आता है तो बच्चों में स्वयं ही बदलाव आना शुरू हो जाता है जैसा कि कृष्णा में बदलाव आया था। एक दिन माता-पिता को रहा नहीं गया तो उन्होने कृष्णा से जाकर पूछा बेटा आखिरकार ऐसी क्या बात हो गयी कि तुम दिन रात सिर्फ- और सिर्फ किताबों की दुनिया में लगे रहते हो मानों अब जो कुछ भी है तुम्हारी पुस्तकें ही हैं। ऐसा लगता है कि हमलोग तो कुछ है ही नहीं तुम्हारे लिए कृष्णा ने कहा- "माँ–पिता जी ऐसा कुछ भी नहीं है। मैं कब और कैसे बदल गया मुझे पता नहीं चल पाया। मैं क्या करूँ, जब से मैंने स्कूल जाना शुरू किया, कुछ वक़्त तक तो मैं बिल्कुल ही शरारती था परंतु कुछ समय बाद मैं औरों को पढ़ते देखा, जो पढ़ने में अच्छे थे उसे क्लास की मैडम/सर का स्नेह मिलता था। मुझे भी कुछ अलग सा महसूस होने लगा। मैं भी सोचने लगा कि काश मुझे भी मैडम/सर का स्नेह मिलता और यही सब सोच मैं क्लास में एकदम गुमशुम सा रहने

लगा। तभी मेरी मुलाकात क्लास में एक नई-नई आयी मैडम से हुई। कक्षाएँ लेने के दौरान ही वे सभी विद्यार्थियों के बारे मे जानने की कोशिश करती थी कि कौन – किस तरह का है, कौन पढ़ने वाला है और कौन शरारती है। मैडम क्लास में मुझसे कुछ भी पूछती तो मै ठीक से जवाब नहीं दे पाता। मैडम को कुछ महसूस होने लगा और एक दिन क्लास में उन्होनें मुझसे पूछा "तुम ऐसे क्यों हो। माता -पिता कुछ नहीं बोलते हैं तुमको, जो तुम इतने शरारती हो। तुम्हारा पढ़ने में ध्यान क्यों नहीं लगता। तुम आगे जाकर क्या करोगे कभी कुछ सोचा है। तुम्हारी इस तरह के व्यवहार से तुम्हारे माता-पिताजी पर क्या बीतती होगी।" एक साथ इतने सारे प्रश्न सुनकर मैं हतप्रभ हो गया और उनके किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे पाया। तभी मैडम ने मुझे प्यार से समझाते हुए कहा- "बेटा मैं तो क्लास टीचर हूँ। मै तो तुम्हारे भले के लिए ही सोचूँगी ठीक उसी तरह जैसे तुम्हारे माता-पिताजी सोचते होंगे। तुम आगे जाकर क्या करोगे। अपने माता-पिताजी का नाम खराब करोगे या उनका नाम रौशन करोगे।" तभी से मैं मैडम की हर बातों को ध्यान में रखकर आगे के बारे में सोचने लगा। मैडम का दिया ज्ञान मेरे मन-मंदिर मे बस गया है। मैंने मैडम से वादा किया है कि उनके हर सवालों के जवाब को देकर मैं अपना, अपने स्कूल का और अपने माता-पिताजी का नाम रौशन करूंगा। तभी से मैने अपने आप को बदलने के लिए कसम खा ली और दृढ़ संकल्प कर लिया कि मैं अपनी मंजिल की तलाश खुद ही करूंगा। इसी तरह कृष्णा ने अपने जीवन में संघर्ष के साथ लड़ते और किताबों को अपना साथी बनाते हुए अपने जीवन का नया अध्याय लिखा। आज वह अपने मंज़िल को पाकर बहुत खुश है एवं आज वह माता-पिताजी की बातों और मैडम के दिए गए प्रेरणाओं को अपने मन-मस्तिष्क में बसाए रखा है।

अमित कुमार

वरिष्ठ लेखाकार

हमारे कार्यालय में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चन्द्र मुर्मु के आगमन पर स्वागत समारोह की झलकियाँ।

कार्यालयी हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 24वें अंक के विमोचन समारोह की झलकियाँ।